युगाब्द ५११३
आषाढ़ (कृ.) ३०, २०६८
१ जुलाई, २०११
मूल्य ₹१५/-
जयपुर

www.patheykan.in

पाथेय कण

(पाक्षिक)

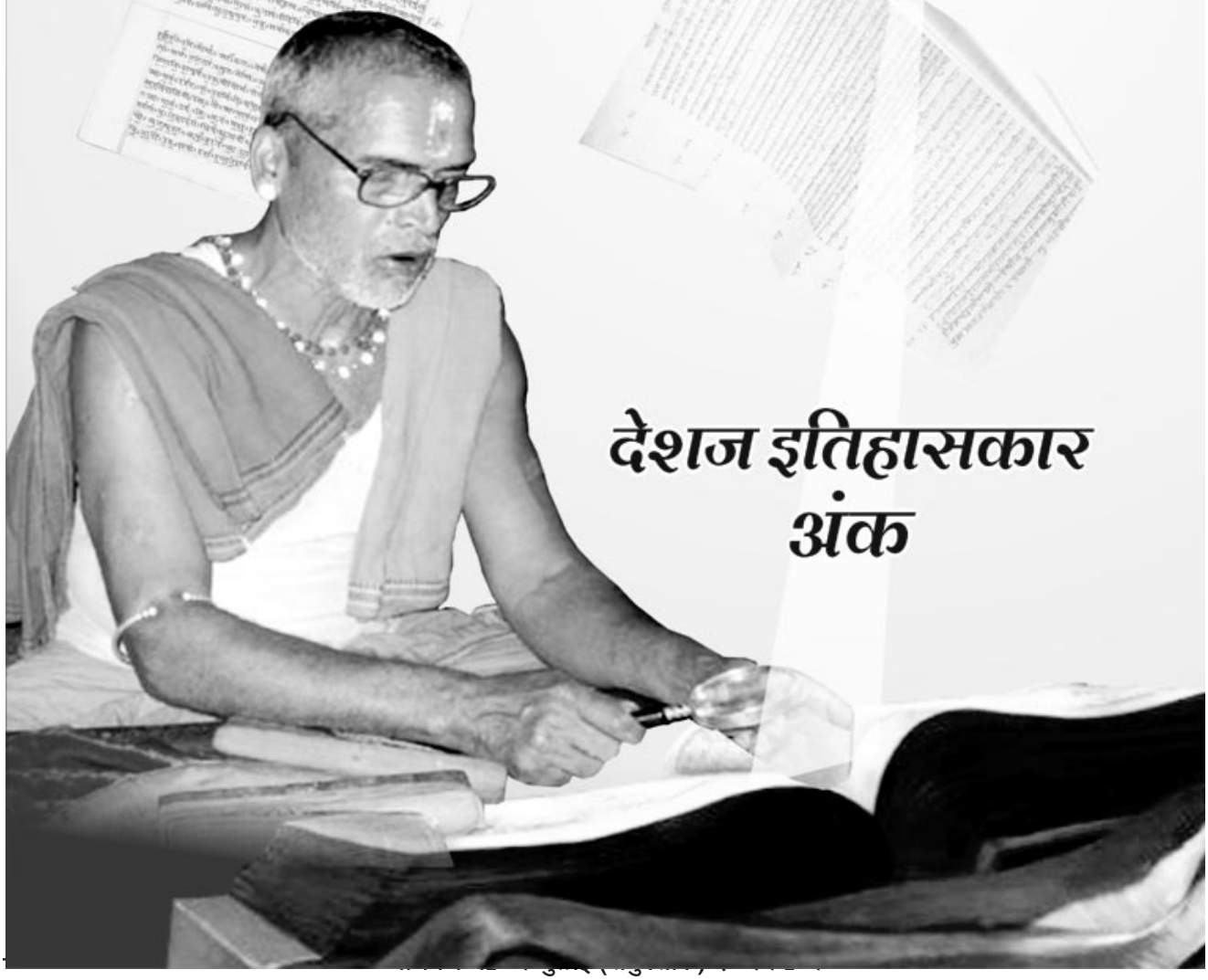

देशज इतिहासकार अंक

Make a statement about yourself without even saying a word

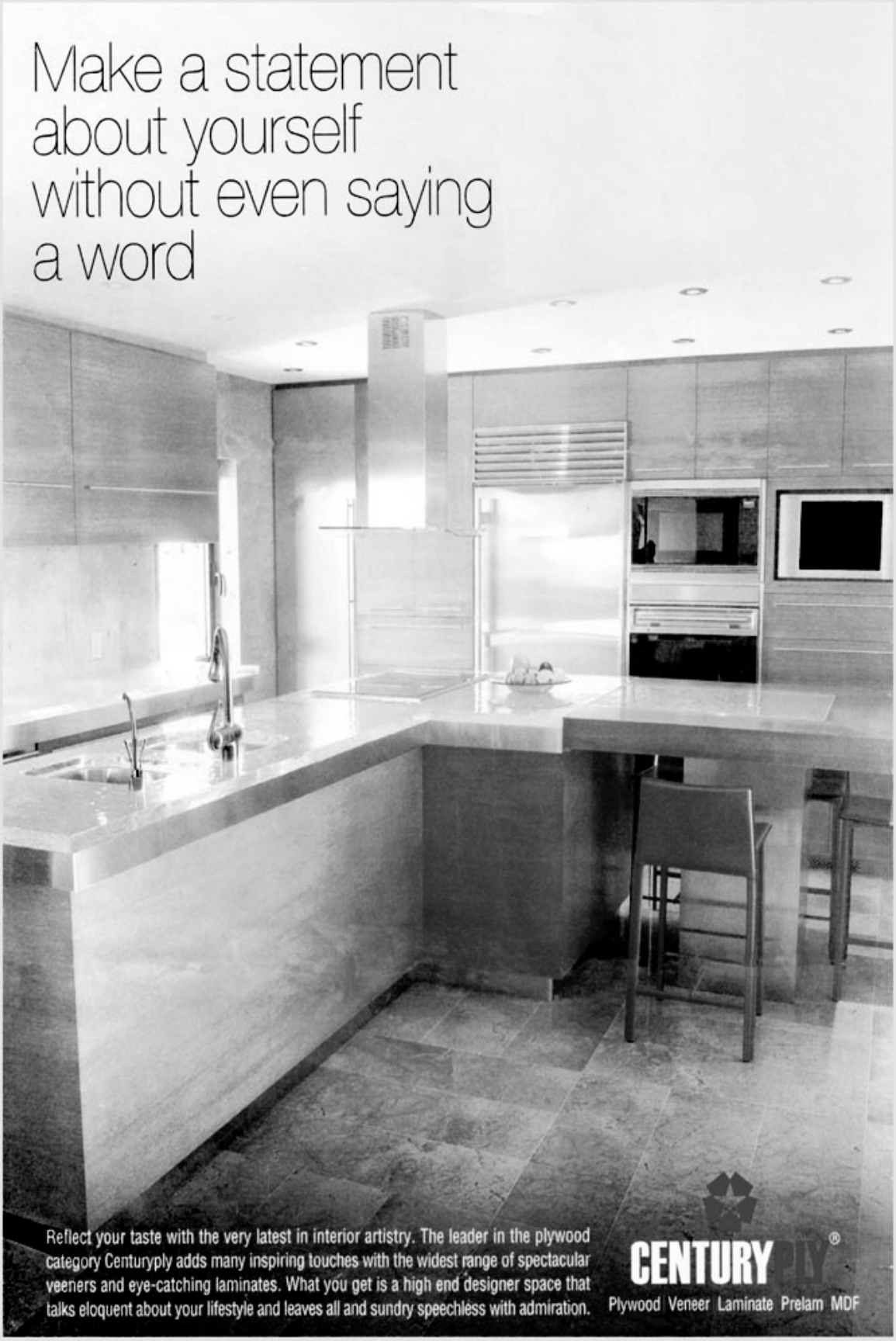

Reflect your taste with the very latest in interior artistry. The leader in the plywood category Centuryply adds many inspiring touches with the widest range of spectacular veeners and eye-catching laminates. What you get is a high end designer space that talks eloquent about your lifestyle and leaves all and sundry speechless with admiration.

CENTURY PLY®

Plywood Veneer Laminate Prelam MDF

अगर सीमेंट जंग रोधक न हो तो
जान लेवा हो सकता है ।

SHREE
ULTRA
RED-OXIDE

जंग रोधक सीमेंट

SHREE CEMENT LIMITED

Registered Office :
Bangur Nagar, Beawar, Dist. Ajmer
(Rajasthan) 305 901
Phs. : +91 01462 228101-106
Fax : 01462 228117/119
e-mail : sclbwr@shreecementltd.com

Corporate Office :
21 Strand Road, Kolkata 700 001
Phs. : +91 33 2230 9601-04
Fax : +91 33 2243 4226
e-mail : sclcal@shreecementltd.com

Marketing Office :
1 Bahadur Shah Zafar Marg
122/123, Hans Bhawan, New Delhi 110 002
Ph. : 09313565826
Fax : +91 11 22370499
e-mail : scldel@shreecementltd.com

website: www.shreecementltd.com

Excellent Vision
Excellent Inspiration

Excellent Education
Excellent Result

ADARSH VIDYAMANDIR SHANKAR VIDYA PEETH

Mount Abu

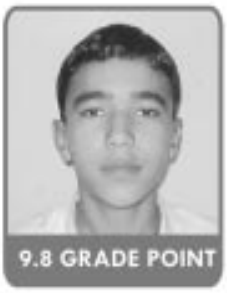

9.8 GRADE POINT

SHINES ONCE AGAIN &
THIS TIME **ARVIND BISHNOI**
HOLDS THE FLAG.

Congratulations

For Excellent CBSE Board Result
Class X (CBSE Conducted Exam)

Total Students 75

9+	8+	7+	6+	5+
11	32	21	11	1

We are proud of you

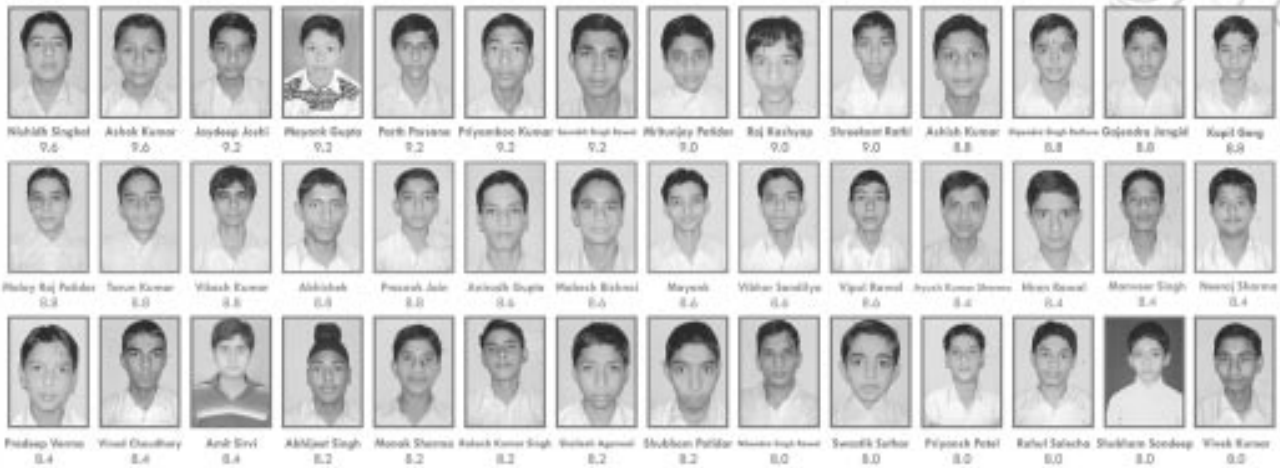

Thanks to Almighty for giving us Reward of our 'Consistently' 'Sincere' hard work.
We are committed to continue it

Prof. J.L. Mathur
Chairman

Gopal Singh Jain
Treasurer

Suresh Kothari
Hon'ry Secretary

E-mail : avmsvp@yahoo.com visit us at : www.adarshvidyamandir.com

पाथेय
कण (पाक्षिक)
आषाढ़ (कृ.) ३० , २०६८
युगाब्द ५११३
१ जुलाई, २०११ (संयुक्तांक)
वर्ष २७ अंक ६

सम्पादक
क ला चतुर्वेदी
❖
सहयोगी
मातादीन सिंह
मनोज गर्ग
❖
प्रबन्ध सम्पादक
माणकचन्द
❖
सह प्रबन्ध सम्पादक
ओम प्रकाश
❖
व्यवस्थापक
रमाकान्त शर्मा
❖
आवरण
राज ब्लॉक
❖
पृष्ठ संयोजन
कौशल रावत
❖
प्रकाशक
पाथेय कण संस्थान
पाथेय भवन, बी-१९, न्यू कॉलोनी,
जयपुर-१, दूरभाष : २३७४५६०

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	₹ १००/-
१५ वर्षीय	₹ १०००/-

प्रबन्धकीय कार्यालय
'पाथेय भवन', बी-१९, न्यू कॉलोनी,
जयपुर- ३०२००१ दूरभाष : २३७४५९०
फैक्स: ०१४१-२३६८५९०
Website : www.patheykan.in
E-mail:- patheykan@gmail.com
pathay_kan@yahoo.com

॥ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते॥ संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है॥

इस अंक में

९. वंशावली लेखन परम्परा: महत्व एवं प्रभाव -देवकर्ण सिंह
११. सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता और ... -जानकी नारायण श्रीमाली
१४. भारत के वंशावली लेखक -डॉ. देव कोठारी
१७. वैदिक कालीन याज्ञिक ही हैं जागे -श्याम आचार्य
२०. लोक इतिहास की सशक्त कड़ियाँ -भंवर सिंह सामौर
२३. राष्ट्र निर्माण में देशज इतिहासकारों का... -जग जितेन्द्र सिंह 'विक्रम'
२७. वंशावली साहित्य की विधायें -डॉ. देव कोठारी
३१. त्र्यम्बकेश्वर के तीर्थ पुरोहित -राजेश सुरेश दीक्षित
४०. बदरी-केदार के अनोखे इतिहासकार - मनोज रावत
४३. चारण साहित्य में वंशावली संरक्षण -ओंकार सिंह लखावत
४६. भट्ट एवं पण्डों का सिख इतिहास में ... -सरदार चिरंजीव सिंह
४९. मुस्लिम समाज के गोत्र-पाले और ... -मिर्जा हबीब बेग 'पारस'
५२. हाँ हिन्दू ही हैं सारे मुसलमान -सुहेल वहीद
५५. इतिहास के संरक्षक-वंशावली लेखक -रघुवीर सिंह
५८. वंशावली लेखन तथा वर्तमान चुनौतियाँ -डॉ. सुखदेव राव
६१. वंशवाचकों की उपलब्धियाँ और समस्याएँ -नवरतन सिंगलिया
६४. वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान -राम प्रसाद

साथ में

देश के हर हिस्से में हैं वंशावली लेखक

मीणा जाति की ही एक शाखा हैं मेव

पुनर्स्थापित हो वंश परम्परा

OM

With Best Compliments from

CALCUTTA OVERSEAS CORPORATION
NARAYANI DETERGENTS

16, INDIA EXCHANGE PLACE, 2ND FLOOR
ROOM NO. - 5, KOLKATA - 700 001

PHL : 91-033-2230 1952, 2231 8885, 3297 6600
TELEFAX : 033-2230 9217
E-mail : r_nagori@vsnl.net, coccal@rediffmail.com

For Use in :
Soap & Detergent, Rubber & Leather, Textile & Hosiery, Glass & Ceramic, Paper & Board, Tannery & Footwear Industries.

We Offer :
Acid Slurry, Sodium Sulphide, Enzymes, Barium Carbonate, Borax, Solvents, Titanium Di Oxide, Formic Acid, Sodium Formate, Acids Etc.

Associated Concern :
RUNGTA CHEMICALS PVT. LTD.

Distributorship / Stockistship / Enquiries Solicited

WITH BEST COMPLIMENT FROM:

LOHIA SECURITIES LIMITED
Regd.Office: 6, LYONS RANGE,1ST FLOOR, KOLKATA-700 001

MEMBER- NATIONAL STOCK EXCHANGE LIMITED,
BOMBAY STOCK EXCHANGE LTD
MCX STOCK EXCHANGE LIMITED

SEBI REGISTERATION NO.-
INB230777836/ INF230777836/ INE230777836 (NSE)
INB 010777838/ INF010777838/ INE010777838(BSE)
INE260777836 (MCX-SX)

SEGMENTS-CAPITAL MARKET, DERIVATIVE MARKET,
CURRENCY DERIVATIVE

DEPOSITORY PARTICIPANT - NSDL & CDSL
SEBI REGISTRATION NO:- IN-DP-NSDL-179-2000,
IN-DP-CDSL-133-2000
DP ID #: IN302189, 22100

PHONE NO.033 -4002 6500/ 6600/ 6700/ 2243 6961

FAX NO.: 033-4002 6800/ 2213 1710

EMAIL ID – info@lohiasecurities.com

WEB SITE-www.lohiasecurities.com

शेखावाटी-सीकर में

CBSE और RBSE

दोनों बोर्ड के अध्ययन की व्यवस्था

विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सीकर (राज.)

शेखावाटी का प्रतिष्ठित स्कूल नेटवर्क, जिसके अन्तर्गत है हर स्तर की अध्ययन व्यवस्था

XI, XII स्कूल के साथ–साथ फाउण्डेशन कोर्स
विज्ञान (PMT/IIT-JEE/AIEEE) वाणिज्य (CA-CPT/CS)

दूरभाष : 01572–274015, 274016, 270675, 255975 मो. : 9413647501, 9829342231, 9928472907

visit: www.vpsindia.com e-mail: bschirana@gmail.com

डॉ. बलवन्तसिंह चिराना
निदेशक
मो. : 94140–37875

मनोगत

अंग्रेजों के लिखे भारत के इतिहास में विसंगतियाँ ही विसंगतियाँ हैं तथा अनेक भीषण त्रुटियाँ भी हैं। सबसे बड़ी विसंगति तो 'आर्यों का भारत में आगमन' ही है। सिकन्दर के हाथों महाराज पुरु की हार दूसरा बड़ा झूठ है। 'वेद गड़रियों के गीत हैं', 'भारत कभी एक राष्ट्र नहीं था', 'रामायण तथा महाभारत महाकाव्य हैं' तथा कपोल-कल्पित घटनाओं पर आधारित हैं', 'भारत का इतिहास मात्र तीन हजार वर्ष का है ', आदि कई मनगढ़ंत तथा तथ्यहीन बातें अंग्रेजों के लिखे भारत के इतिहास में हैं। आज भी प्राचीन भारत का इतिहास कुछ पन्नों में समेट दिया जाता है जबकि मुस्लिम हमलावरों के तथाकथित 'मध्य-काल' पर कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। अंग्रेजों के काल पर तो भारी-भारी ग्रन्थ लिख डाले गये हैं।

ऐसा नहीं है कि अंग्रेज इतिहासकार सही तथ्यों से अनभिज्ञ थे। वे जानते थे कि जिनको वे आर्य कहते हैं ,उनका उद्‌गम भारत में ही हुआ तथा भारत से वे पूरी दुनिया में गये। उनको यह भी पता था कि 'आर्य' नाम की कोई जाति नहीं है, यह शब्द श्रेष्ठता का परिचायक है । ईमानदार पश्चिमी इतिहासकारों ने स्वीकार किया है कि वास्तव में पौरवराज ने सिकंदर को बुरी तरह हराया था। यह सिद्ध करने वाली एक फिल्म भी हॉलीबुड में बन चुकी है , जिसका नाम 'एलेक्जेंडर' है तथा जिसमें कॉलिन फेरल, वॉल किल्मर तथा ऐंजलीना जोली जैसे नामी अदाकारों ने काम किया है। उक्त सच्चाई को जानते और समझते हुए भी अंग्रेजों ने जान-बूझ कर गलत इतिहास लिखा। इसलिये कि उन्हें भारत पर शासन करना था और जो शासित है उसमें हीन-भावना पैदा करना आवश्यक होता है। शासित समाज में स्वाभिमान पैदा हो जाये तो वह पराये शासक को उखाड़ फैंकता है, जैसा कि सन् १९४७ में भारत में भी हुआ।

अंग्रेजों का उक्त षड़यंत्र तो समझ में आता है , लेकिन भारत के इतिहासकार भी पूरी तरह स्वाभिमान-शून्य हो गये। अंग्रेजों के इन नकलची इतिहास लेखकों ने उक्त षड़यंत्र का पर्दाफाश करने के स्थान पर इसकी पूर्ण सफलता के लिये काम किया। अंग्रेजों की झूठन का ही विश्लेषण कर उन्होंने विद्वता का लबादा ओढ़ा और इसी में धन्यता का अनुभव किया। सत्यकेतु विद्यालंकार, डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी या पी.एन.ओक जैसे कतिपय अपवादों को छोड़ दिया जाये तो भारत के सारे नये और पुराने इतिहासकार पूरी ताकत से अंग्रेजों के षड़यंत्र को ही आगे बढ़ाते दिखाई पड़ते हैं। कुछ तो ऐसे हैं, जो कुटिल अंग्रेजों से भी दस कदम आगे हैं। इन वाममार्गी इतिहास लेखकों ने तो जैसे भारतीय इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं को पूर्ण रूप से नष्ट कर देने का अभियान छेड़ा हुआ है।

इसलिये आज भी कक्षा-छह की सामाजिक ज्ञान की पुस्तकों में पहला अध्याय 'आर्यों का आगमन' ही बना हुआ है। इतिहास की पुस्तकों में आज भी सिकंदर 'महान' और महाराज पुरु को परास्त करने वाला बना हुआ है। अब भी पाठ्य-पुस्तकों में श्रीराम और श्रीकृष्ण मिथक बने हुए हैं। भारत को यदि पुनः दुनिया का सिरमौर बनना है तो इस इतिहास को ठीक करना होगा, क्योंकि गौरवशाली इतिहास ही लोगों को गौरव के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। भारत का इतिहास तो इतना गौरवशाली रहा है , कि पूरी दुनिया का इतिहास इसके सामने पासंग बराबर भी नहीं है। खुद इंग्लैण्ड पर भारतवंशियों ने राज किया है। अमरीका में तो पन्द्रहवीं शताब्दी तक भारतवंशी अयर राजाओं का शासन रहा है। दीवान चमन लाल लिखित 'हिन्दू अमरीका' में प्रमाण सहित यह सिद्ध किया गया है।

ऐसे गौरवशाली इतिहास को आपराधिक तरीके से विकृत किया गया । यह विकृति बढ़ती जा रही है और इसे ठीक करने के कोई गम्भीर एवं प्रभावी प्रयत्न हो भी नहीं रहे। जो प्रयत्न हो रहे हैं। उन पर इतिहास माफिया यह कह कर प्रश्न चिन्ह लगा देता है कि इनका कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है। जाने-माने तथाकथित इतिहासज्ञों का एक प्रभावी गुट बना हुआ है जो भारतीय इतिहास की विकृतियाँ दूर करने के प्रत्येक प्रयत्न को निष्प्रभावी बना देता है। इस गम्भीर चुनौती के बीच भारत के देशज इतिहासकारों की भूमिका एवं महत्व एकदम से बढ़ जाते हैं।

देशज इतिहासकार- कौन हैं ये भारत की मिट्‌टी से जुड़े देशज इतिहासकार? कुछ लोगों का मानना है कि भारत में इतिहास लिखने की परम्परा ही नहीं रही। आंशिक रूप से यह सत्य भी है, क्योंकि पश्चिमी देशों की तरह इतिहास लिखने के संस्थागत प्रयास भारत में नहीं हुए। हो भी नहीं सकते थे, इसलिये कि अब तक बीते छह और चल रहे सातवें मन्वन्तर में इतिहास कहां से प्रारम्भ करें और कहां समाप्त करें ? वर्तमान में वैवस्वत मन्वन्तर की २८ वीं चतुर्युगी चल रही है। एक चतुर्युगी ही ४३ लाख २० हजार वर्ष की मानी जाती है और एक मन्वन्तर में ऐसी ७१ चतुर्युगी होती हैं। इतने लम्बे काल-खण्ड की बात की जाये तो इसका इतिहास हमें रामायण, महाभारत तथा विभिन्न पुराणों में विस्तार से मिल जाता है।

उक्त ग्रन्थों में जो इतिहास मिलता है वह हमारे 'देशज इतिहासकारों' के प्रयत्नों का परिणाम है। इन महान ग्रन्थों में प्रजापिता ब्रह्मा से लेकर आधुनिक काल तक के वंशों एवं वंशावलियों का उल्लेख है। हमारे देश के मनीषियों ने इतिहास-लेखन की एक ऐसी पद्धति विकसित की, कि जिसमें प्रमुख व महत्वपूर्ण व्यक्तियों का ही नहीं, तो प्रत्येक व्यक्ति का इतिहास लिखा जा सके । ऐसी विशद कल्पना पश्चिमी इतिहासकारों तथा भारत में बैठे उनके पिछलग्गुओं के मस्तिष्क में ही कभी नहीं आई होगी। यह भी एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि ऐसे इतिहास-लेखन का दायित्व अपने देश के विचारकों ने समाज के एक पूरे वर्ग को ही दे दिया । जिस समय हमारे यहाँ यज्ञों का प्रचलन था, उस समय यज्ञ कराने वाले याज्ञिकों का एक बड़ा वर्ग प्रत्येक परिवार का इतिहास लिखता था। इसलिये यज्ञ करना प्रत्येक परिवार में आवश्यक बना दिया गया तथा पृथक-पृथक समूहों के लिये अलग-अलग याज्ञिकों की भी नियुक्ति कर दी गई।

ये याज्ञिक बाद में 'जागे' कहलाने लगे। समय में परिवर्तन के कारण जब यज्ञ परम्परा खण्डित हो गई तो ये याज्ञिक अपने समूह के लोगों के घर विशिष्ट अवसरों पर जाने लगे तथा इन परिवारों का घटनाक्रम अपनी बहियों में दर्ज करने लगे। हमारे मनीषियों की योजकता पर आश्चर्य होता है, कि उन्होंने समाज के

...शेष पृष्ठ ६७ पर

उच्च मा. आदर्श विद्या मन्दिर

आदर्श नगर, जयपुर 302004 फोन : 2615249, 2612149, 2616971

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

उ.मा.विज्ञान वर्ग परीक्षा परिणाम

	कुल संख्या	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	अनु.	उत्तीर्ण
सत्र 2010–11	85	52	33	–	–	100%
2009–10	109	80	29	–	–	100%

उ.मा.वाणिज्य वर्ग परीक्षा परिणाम

सत्र 2010–11	157	74	72	11	–	100%
2009–10	173	143	30	–	–	100%

उ.मा.कला वर्ग परीक्षा परिणाम

सत्र 2010–11	48	28	20	–	–	100%
2009–10	40	30	13	–	–	100%

सैकेण्डरी परीक्षा परिणाम

सत्र 2010–11	104	69	33	02	–	100%
2009–10	111	57	51	03	–	100%

सत्र 2011 कक्षा 10 में अधिकतम अंक एवं जिला मैरिट में स्थान प्राप्त करने वाले छात्र

सन् 2010 के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा 10 में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र

मैया गौरव जोशी
94.33 %

मैया हर्षित सिंहल
94.00 %

मैया भारत सैनी
92.33 %

हर्षित लक्ष्यकार
90.50%

मैया संजय चौधरी
93.00 %

मैया विवेक शर्मा
91.67 %

मैया शंकर लाल चौधरी
12 वां स्थान (93.83 %)

अध्यक्ष
दामोदर दास मोदी

सचिव
डॉ. जगन्नाथ भुटानी

प्रधानाचार्य
रामानन्द चौधरी

कार्यालय नगर पालिका मण्डल

कुचामन सिटी (नागौर)

नगर पालिका कुचामन सिटी द्वारा
सभी का अभिनन्दन

१. नगरपालिका क्षेत्र में कृषि भूमि पर बगैर कनवर्शन निर्माण करना अपराध है।

२. कनवर्शन की राशि जमा नहीं कराना, कुचामन के विकास को रोकना है।

३. अतिक्रमण करना तथा यातायात में बाधा उत्पन्न करना अपराध है।

४. आपसे अनुरोध है कि नगर आपका है, इसे स्वच्छ बनाये रखने तथा विकासशील रखने में पूरा-पूरा सहयोग दें।

श्रवणराम चौधरी
अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका कुचामन सिटी

यशोदा देवी
अध्यक्ष
नगर पालिका कुचामन सिटी

वंशावली लेखक विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Gopal Pareek

(M) 94140 60042
(O) 2323849

SHREE SHANTI PAPER AGENCIES

AUTHORISED DISTRIBUTOR

PITAMBAR COATED PAPER LTD

STOCKIST:
SATIA INDUSTRIES LIMITED
J.K.PAPER, ART PAPER, ART CARD.
BILT ART PAPER, CARD, CROMO

1895, Sukhlal Vyas Ki Gali, Nataniyon ka rasta, Nehru Bazar, Jaipur-302003

वंशावली लेखन परम्परा : महत्व एवं प्रभाव

❑ देवकर्ण सिंह

किसी परिवार या समाज के सनातन काल से आज तक का लिखित प्रमाण जिसमें वंश(कुल) की परम्परा एवं पीढ़ी की जानकारी रहती है उसे वंशावली कहा जाता है। वंशावली में जन्म, विवाह, मृत्यु आदि का रिकार्ड (अभिलेख) समावेशित किया जाता है।

वंशावली लिखना एवं लिखाना हिन्दू संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। यह परम्परा सतयुग, त्रेता, द्वापर से चलती हुई कलिकाल तक तथा निरन्तर चली आ रही है।

भगवान द्वारा स्थापित पवित्र बन्धन परम्पराओं की जड़ों को अमृत पिलाने के लिये वंशावली स्त्री सरिता को प्रवाहित किया गया। स्वयं भगवान राम की वंशावली लेखन का प्रमाण रामचरित मानस की निम्नलिखित चौपाई से स्पष्ट होता है।

मागध सुत बंदीगन गायक।
पावन गुन गावही रघुनायक॥ (बाल काण्ड-रामचरित मानस)

पुरातन काल से लेकर आज तक वंशावली ने हिन्दुओं के गौरव को समय समय पर बढ़ाने का कार्य किया है। हिन्दू समाज को टूटने से बचाने का भरसक प्रयास वंशावली हजारों वर्षों से करती आ रही है। समाज का उत्थान व पतन वंशावली कार्य पर निर्भर है। वंशावली सुनने एवं समझने से ही समाज का नैतिक उत्थान हुआ है। इसने समाज को मान मर्यादा,संस्कृति, संस्कार एवं सर्वधर्म की शिक्षा प्रदान की।

दुर्गुणों से बचाया

वंशावली लेखक ने समाज को सत्साहित्य की शिक्षा देकर धर्म को प्रतिपादित किया। इसने समाज को दुर्गुणों से बचाते हुए धर्म रक्षण के कार्य के लिये प्रोत्साहित किया।

प्राचीन काल में भोजपत्र, ताम्रपत्र, शिलालेख के माध्यम से वंशावली लेखकों ने इसको लिखित रूप दिया, जिसे वर्तमान काल में कागज की बहियों पर लिखा जा रहा है। इन प्राचीन अभिलेखों को समाज भूलता जा रहा है जबकि विदेशों में पुरानी लिखित सामग्री पर शोध किये जा रहे हैं। हमें ज्ञात है कि मुगल काल में विदेशी आक्रांताओं ने पुराने ग्रंथ, धार्मिक पुस्तकों और वंशावली की पोथियों को बरबाद करने में कोई कसर नहीं रखी थी। फिर भी वंशावली लेखकों (देशज इतिहासकारों) ने अपनी वंशावली को अपने प्राणों से भी अधिक मूल्यवान मानते हुए इनकी रक्षा की। बाद में अग्रेंजों ने भी इन लेखकों को प्रताड़ित किया और दबाने की कोशिश की।

वर्तमान में नये इतिहासकार अपनी छवि बनाने के लिये एवं अच्छी मोटी कमाई करने के लिये देशज वंशावली लेखकों के इतिहास को कपोल कल्पित बताकर खण्डन करने में शान मानते हैं और विदेशी इतिहासकारों को सही एवं सच्चा मानते हैं। यह गंभीर विषय है कि जो विदेश में जन्मे, विदेश में पढ़े-लिखे और चंद समय भारत में रहकर दूसरों का कहा सुना इतिहास लिख दिया वो विदेशी व्यक्ति अपने आपको बड़े महान इतिहासकार मानने लगे और देशज इतिहासकार गरीबी से जूझ रहा है। इतिहास के नये शोध-संस्थानों को १०० वर्षों से ज्यादा नहीं हुये, लेकिन देशज इतिहासकारों की लेखनी को हजारों वर्ष हो गये हैं। देशज इतिहासकारों ने बहुत कठिन आपदाओं का सामना किया । पैदल, घोड़े, ऊंटों के सहारे भयंकर जंगलों से गुजरते हुए सिर-कंधों पर बहियों(पोथियों) को ले जाकर वंशावली को सुरक्षित रखते हुये वे वंश लेखन का कार्य करते थे।

यह गंभीर विषय है कि जो विदेश में जन्मे, विदेश में पढ़े-लिखे और चंद समय भारत में रहकर दूसरों का कहा सुना इतिहास लिख दिया वो विदेशी व्यक्ति अपने आपको बड़े महान इतिहासकार मानने लगे और देशज इतिहासकार गरीबी से जूझ रहा है।

ऐतिहासिक योगदान

वर्तमान काल में समाज की पूर्ण जिम्मेदारी है कि ऐसे संस्थानों की स्थापना करे जिससे वंशावलियों का रख रखाव हो तथा वंशावली लेखकों को संरक्षण मिले । क्योंकि वंशावली लेखकों की परम्परा से कई लाभ हैं , जो निम्नानुसार हैं -

१. वंशावली का सामाजिक बंधनों की पवित्रता, रक्त की शुद्धता को बनाये रखने में बहुत बड़ा योगदान है। वंशावली के अभाव में पाश्चात्य देशों में परिवार एवं समाज के बंधन ढीले हो गये हैं तथा रिश्तों-नातों की मर्यादा भंग हो गई है।

२. जब एक जगह बैठकर पूरा परिवार वंशावली सुनता है तो वह पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास को सुनकर स्वाभिमान का अनुभव करता है तथा अपने पूर्वजों के आदर्श को जीवन में अपनाता है, जिससे उनका जीवन धन्य हो जाता है।

३. इससे समाज में संगठन की भावना बढ़ती है। उन्नत

समाज जीवन का मेरुदण्ड वंशावली ही है।

४. नयी पीढ़ी वंशावली सुनकर पूर्वजों के इतिहास में लिखित त्याग, सेवा, बलिदान, शौर्य, ओज, तेज, शक्ति एवं परमार्थ सेवा के भाव को अंगीकार करती है।

५. वंशावली समाज के धार्मिक एवं नैतिक उत्थान में सहायक है।

६. अपने देश के इतिहास की विकृतियों को ठीक कर सही व सटीक इतिहास लिखने में वंशावली लेखकों की कृतियाँ बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

देशज इतिहासकारों के गाँव

विभिन्न रियासतों के वंशावली लेखकों का निवास राजस्थान के विभिन्न गांवों में है, मुख्य गाँव इस प्रकार हैं-

१. **गाँव टोकराँ**(नीमच)-सिसोदिया वंश एवं उनके भाई परिवार (उदयपुर, प्रतापगढ़, शाहपुरा, बनेड़ा रियासत)

२. **गाँव सूरजगढ़** (चित्तौड़गढ़)-सिसोदिया (गहलोत) (डूँगरपुर, बांसवाड़ा रियासत)

३. **गाँव पृथ्वीपुरा, धोलेराव, कुचीपला,डोबरिया, लुणवा**-राठौड़ वंश (जोधपुर बीकानेर रियासत)

४. **गाँव अगरपुरा, ढेचवास, पदमपुरा, बास बडवान** (सोनड़)- कच्छावा वंश (जयपुर, अलवर रियासत)

५. **गाँव पाडलिया, जडाणा, नांदसा, मुरड़ा**-भाटीवंश (जैसलमेर रियासत)

६. **गाँव देवरी** -हाडा वंश (बून्दी, कोटा रियासत)

७. **गाँव आसलपुर,राणाखेड़ा**-चौहान वंश (सिरोही रियासत)

८. **गाँव राज्यासा**- खींची वंश

९. **गाँव दाखिया**- सोलंकी व पंवार वंश

१०. **गाँव कुण्डला, बम्बारी**-झाला वंश (झालावाड़ रियासत)

वर्तमान में भी वंशावली लेखक अपने यजमानों के घर-घर जाकर इस परम्परा का निर्वाह कर रहा है। उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि उसे सरकारी स्तर पर किसी प्रकार का संरक्षण प्राप्त नहीं है , साथ ही टी.वी एवं अन्य सांस्कृतिक हमलों से प्रभावित नयी पीढ़ी विचलित हो रही है तथा अपनी परम्पराओं से दूर भाग रही है। ऐसे में वंशावली लेखन का कार्य अत्यन्त कठिन हो गया है। यदि इस परम्परा को जिन्दा रखना है तो समाज को आगे आकर इसमें अपना योगदान देना होगा। वंशावली लेखन की इस गौरवशाली परम्परा के द्वारा व्यक्ति को अपने पूर्वजों के जीवन एवं कार्य का ज्ञान होता है जिससे वह आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करता है अतः इस कार्य को हमें चिरकाल तक आगे बढ़ाना है। ❑

१० एच-१डी, तिलक नगर, ***भीलवाड़ा***

केशव विद्यापीठ समिति द्वारा संचालित

गार्गी महिला महाविद्यालय

श्री गौरी शंकर बिहाणी भवन, जामड़ोली, जयपुर दूरभाषः 0141–2680344, 2680719

बालिका उच्च शिक्षा का सुविधाजनक सर्वोत्तम केन्द्र

सत्र 2011–12 हेतु स्नातक–प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारंभ

वाणिज्य संकाय :–

1. लेखा एवं व्यावसायिक संख्यिकी
2. व्यवसाय प्रशासन
3. कम्प्यूटर एप्लीकेशन
4. आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंधन

कला संकाय :–

1. हिन्दी साहित्य
2. अंग्रेजी साहित्य
3. समाज शास्त्र
4. राजनीति शास्त्र
5. पेन्टिंग
6. संस्कृत
7. मनोविज्ञान
8. इतिहास

विशेषतायें :–

1. शैक्षिक विकास हेतु विशाल पुस्तकालय
2. शारीरिक विकास हेतु खेल का मैदान
3. पूर्ण सुविधायुक्त बालिका छात्रावास
4. वाहन सुविधा उपलब्ध

रामलक्ष्मण गुप्ता अध्यक्ष

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल सचिव

प्रो. मोहन लाल छीपा पूर्व कुलपति,म.द.स.वि.वि., अजमेर अध्यक्ष

सुरेश चन्द्र बंसल अधिशासी अभियंता (से.नि.) मंत्री

केशव विद्यापीठ समिति, जामडोली, जयपुर

गार्गी महिला महाविद्यालय प्रबंध समिति, जामडोली,जयपुर

सामाजिक–सांस्कृतिक अस्मिता और वंशावली संरक्षण

❑ जानकी नारायण श्रीमाली

वैदिक समाज में इतिहास संरक्षण के दो पक्ष हैं इनको क्रमशः -१. इतिहास व्यवस्था और २. इतिहासेत्तर या इतिहास-अतिरिक्त व्यवस्था कहते हैं।

प्रथम पक्ष इतिहास व्यवस्था अत्यन्त निश्चयवाचक है इति+ह+आस= इतिहास। इतिहास का अर्थ हुआ- जो निश्चय ही घटित हुआ। इस इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत वेद, पुराण, रामायण और महाभारत आदि हैं। इनमें भी श्रीमद् भागवत पुराण का हमारे इतिहास की दृष्टि से अनन्य महत्व है। वायुपुराण-स्कन्द पुराण आदि अन्य पुराण ग्रन्थ भी इतिहास के महनीय ग्रन्थ हैं। किन्तु हमारा इस निबन्ध का विवेच्य विषय है- इतिहास की अतिरिक्त व्यवस्था। यह व्यवस्था भी प्रकारान्तर से इतिहास है और इतिहास को आधार तथा पुष्टि प्रदान करती है। मध्यकाल में हमारे राजनैतिक-सामाजिक ताने-बाने को बुरी तरह उजाड़ा गया। मर्मान्तक-प्राणान्तक प्रहारों के उस महाभीषण दौर में इस अवान्तर व्यवस्था यानी इतिहास की अतिरिक्त व्यवस्था ने भारतीय इतिहास को सुरक्षित रखने का अकल्पनीय, अपूर्व, साहस, जोखिम तथा प्रतिभापूर्ण कार्य सम्पन्न किया। यह कार्य था-वंशावली संरक्षण।

इस अद्भुत-अपूर्व कार्य को और इसके महत्व को समझने के लिए हम इसके उद्गम-विकास और वर्तमान पर संक्षेप में विचार करते हैं।

उद्गम

(१) ऋषि परम्परा– मानव के प्रादुर्भाव की हमारी मान्यताएं विज्ञान और इतिहास सम्मत हैं। प्रथम विचार है कि शिव सदाशिव के अंश से नारायण और नारायण की कमल नाभि से ब्रह्मा तथा ब्रह्मा से सप्त ऋषि प्रादुर्भूत हुए। इन्हीं सप्त ऋषियों के नाम से गोत्र और प्रवर चले। आज वंशावली लेखन भी इन्हीं मूल गोत्रों और प्रवरों के आधार पर करोड़ों मानव वंशों के जन्म-मरण-यश-अपयश को समेटे हुए है।

(२) द्वितीय परम्परा नारायण– भारतीय दर्शन और अध्यात्म की परम्परा नारायण से मानी जाती है। इसमें संन्यास व कर्म दोनों पक्षों को उचित महत्व प्राप्त है। इसका प्रारम्भ निम्न प्रकार से है- नारायणं, पद्मभवं (ब्रह्मा), वशिष्ठं, शक्तिं च तत्पुत्र पराशरं च व्यासं, शुकं, गौड़ पद्य (गौड़पाद), महंत गोविन्द, योगेन्द्रमय से श्री शंकराचार्य मथस्य पद्मं- अस्मद् गुरुं सम् तत्मानं तोषमि।

(३) तृतीय परम्परा ब्रह्मा से– शिव से नारायण और नारायण से ब्रह्मा अस्तित्व में आए। कमल आसन पर ब्रह्माजी ने तप किया। तप से उन्हें शक्ति के रूप में सत्वगुण प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने सनत् कुमार, सनक, सनन्दन और सनातन-नामक चार मानस पुत्र पैदा किए तथा उन्हें सृष्टि विस्तार हेतु कहा। उन चारों शिशुओं ने, जिन्होंने अभी कौपीन भी धारण नहीं की थी, दिगंबर ही थे, ब्रह्माजी से सृष्टि का सत्य पूछा। इस सत्यान्वेषण में वे सदाशिव तक जा पहुंचे। उन्होंने शिव से वेदान्त के माध्यम से देव-मानव का ज्ञान प्राप्त किया, परमज्ञानी हो जाने के कारण वे सृष्टि रचना में प्रवृत्त नहीं हुए। आयु के स्थिर(फ्रीज) हो जाने की यह चमत्कारी विज्ञान कथा है।

ब्रह्माजी ने पुनः तप किया और रजोगुण से मरीची, अत्रि आदि सप्त ऋषियों को प्रकट किया। ये सातों ब्रह्माजी के मानस पुत्र हैं। इन ऋषियों ने भी सृष्टि के सत्य को जानना चाहा और तप करके वेद ज्ञान से सत्य का बोध प्राप्त किया।

मनु और शतरूपा–तब ब्रह्माजी ने पुनः तप किया और तमोगुण से अपनी दाहिनी कुक्षी से मनु तथा वाम कुक्षी से शतरूपा को उत्पन्न किया। इस मनु और शतरूपा ने ब्रह्मा का स्वप्न साकार किया। आज धरती इसी मनु से जन्मे मनुजों से विश्व आबाद है। इन्हीं से हमें मनुज, मानुष, मनुष्य और मैन (MAN) संज्ञा प्राप्त हुई। आज मनु की संतति से करोड़ों वंशावलियों का निर्माण हो गया जिनका लिखित रूप से लेखा-जोखा रखने का कार्य अति वैज्ञानिक तथा एक ही साथ केन्द्रित और विकेन्द्रित पद्धति से संजोने का कार्य-इतिहास की अतिरिक्त व्यवस्था अर्थात वंशावली संरक्षण पद्धति से अत्यन्त सत्य निष्ठा और कुशलता से आज तक निरन्तर संपन्न किया जा रहा है। यह मानव बीज को सुरक्षित रखने का महान् और अपने ढंग का विश्व का अनूठा प्रयास है।

महाप्रलय के घोर अंधकार में ब्रह्माजी ने कहा कि कर्म, उपासना और ज्ञान से सत्य को प्राप्त करो। इन सप्त ऋषियों को

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी चतुर्विध पुरुषार्थ को प्राप्त करने के लिए ऋषियों द्वारा प्रवर्तित वैदिक पद्धति का एक महत्वपूर्ण अंग है– वंशावली संरक्षण।

'' प्रत्येक संन्यासी को नवीन गोत्र प्राप्त होता है जिसका नाम है-भू र्भुवः, इन गोत्रों में उनका वंशावली लेखन होता है। वैष्णव संन्यासी बनने पर व्यक्ति का नवीन गोत्र 'अच्युत' कहलाता है। संन्यासी के निधन पर वह ब्रह्मलीन माना जाता है, अतः वापस अपने पितृ गोत्र में नहीं लौटता।''

अपना आदर्श मानो । मनु अपनी नौका पर सप्त ऋषियों को तथा सृष्टि के महत्वपूर्ण वनस्पति आदि के बीजों को साथ लेकर चल पड़े। ब्रह्माजी ने मनु को विवस्वान (सूर्य) को सौंप दिया । इसलिए उनका नाम वैवस्वत मनु हुआ और मनु की वंशावली- सूर्यवंश - कही जाती है तथापि वंश संरक्षण का आधार सप्त ऋषियों के गोत्र और प्रवर ही रहे । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी चतुर्विध पुरुषार्थ को प्राप्त करने के लिए ऋषियों द्वारा प्रवर्तित वैदिक पद्धति का एक महत्वपूर्ण अंग है- वंशावली संरक्षण। इससे व्यक्ति को अपने अतीत गौरव से प्रेरणा लेकर वर्तमान और भविष्य को संवारने की प्रेरणा मिलती है। यह पद्धति मंत्र दृष्टा ऋषियों (ऋषयः मंत्र दृष्टारः) द्वारा स्थापित की गई है।

कतिपय अपवाद– वंशावली का लेखन ऋषि गोत्रों के आधार पर होता है तथापि इनमें कतिपय अपवाद भी स्थापित हो जाते हैं । इन अपवादों को अवान्तर भेद कहते हैं । ये योग्यता और क्षेत्र के आधार पर भी बनते हैं। किसी व्यक्ति के अति तप, अति पराक्रम अथवा ऐसे ही किसी असाधारण कार्य के कारण अप्रतिम लोकप्रियता अर्जित कर लेने पर उसके नाम से नवीन शाखा अस्तित्व में आ जाती है। ऐसे व्यक्ति के वंशज अपने इस पूर्व पुरुष को मूल गोत्र के साथ या समान उल्लिखित करने लगते हैं। जिनसे नवीन **प्रवर** निर्मित होते हैं । कुछ कार्य ऐसे विशिष्ट होते हैं कि कर्ता की जाति निर्धारित कर देते हैं - जैसे कि उड़ीसा में महापात्र। अन्यत्र भी ऐसे उदाहरण मिल जाते हैं।

स्त्री का गोत्र विवाह के समय बदल कर पति का गोत्र हो जाता है, किन्तु स्त्री की मृत्यु के बाद उसका गोत्र पुनः अपने पिता के गोत्र के अनुरूप हो जाता है। अतः उत्तर क्रिया में तदनुसार उल्लेख होता है । इसी प्रकार व्यक्ति संन्यास ग्रहण करता है तो उसका जन्मना गोत्र सदैव के लिए समाप्त हो जाता है। प्रत्येक संन्यासी को नवीन गोत्र प्राप्त होता है जिसका नाम है-भू र्भुवः, इन गोत्रों में उनका वंशावली लेखन होता है। वैष्णव संन्यासी बनने पर व्यक्ति का नवीन गोत्र 'अच्युत' कहलाता है। संन्यासी के निधन पर वह ब्रह्मलीन माना जाता है, अतः वापस अपने पितृ गोत्र में नहीं लौटता ।

मूलगामी चिन्तन और लेखन

भारत में वंशावली लेखन और चिन्तन की परम्परा मूलगामी है। इस अद्भुत व्यवस्था को गीता में 'ऊर्ध्व मूल अधः शाखः' कहा गया है। विश्व के प्रथम मानव ने भारत में जन्म लिया और उसके वंशज यहीं से सारी धरती पर फैले। अतः यदि धरती के किसी छोर का व्यक्ति अपने पूर्वजों को ढूंढ़ना चाहे तो आज भी अपने उत्स को सम्यक् प्रयास से पा सकता है । पुराणों में वंशावलियों का और उनके विश्व विस्तार का इतना वैज्ञानिक अनुशीलन है कि वह व्यक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाने में समर्थ है । आगे अन्य अनुच्छेदों में हम इस बात के कुछ पुष्ट प्रमाण देखेंगे ।

वंशावली अभिलेखों में शताब्दियों के आर-पार सामाजिक अस्मिता की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हो सकती है । मूल उद्गम् का गोत्र और स्थान अर्थात कहां से आए? यह प्रणाली बता सकती है। इस प्रणाली से सामाजिक विघटन की भी जानकारी प्राप्त होती है । इस प्रणाली के केन्द्र सामाजिक समरसता के साधना स्थल हैं।

विराट तंत्र तथा उपकरण

तीर्थ पंडा–इस वंशावली लेखन का एक छितराया हुआ किन्तु विराट तंत्र है। इनके सर्वप्रथम केन्द्र हैं- पुण्य स्थल । चार धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, बावन शक्तिपीठ, चार कुम्भ स्थल सहित नदी-सरवरों , महत्वपूर्ण मंदिरों आदि को मिलाकर हजारों स्थानों पर लाखों लोग वंशावली संरक्षण हेतु समर्पित और सेवार्पित हैं। इस व्यवस्था को संचालित करने वाले **तीर्थ पंडा** कहलाते हैं। 'तारयति इति तीर्थ' अर्थात जो तीर्थ यात्रा को सफल बनाए, वह तीर्थ पंडा । यहां एक तीर्थ वैतरणी का उदाहरण समीचीन होगा। उत्कल (उड़ीसा) के जाजपुर में यह तीर्थ है । माना जाता है कि प्रत्येक प्राणी को मृत्यु के उपरान्त सूक्ष्म शरीर से वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है । यह महाभयानक होती है । इसे तीर्थ पंडा सुगम बना सकता है । यहां सभी का अभिलेख भी रखा जाता है।

ये तीर्थ पंडा आगत व्यक्ति का विवरण अपनी भाषा और लिपि में अंकित करते हैं, तिथि, समय व स्थान लिखते हैं जिसकी पुष्टि हेतु आगत व्यक्ति के हस्ताक्षर लेते हैं । अत्यन्त पवित्र भाव से यह कार्य होता है और उसी प्रकार श्रद्धा से भेंट की जाती है ।

यहां भी एक उदाहरण देता हूँ । भारत वर्ष में मेघवाल एक बहुत बड़ी जाति है । इनका मूल स्थान जम्मू-तवी के पास **मदन चक्की** नामक स्थान पर माना जाता है। सारे भारत से मेघवाल बंधु मदन चक्की की यात्रा हेतु जाते हैं । राजस्थान की यह संख्या की दृष्टि से एक अकेली सबसे बड़ी जाति है।

भाट बहियां- वंशावली संरक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है- भाट राजाओं की बहियां । ये पहले तो प्रवास करके घर-घर जाकर अपने यजमानों के वंश लेखों को अद्यतन करते थे फिर विशेष अवसरों पर आने लगे और अब जातीय समारोहों तक ही इनका आगमन सीमित हो गया है । इनके लेखे प्रामाणिक माने जाते हैं। गोत्रों के भी बही भाट होते हैं। जोधपुर जिले के महलाणा गांव के भाट-राजपूत, जाट और विश्नोई जाति के बही भाट हैं।

अन्य संसाधन– चारणों में विरुदावली और शौर्य बखाण के

लिए राजाओं के कविराज होते थे। विरुदावली का आधार वंशावली प्रस्तुति होता था। मुसलमान तथा हिन्दू ढाढ़ी, दमामी अपने गीतों के द्वारा वंश गौरव का बखान करते थे। विश्नोई समाज में गायणा (गाने-बजाने के साथ) तथा कहीं-कहीं पर राजपुरोहित भी वंश विवरण सुरक्षित रखते हैं। जैन समाज में भोज और सेवगों का एतदर्थ योगदान है।

अंग्रेजों के गजेटियर- सेन्सस् रिपोर्ट्स में सामाजिक जातियों के इतिहास लिखे गए। कर्नल टॉड ने इन स्रोतों के आधार पर राजपूताने की गौरव गाथाएं लिखी। आधुनिक जनगणनाओं में भी सामाजिक जातियों का इतिहास समाविष्ट होता है।

मुसलमान और अंग्रेज शासकों ने वंशावली संरक्षण को नकारने तथा हतोत्साहित करने की नीति अपनाई ताकि भारतीयों को जातीय गौरव का बोध न हो सके। इन स्रोतों द्वारा इतिहास की विशेष घटना भी संरक्षित की जाती थी जो मुसलमान और अंग्रेज शासकों के लिए सह्य नहीं थी।

कतिपय दृष्टांत

मिर आते सिकन्दरी (गुजरात का इतिहास)-लेखक सिकन्दर बिन मुहम्मद मंझू, शब्द महिमा प्रकाशन, जयपुर, संस्करण २००२ का उद्धरण (पेज १ से), *''गुजरात के सुल्तानों के वंश वालों में जो सर्वप्रथम मुसलमान हुआ, वह **सहारन** था ... सहारन के पिता का नाम हरचंद, उसके पिता हरपाल, उसके कन्दपाल, उसके धिरेन्धर, उसके कुंवरपाल.. त्रिलोक... दुर्लभ, ... सहस्त्र। इसी प्रकार यह वंशावली रामचन्द्र तक जिनको हिन्दू ईश्वर मान कर पूजा करते हैं, पहुंचती है।''*(सहारन पंजाब के खत्री वंश का था और पिता द्वारा आचार भंग पर त्याग दिया गया था,उसकी एक आवाज पर छह हजार अश्वारोही उठ खड़े होते थे । इसके पौत्र अहमदशाह ने अहमदाबाद बसाया।)

(२.) कश्मीर की वंशावली– महाभारत युद्ध में कश्मीर नरेश ने भाग नहीं लिया था, क्योंकि उसकी आयु मात्र २ वर्ष थी किन्तु महाभारत से आज तक की कश्मीर नरेशों की वंशावली पूर्ण सुरक्षित रूप में उपलब्ध है। यहां विशेष यह कि इन ५ हजार वर्षों में ४२ राजाओं के नाम के उल्लेख नहीं हैं। ये नाम लुप्त हैं क्योंकि ये वैदिक राजा नहीं रहे (संभवत: बौद्ध राजा रहे), इसलिए वंशावली संरक्षण के तंत्र से वंचित हो गए ।

(३.) भगिनी निवेदिता ने १९०८ ई. में लंदन में विश्व वंशज परिषद को सम्बोधित किया था जिससे इस दिशा में विश्व चिंतन का बोध होता है।

(४.) पं. मधुसूदन ओझा के प्रसिद्ध ग्रंथ 'ब्रह्म विज्ञान' में उल्लेख है कि 'चन्द्रमा के अंश का ५६वां भाग व्यक्ति में आता है। यह अंश घटते-घटते सातवीं पीढ़ी में समाप्त होता है, तब पितृ की मुक्ति होती है। एतदर्थ कर्म कांड आवश्यक। एतदर्थ ही पंडे, भाट ७ पीढ़ी तक का विवरण लिखते हैं। सात पीढ़ी तक हाड़ का सूतक लगता है।

वैज्ञानिक प्रयास

आज विज्ञान मानव जीवन आदि पद्धतियों से मानव मूल को पहिचानने, भौगोलिक इकाइयों में बसे मानवों के पूर्वजों को पहिचानने को आतुर व सन्नद्ध है। हमारी वंशावली संरक्षण की वैज्ञानिक प्रणाली उन्हें एक विकल्प उपलब्ध कराती है और साथ ही उनके प्रयासों की पुष्टि या खंडन भी कर सकती है। अत: इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

वंशावली लेखक एक व्यक्ति के अनेक आयामों का उल्लेख कर उसकी पहिचान निर्धारित करता है। एक उदाहरण इस प्रकार है -

१. गोत्र - भारद्वाज
२. शिव - नवलेखश्वर
३. विनायक - दूधियो
४. भैरव - ईशान्
५. यक्ष - कामेश्वर
६. बृहस्पति - अंगीरस

ये छ: बिन्दु व्यक्ति के मूल इतिहास और उसकी महत्वपूर्ण घटनाओं, स्थलों, ऐश्वर्यों, पराक्रमों और साहित्यिक वैभव आदि के प्रतीक और साक्ष्य हैं। प्रत्येक गोत्र के ये छ: बिन्दु पृथक-पृथक होते हैं। ❑

*- ब्रह्मपुरी चौक, **बीकानेर***

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

D. Anilkumar Jain
Mob. 98452 69446

SAPNA BANKERS
SHREE NAKODA FINANCE

81/2, 26th Main, J.P.Nagar, 6th Phase
Puttanhalli Main Road,
Ph. 22453486, 41722450 Bangalore-560078

भारत के वंशावली लेखक

❑ डॉ. देव कोठारी

इस चराचर जगत में मनुष्य एक समझदार एवं संवेदनशील प्राणी है । इस दृष्टि से उसके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वह कौन है ? कहाँ से आया है ? उसके पूर्वज कौन थे ? उनका अस्तित्व कैसा था ? उनकी सांस्कृतिक पहचान क्या थी? वह कितनी समृद्ध थी ? तद्नुसार सामाजिक मूल्यों का स्तर कैसा था ? कितना समृद्ध था ? आदि अनेकों ऐसे प्रश्न हैं जो मानव अस्तित्व की जिज्ञासाओं को रेखांकित करते रहते हैं ।

आज विश्व के कई देशों के नागरिक अपनी उपर्युक्त प्रकार की पहचान को ज्ञात करने में लगे हुए हैं। अपनी जड़ें तलाशने के लिये वे कई प्रकार के प्रयोग भी कर रहे हैं । वे यह जानना चाहते हैं कि वे कौन हैं? कहाँ से आये हैं ? क्या वे उसी देश के मूल निवासी हैं, जिस देश में वर्तमान में निवास कर रहे हैं अथवा कहीं बाहर से आकर बसे हैं । बाहर से आये हैं तो कब, कहाँ से किन कारणों से आये हैं? उनके पूर्वजों का इतिवृत क्या व कैसा रहा है, लेकिन वे अपनी जिज्ञासाओं का प्रामाणिक उत्तर नहीं ढूंढ पा रहे हैं । अपनी आदिकालीन जड़ें उन्हें नहीं मिल रही हैं । विश्व की कुछ जातियां हैं जो डी.एन.ए. टेस्ट के माध्यम से अपना अस्तित्व भारत से जोड़ती हैं, लेकिन इस एकमात्र तथ्य के अलावा उनके पास कोई ऐसा प्रमाण नहीं है जो अपनी व अपने पूर्वजों के प्राचीन अस्तित्व को भारत से जोड़कर गौरवान्वित हो सकें।

इस दृष्टि से हमारा देश भारत काफी भाग्यशाली है । यहाँ के मानव की पहचान के वे सभी प्रमाण उपलब्ध होते हैं, जो उसके अस्तित्व को प्रामाणिक आधार प्रदान करते हैं। ऋषि-मुनियों ने भारत भूमि के निवासियों के उपर्युक्त प्रकार के अस्तित्व को आदिकाल से ''वंशावलियों'' के माध्यम से क्रमशः संजोकर रखा है । इन वंशावलियों में गोत्र, जाति आदि की उत्पति, परम्परा, उत्कर्ष, अपकर्ष आदि की समस्त जानकारी उपलब्ध हो जाती है। इस तरह इन वंशावलियों के माध्यम से हर व्यक्ति अपने इतिवृत को तथा अपने पूर्वजों के अच्छे-बुरे कार्यों से आज की तारीख में स्वयं साक्षात्कार कर सकता है । पारिवारिक विवादों में कानूनी साक्ष्य बन कर ये वैधानिक सहायता भी करती हैं ।

क्या है वंशावली परम्परा

वंशावली में किसी परिवार या कुल की उत्पत्ति तथा उसके पूर्व पुरुषों (पूर्वजों) के नामों का पूर्वोत्तर क्रम से कालक्रमानुसार पंक्तिबद्ध विवरण इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है कि उसमें प्रत्येक पुरुष की योग्यता-प्रतिभा व कार्यों का विवरण, उसके स्थितिकाल, स्थान, जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं आदि के बारे में एक साथ जानकारी प्राप्त की जा सके, जिससे सम्बन्धित वंश के भूतकाल की गरिमा के आधार पर भावी पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण कर सके ।

गौरवशाली परम्परा

वर्तमान में वंशावलियां जिन रूपों में और जिस विशद परिणाम में उपलब्ध होती हैं, उसका श्रेय वंशावली लेखकों को है। यदि ये वंशावली लेखक नहीं होते तो हमारे पूर्वजों के नाम, उनके कार्यकलाप, उनकी ऐतिहासिक देन आदि को हम नहीं जान पाते। इन्हीं के कारण हम अपने भूतकाल के उत्थान व पतन का रसास्वादन कर वर्तमान व भविष्य को संवारने का प्रयास कर सकते हैं । एक समय था जब इन वंशावली लेखकों का बड़ा मान व सम्मान था । जब कभी ये यजमान के यहां पर आते तो उन्हें ऊंचे आसन पर बिठाया जाता। उनकी पूजा की जाती और जब ये यजमानों के पूर्वजों का गुण-गान करते तो सम्बन्धित परिवार के सदस्य बहुत गर्व का अनुभव करते । उस समय इन्हें द्रव्य आदि उपहार में दिया जाता । राजा लोग इन्हें उपहार-स्वरूप जागीरें आदि प्रदान करते ।

इस प्रकार इन वंशावली लेखकों को समाज में बहुत सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वंशावलियां इनकी आजीविका की साधन थी। ये वंशावली लेखक शासक वर्ग, समाज, जाति के अनुसार अलग-अलग होते थे । ऐसे वंशावली लेखकों का विस्तार भय के कारण संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण ही यहां प्रस्तुत किया जा रहा है । इनके बारे में विस्तार से जानने के लिये शोध कार्य करने की आवश्यकता है ताकि उस शोध के आधार पर इन वंशावली लेखकों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सके।

(१) चारण :– चारण जाति प्राचीन काल से ही भारत के विभिन्न प्रदेशों में निवास करती आई है। राजस्थान, गुजरात के कच्छ व सौराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश के मालवा में यह जाति बहुतायत

से पाई जाती है । इस जाति का वेद, पुराण, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थों में बड़े सम्मान के साथ उल्लेख हुआ है ।

यह चारण जाति कई शाखा व उपशाखाओं में विभाजित है। शाखाओं में मारू चारण, परजिया चारण, काछेला चारण, तुम्बेल चारण, सोरठिया चारण आदि मुख्य हैं । इन चारणों की प्रशाखाएं भी कई हैं । जिनमें मुख्य हैं - आसिया, दधवाड़िया, आढ़ा, बारहठ (बारोट), कविया, मेहा, खिड़िया, सिंढ़ायच, वीठू, गाडण, मेहडू, सांदू, रतनू, झूला, मिश्रण, टापरिया, लालस, सामोर, देवल, महियारिया, सौदा, उज्वल, पाल्हावत, रोहड़िया, कुंवारिया आदि । यह जाति मूलतः देवी उपासक है ।

मध्यकाल में यह चारण जाति राजा - महाराजा एवं उनके सामन्तों द्वारा आश्रित होती थी । उनका कीर्तिगान करती, युद्धकाल में वीरत्व का संचार करती और उनकी उपलब्धियों व अच्छे कार्यों को काव्यबद्ध कर उन्हें इतिहास में अमरत्व प्रदान करती । इस पर शासक वर्ग द्वारा प्रसन्न होकर इन्हें जागीरें दी जाती । लाखपसाव एवं करोड़ पसाव दिये जाते । इसके साथ ही ये चारण अपने आश्रित राजाओं की वंशावलियों का लेखन भी करते । ये वंशावलियां काव्य या गद्य में होती थी। इन चारणों द्वारा गुहिलोत-सिसोदियों, राठौड़ों, चौहानों, कच्छवाहों, परमारों, सोलंकियों आदि राजपूतों के बारे में लिखित कई वंशावलियां उपलब्ध होती हैं । इनके द्वारा ख्यातें भी लिखी हुई मिलती हैं ।

(२) राव :- राव दो तरह के होते हैं। एक राव 'शासनिक राव' कहलाते हैं। इन्हें राजा-महाराजाओं द्वारा जागीरें मिली हुई थी । दूसरे राव 'साधारण राव' होते हैं जो खेती करते हैं। राव जाति की उत्पति ब्रह्मा के यज्ञ से मानी जाती है । इस कारण इन्हें ब्रह्म भट्ट राव, ब्रह्मराव, राय आदि नामों से भी पुकारा जाता है । कुछ राव अपने आपको आमेर के कच्छवाहा राजपूतों से निकला हुआ मानते हैं तो कुछ राव अपने आपको 'ब्रह्मराव उत्पति कथा' के आधार पर राजा पृथु के काल से अपना अस्तित्व मानते हैं। 'भट्टाख्यानम्' संस्कृत ग्रंथ में इनकी उत्पति व वंशावली का वर्णन विस्तार से पाया जाता है । ये राव अपने यजमानों की वंशावलियाँ रखते हैं । ख्यात, वात, विगत जैसी रचनाएं भी इनके द्वारा लिखी मिलती हैं । इन्हें स्तुति - पाठक, देवीपुत्र भी कहा जाता है । सूत, मागध, बन्दीजन इनके अन्य नाम हैं।

(३) भाट :- राव एवं भाट को एक ही माना जाता है । 'भाट' शब्द संस्कृत के भट्ट शब्द का देशज रूपान्तरण है । यह एक जाति विशेष है जो क्षत्रियों, ब्राह्मणों, महाजनों आदि की वंशावलियाँ व पीढ़ियां लिखते हैं व रखते हैं । इन भाटों की भी कई उपजातियां हैं । कुछ भाट अपने आपको गौड़ राजपूत से निकला मानते हैं । स्वयं भाटों के भी भाट होते हैं ।

(४) राणीमंगा :- यह भी राव-भाटों की ही एक उपजाति है । इस जाति के लोग राजा-महाराजाओं की राणियों की नामावली एवं वंशावली रखते हैं । राणियों की प्रशंसा में गीत गाते हैं तथा राणियों से मांगकर जीवन चलाने के कारण यह जाति राणीमंगा कहलाती है ।

(५) ब्रह्म भट्ट :- यह राव भाटों की ही एक शाखा है जो अपने को ब्राह्मण मानती है । इस जाति के लोग भी राजाओं की वंशावलियां रखने का काम करते हैं तथा स्तुतिपरक गीत भी गाते हैं।

(६) बड़वा :- यह भी राव-भाटों की ही एक उपजाति है। मेवाड़ के सिसोदिया राजपूतों की वंशावली रखने का काम करती है । मध्यप्रदेश में टोकरा गांव इनका मुख्य निवास-स्थान है । 'उदयपुर पाटनामा' इनका मुख्य वंशावली प्रदर्शक ग्रंथ मिलता है।

(७) बही-बंच्या :- इस जाति के लोग भाटों के भाट होते हैं तथा इनका काम भाटों की वंशावलियां रखना होता है। ये भाटों की वंशावलियां बहियों में रखते हैं तथा भाटों के घर जाकर अपनी बहियों को वांच कर (पढ़कर) भाटों की वंशावली का वर्णन करते हैं, इस कारण इन्हें बही-बंच्या भाट कहते हैं। चारण जाति के

वैदिक परम्परा

वंश-निर्माण की आधार-शिला किसी एक निश्चित समय में नहीं बनी । इसके निर्माण का इतिहास हमें वैदिककाल से मिलता है । वैदिक साहित्य में कुछ राजाओं व उनके परिजनों के नाम आये हैं । उन नामों को हम वंशावली के बीज रूप में ग्रहण कर सकते हैं । वेदों के पश्चात पुराण साहित्य में वंशावली या वंशवृक्ष अथवा वंशजों का विस्तृत विवरण मिलता है । पुराणों में चौदह मनुओं का कालक्रम मिलता है । मरीचि, पुलस्त्य, ऋषभ तथा पृथु की वंशावली मिलती है । देवासुर-संग्राम व उसके बाद के राजाओं के उल्लेख प्राप्त होते हैं । वंशावली से सम्बंधित इन उल्लेखों के बाद पुराणों में इक्ष्वाकुवंश, सोमवंश, कान्यकुब्ज वंश, यादववंश, पाण्डववंश, बार्हद्रथवंश, प्रद्योतवंश, शिशुनागवंश आदि की पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है । महाभारत व श्रीमद्भागवत् में भी तत्कालीन वंशों की वंशावलियों के सन्दर्भ आते हैं। कालिदास ने 'रघुवंश' नामक काव्य ग्रंथ में रघुकुल की पर्याप्त जानकारी प्रदान की है । प्राचीन भारत में नन्दवंश, मौर्यवंश, शुंगवंश, कण्ववंश, सातवाहन वंश, वाकाटक वंश, शकवंश, चष्टनवंश, गुप्तवंश, वर्धन वंश आदि के बारे में पर्याप्त इतिवृत आता है लेकिन इन राजवंशों के बाद उनके वंशजों की जानकारी का अभाव है । इन राजवंशों के वंशजों की जानकारी वंशावलियों से प्राप्त हो सकती है ।

बारोट भी बही-बंच्या का काम करते हैं।

(८) जागा :– ऋषिकुल परम्परा में यज्ञ से उत्पन्न होने के कारण इन्हें 'याज्ञिक' कहा जाता है । यही याज्ञिक शब्द समय परिवर्तन के साथ 'जागा' के नाम से जाना जाने लगा । एक अन्य मान्यता के अनुसार राजस्थान के सीकर जिलान्तर्गत लोहार्गल के राजा जागा से इस जाति की उत्पति मानी जाती है और उत्पति काल आज से छः हजार वर्ष पूर्व का माना जाता है ? माहेश्वरी जाति की उत्पति भी लगभग इसी काल में हुई मानी जाती है । जागा जाति इन्हीं माहेश्वरियों की याचक जाति है और अपने यजमान माहेश्वरियों की वंशावली भी इसी जागा जाति द्वारा रखी जाती है । माहेश्वरियों के विरुदों को गाकर उनसे उपहार भी ग्रहण करते हैं। कुंभलगढ़ के आसकरण देवपुरा ने महाराणा उदयसिंह को बाल्यावस्था में संरक्षण दिया । इस देवपुरा परिवार की जागा जाति द्वारा लिखी हुई वंशावली मिलती है । माहेश्वरियों के जागा के अलावा खण्डेलवालों, ब्राह्मणों, मीणों, मेवों, जादौन राजपूतों तथा मुसलमानों के जागा भी होते हैं, जो इनकी वंशावलियां रखते हैं ।

(९) रावल :– 'रावल' मेवाड़ के गुहिलवंशीय शासकों की उपाधि भी है । डूंगरपुर व बांसवाड़ा के शासक भी महारावल सम्बोधन से पुकारे जाते हैं । गुजरात के औदिच्य ब्राह्मणों की यह एक अटक भी है और 'रावल' नाम की एक जाति विशेष भी है, जो गाने-बजाने का काम करती है तथा विभिन्न जातियों की वंशावलियां रखती है ।

(१०) ढाढ़ी :– यह एक प्राचीन जाति है । इस जाति वालों का मानना है कि भगवान राम व कृष्ण के समय में भी यह जाति विद्यमान थी और जन्म के समय इस जाति ने बधाई गीत भी प्रस्तुत किये थे । ढाढ़ी-ढाढ़िन का स्वांग रचकर आज भी ये खूब नाचते-गाते हैं । अबुल फजल ने 'आईने अकबरी' में भी इस जाति का उल्लेख किया है और बताया है कि युद्ध भूमि में ये वीरों का गुणगान कर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं । ढाढ़ी मूलतः हिन्दू हैं, किन्तु कालान्तर में कुछ ढाढ़ी मुसलमान भी बन गये हैं। मुसलमान ढाढ़ी मलानूर कहलाते हैं और ऐसी मान्यता है कि औरंगजेब के काल में ये हिन्दू से मुसलमान बने । हिन्दू ढाढ़ी, जाट, स्वर्णकार, छींपा आदि जातियों की पीढ़ियां - वंशावलियां रखते हैं । मौखिक गाकर सुनाते भी हैं तथा यजमानों से उपहार भी प्राप्त करते हैं ।

(११) मोतीसर :– मोतीसर जाति का प्रामाणिक इतिहास नहीं मिलता किन्तु कहा जाता है कि कच्छभुज के राजकवि मांडलजी नामक चारण ने अपनी पुत्री का विवाह माणकजी नामक एक राजपूत से कर दिया था, जिसकी संतान मोतीसर कहलाती है । मोतीसरों की आठ शाखाएं हैं, जिनके नाम इस दोहे में गिनाएं गये हैं :-

बालण रवीला बिमाला, रामहिया पड़िहार ।
मांगलिया नै चांदणा, मकवाणा सरदार ॥

ये मोतीसर चारणों के याचक हैं । जिस प्रकार चारण राजपूतों के सिवाय किसी दूसरे से उपहार ग्रहण नहीं करते हैं और राजपूतों की ही वंशावलियां रखते हैं, ठीक उसी तरह ये मोतीसर भी केवल चारणों से ही मांगते हैं, चारणों की प्रशंसा में गीत भी गाते हैं और चारणों की वंशावलियां ही लिखते हैं। चारणों व मोतीसरों का सम्बंध बहुत घनिष्ठ है । कहा भी गया है-

''मोतीसर म्हारे सिर ऊपर, म्हारै कदमां रै हेठ ।''

(१२) जैन यति – महात्मा :– इस जाति के लोग ओसवाल, पोरवाल आदि जैन जातियों की वंशावलियां रखने का काम करते हैं । पहले ये विवाह भी नहीं करते थे और संयम से परिपूर्ण जीवनयापन करते हुए वंशावलियों को लिखना, उनका वाचन करना, वंशावलियों का संरक्षण करना तथा अपने यजमानों से भरण पोषण प्राप्त कर आजीविका चलाना इनका मुख्य कार्य होता था । राजस्थान के सिरोही, घाणेराव आदि नगरों में इन जैन यति व महात्माओं द्वारा रखी जाने वाली वंशावलियों के विशाल संग्रह हैं ।

(१३) पण्डा–पुरोहित :– पुष्कर, मथुरा, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, प्रयाग, बनारस, सौरों, गया आदि तीर्थ-स्थलों पर तीर्थयात्री आते हैं तथा इन तीर्थयात्रियों द्वारा अपने पूर्वजों का पिण्डदान किया जाता है । उस समय इन तीर्थों के पण्डों-पुरोहितों द्वारा अपने यजमानों की वंशावलियां अपनी बहियों में लिखी जाती हैं। ऐसी वंशावलियों की संख्या बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है ।

इनके अलावा वंशावली लेखक और भी हैं । इस दृष्टि से इस सन्दर्भ में व्यापक सर्वेक्षण करने पर कई और वंशावली लेखकों का पता चल सकता है । ❑

(पूर्व अध्यक्ष-राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी)

वैदिक कालीन याज्ञिक ही हैं 'जागे'

❑ श्याम आचार्य
(पूर्व सम्पादक जनसत्ता, नव भारत टाइम्स, दैनिक नव ज्योति)

वंश परपरा के इतिहास लेखक, वंशावलियों अथवा वंशवृक्ष की जानकारी देने वाले भारतीय समाज में सर्वाधिक श्रद्धेय और सम्माननीय माने गए हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास की हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ तो तैयार की ही, साथ ही आम आदमी के वंश वृक्ष के इतिहास को निरन्तर सुरक्षित रखा और उसे आज भी अभिवृद्ध किए जा रहे हैं । लेकिन ऐसे सामाजिक, पारिवारिक इतिहास और वंशावलियों के रचयिताओं को आज भारतीय समाज ने विस्मृत ही नहीं कर दिया बल्कि वे काल की अंधेरी गलियों में धीरे-धीरे गुम होते जा रहे हैं।

हमारे पुराण ग्रंथों के पाँच लक्षण बताए गए हैं, ये हैं:

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मनवंतराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंच लक्षणम्॥

अर्थात् सृष्टि का सृजन, प्रलय का आगमन, वंशों की रचना (सूर्य चन्द्र वंशादि) मनवन्तर यानी काल की अवधि व गणना और जो वंश चले उनके चरित्र की चर्चा ये पुराणों के पाँच लक्षण हैं।

गुरुकुल परम्परा

हम अपने पुरातन इतिहास पर एक नजर डालें तो उसमें हमें एक गुरुकुल परम्परा का उल्लेख मिलेगा। ये गुरुकुल ऋषियों और महर्षियों द्वारा संचालित होते थे । जिनके पास गायों की संख्या जितनी होती थी, उसी के अनुसार गुरुकुल का आकलन होता था। भारतीय समाज में इन्हीं ऋषि-महर्षियों के नाम पर गोत्र-परम्परा बनी। गोत्र का अर्थ है-गाय का त्राण करने वाला या रक्षा करने वाला। ऋषियों के नाम से ही गोत्र चले। आज की पीढ़ी अपने दादा ज्यादा से ज्यादा परदादा का नाम जानती है अथवा वैवाहिक व शुभ कार्यों में किए जाने वाले गोत्रोच्चारण की वजह से अपने गोत्र को पहचानती है कि वह किस गोत्र का है । बाकी गोत्रों के इतिहास के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं होती । ऋषियों के नाम से चले ये गोत्र हैं - वशिष्ठ, शांडिल्य, भारद्वाज, आत्रेय, दाधीच, श्रृंगी, विश्वामित्र, मार्कण्डेय आदि। कुछ गोत्र सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी नाम से चले । इतिहास पुरुषों गोयल, गर्ग आदि के नाम से भी गोत्र बने।

गुरुकुलों में निरन्तर दैनिक यज्ञ होते थे । यज्ञ को 'याग' भी कहते हैं यज्ञ का आयोजन ऋषि-मुनि तो करते ही थे, यज्ञ में आने वाले यजमान भी यज्ञ करवाते थे । यज्ञ में मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियाँ डलवाने वाले 'याज्ञिक' होते थे । याज्ञिक ही यज्ञ करवाने वाले के गोत्र एवं वंशावलियों के नाम अपनी हस्तलिखित पोथियों में दर्ज करते रहते थे। कालांतर में गुरुकुल परंपरा समाप्त हो गई, गुरुकुल बंद हो गए लेकिन यज्ञ की परंपरा निरंतर चलती रही । गुरुकुलों का याज्ञिक शब्द ही अपभ्रंश होकर 'जागे' या 'जागा' बना। आज पूरे भारत में ये जागा परिवार फैले हुए हैं, जो अलग-अलग जातियों के वंश एवं उसकी नामावलियों को अपनी बहियों और पोथियों में दर्ज करते हैं।

यज्ञ में मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियाँ डलवाने वाले 'याज्ञिक' होते थे। याज्ञिक ही यज्ञ करवाने वाले के गोत्र एवं वंशावलियों के नाम अपनी हस्तलिखित पोथियों में दर्ज करते रहते थे। कालांतर में गुरुकुल परम्परा समाप्त हो गई। गुरुकुल बंद हो गए लेकिन यज्ञ की परम्परा निरंतर चलती रही। गुरुकुलों का याज्ञिक शब्द ही अपभ्रंश होकर 'जागे' या 'जागा' बना।

तीर्थ पुरोहित

तीर्थ स्थलों, पौराणिक स्थलों पर आज भी जागा, भाट, पंडे, राव, बड़वा, तीर्थ पुरोहित, ब्रह्मभट्ट आदि हर किसी जाति के व्यक्ति द्वारा तीर्थ स्थल पर जाने पर अपने सम्पर्क-सूत्रों के तंत्र (नेटवर्क) द्वारा उनके पास पहुँच जाते हैं। ये पंडे और तीर्थ पुरोहित ही उन्हें तीर्थाटन, दर्शन, पवित्र नदियों, सरोवरों और नदी संगमों में स्नान, पूजा, अर्चना व तर्पण करवाते हैं । साथ ही अपनी बहियों में तीर्थ स्थल पर उनके आगमन की तिथि, आने वाले के नाम भी लिख लेते हैं । यही नहीं उस तीर्थ स्थल पर उनके वंश के कौन-कौन से लोग या पूर्वज अब तक आए हैं उनका ब्यौरा भी तीर्थ यात्रियों को सुनाते हैं ।

तीर्थ स्थल पर वंशावली से आगमन की जानकारी और ब्योरा सुनकर आया हुआ तीर्थ यात्री सचमुच आह्लादित हो जाता है। यही नहीं, ये पंडे, राव, भाट, तीर्थ पुरोहित शुभ कार्यों, मांगलिक महोत्सवों अथवा अवसर-सुअवसर पर हर शहर में अपने यजमान के यहाँ जाते हैं, जहाँ उनकी पूजा-अर्भ्थना की जाती है। पहले तो उनकी बही (पोथी) का पूजन किया जाता था । आज भी पंडों या तीर्थ पुरोहितों को यजमान द्वारा अच्छी दक्षिणा, उपहार

एवं वस्त्र आदि दिए जाते हैं। इन जागाओं को विवाह अथवा अन्य मांगलिक कार्यों में आमंत्रित करने के लिए सादर आमंत्रण-पत्र भी भेजे जाते हैं। लेकिन आज के युग में यह परम्परा सिकुड़ रही है। युवा पीढ़ी तीर्थ स्थलों के पंडों से बचने का प्रयास करती है (कारण कुछ भी रहे हों) और जागा, पंडे व तीर्थ पुरोहित भी अपने पूर्वजों के इस कार्य को हेय दृष्टि से देखने लगे हैं, भले ही कुछ पंडे इस कार्य में समृद्ध एवं सपन्न क्यों न हो गए हों।

इतिहास लेखक चारण

इतिहास एवं वंशावली चरित्र संरक्षण एवं लेखन में चारणों का उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पुराणों में उनका उल्लेख इस प्रकार हुआ है-''चारयन् कीर्तिम् इति चारणा:''। हर्षवर्धन के काल में अनेक चारणों के संबंध में महत्वपूर्ण उल्लेख मिलता है। प्राचीन ग्रंथों और इतिहास का अध्ययन करने से भी यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में चारण 'गन्धमादन' पर्वत पर रहते थे तथा उन्हें राजा पृथु से तैलंग देश प्राप्त हुआ था। पुराण के अनुसार ''चारणाय तत: प्रादौ तैलंगो देशमुत्तमम्'' एक सोरठा भी है इस बारे में-

'चारण देव समाज, गाठवाडो मेरूगिरन
रीझे हरि पृथुराज ले आया भव लोक में'

चारणों का उल्लेख श्रीमद्भागवत में भी मिलता है। चारण धीरे-धीरे सिंध में जा बसे, जहाँ उनकी हिंगलाज माता की विश्वप्रसिद्ध पीठ है। कालांतर में वे सिंध,कच्छ, सौराष्ट्र, काठियावाड़, राजकोट, गुजरात, मालवा और राजस्थान में बस गए।

चारणों के वीर रस, भक्ति साहित्य, 'ख्यात', 'विरदावली' में जहाँ राजाओं की शूरवीरता एवं भक्ति रस का उल्लेख है वहीं उनके द्वारा देशहित, समाजहित के विरोध में किए गए कार्यो पर कवित्त, सोरठा और दोहों में प्रशंसा-ताड़ना, हितोपदेश, आलोचना भी है। जब राजा और प्रजा दोनों का मनोबल गिरने लगा तो अपनी ओजस्वी वाणी से दोनों के मनोबल को उस ऊँचाई तक ले गए जहाँ राष्ट्र-न्याय और नीति की दृष्टि से उचित था। जोधपुर के महाराज मानसिंह ने तो यहाँ तक कहा है कि *'हम राजा-महाराजा तो मदमस्त हाथी की तरह हैं और चारण कवि वे महावत हैं जो अपने अकुंश द्वारा ही हमें सही राह पर चलने के लिए बाध्य करते हैं।'*

''जागाओं की वंशावलियों से ही पता चलता है कि अलवर जिले में डागवाणी के ख्याल क्षेत्र मेवात के जन्मे जाये बहराम खाँ डागर के पिता डागर नहीं गोपाल पांडे थे। अकबर के दरबार के तानसेन का असली नाम मकरंद पांडे था।''

राजस्थान में ढ़ाई लाख

आज पूरे राजस्थान में करीब ढाई लाख चारण, पंडे, जागा, राव, तीर्थ पुरोहित, भाट, ब्रह्मभट्ट हैं। इनमें अकेले चारणों की संख्या करीब दो लाख है। जागा और अन्य जातियों (राव, भाट, पंडे, तीर्थ पुरोहित) ने जहाँ समाज की वंशावलियों का विस्तृत संरक्षण एवं संवर्धन किया है वही चारणों ने कवित्तमय इतिहास एवं ख्यात लिखकर उन वंशों की समाज को जानकारी दी है। यह भी बताया है कि किस समाज की कौन सी पीढ़ी किस धर्म के प्रभाव में रही,

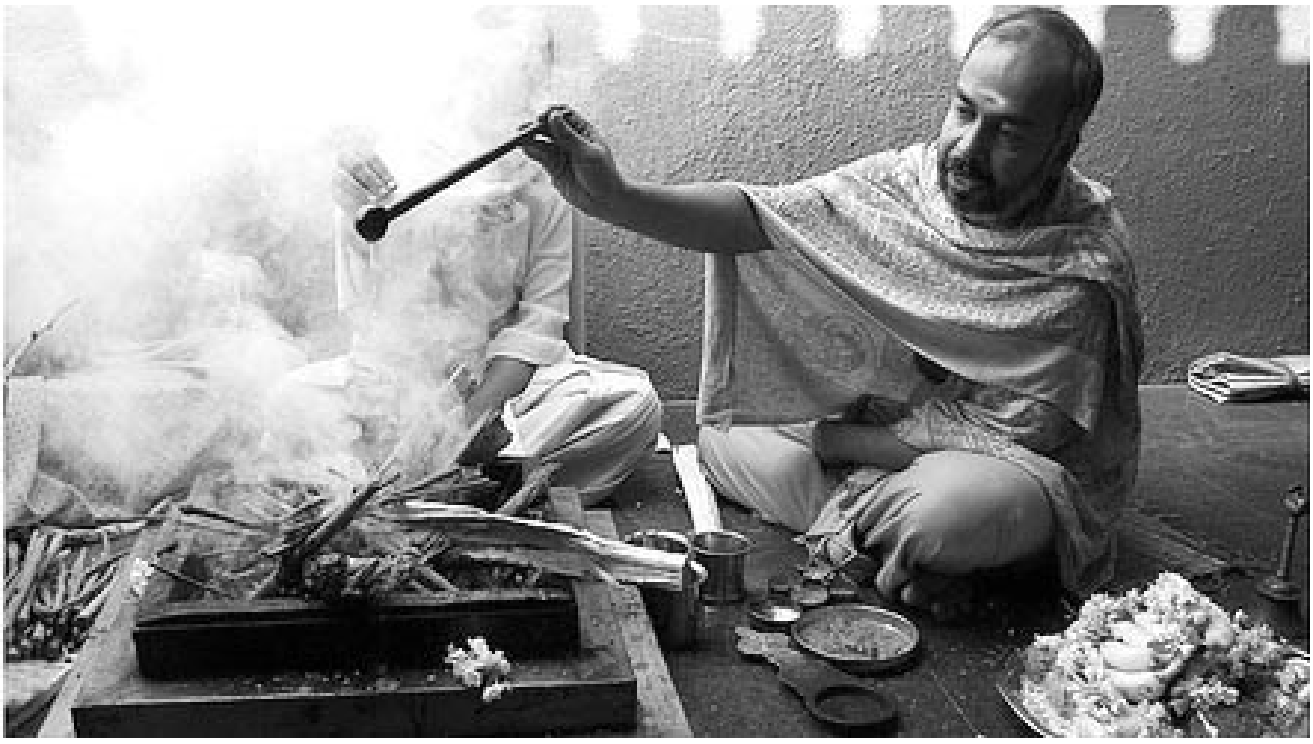

आखिर है क्या 'वंशपुराण'?

वंशावली संरक्षण के सही मायने है हमारे पुरखों का इतिहास, उनकी गौरवगाथा, उनके बड़े-बड़े कार्यों का ब्यौरा। गांव-गांव, घर-घर हर वर्ग व जाति को इस ब्योरे से अवगत करवाना ही वंशावली संरक्षणकर्ताओं का काम था । बस, मोटे रूप से हम इन्हीं ब्यौरों को 'वंशपुराण' कह सकते हैं । यह हर परिवार और वंश का अलग है। इन्हीं वंशावलियों को पढ़ने से पता चलता है कि हम कहाँ के मूल निवासी थे ? हमारा धर्म, कार्य और जीवनदर्शन क्या था ? आज से सौ साल पहले हम क्या थे ? हमने कौन-कौन से ऐतिहासिक कार्य किये ? हम पर कब-कब स्वकीयों और परकीयों के आक्रमण हुए ? उनका दंश हमने कैसे झेला ? परकीयों का प्रभाव हम पर क्या पड़ा ? कौन अपने ही धर्म में बने रहे और किसने परकीयों का धर्म स्वीकार किया?

इसलिए आज इन ऐतिहासिक दस्तावेजों और 'ख्यात' जो देशज इतिहासकारों की बहियों और हस्तलिखित ग्रंथों में हैं, उन्हें हर भारतीय भाषा में जगजाहिर करना हमारा सर्वोच्च दायित्व है। सरल और बोधगम्य भाषा में यदि इन तथ्यों का प्रकाशन किया गया तो उसका असर निश्चित रूप से हमारे समाज पर पड़ेगा।

कब मतान्तरण हुआ। 'जागाओं' की वंशावलियों से ही पता चलता है कि अलवर जिले में डागवाणी के ख्याल क्षेत्र मेवात के 'जन्मे जाये' बहराम खाँ डागर के पिता डागर नहीं गोपाल पांडे थे । अकबर के दरबार के तानसेन का असली नाम मकरंद पांडे था । जागाओं और पंडों की बहियों में लिखी वंशावलियों के क्रम से ही पता चलता है कि कौन सी जाति कब तक हिन्दू थी और कब उसने धर्म परिवर्तन किया? मेव, कायमखानी, ढ़ोली, तेली, रंगरेज, छीपा, लोहार, लंगा, मांगणियार, मिरासी, राइका आदि जाति के जागाओं की वंशावली-बहियों से इन जातियों के उद्‌गम और मतान्तरण के तथ्य उद्‌घाटित हुए हैं।

जागा और पंडे या तीर्थ पुरोहितों की मान्यता आज घट रही है। उनके पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन) की कोई व्यवस्था नहीं है। उन्हें सरकारी मान्यता नहीं है । समाज में इन जातियों का मान-सम्मान कम हो रहा है । जहाँ भी इनकी पूजा होती थी आज उनके घर पर पहुँचते ही नई पीढ़ी के परिवारजनों के मुँह लटक जाते हैं। इसी वजह से ये जागा हीनभावना के शिकार होकर अन्य धंधों और कामों की तलाश में जुटे हैं । समाज की जो जातियाँ कभी इन्हें गुरु की श्रेणी में मानती थी अब उन्हें ऐसा संबोधन देने में संकोच करने लगी हैं।

इसकी वजह है - (१) परम्परा संरक्षण पर आस्था का खत्म होना (२) वंशावली संरक्षण करने वालों को किसी प्रकार का संरक्षण, सम्मान एवं प्रोत्साहन नहीं (३) समाज में उनकी उपयोगिता की समझ का घटना (४) अपने पेशे के प्रति जागा बंधुओं में अरुचि पैदा होना (५) वंशावली संरक्षण की आधुनिक तकनीक का अभाव (६) कभी सम्मानित समझे जाने वाले वंशावली संरक्षकों का आर्थिक दृष्टि से निरन्तर पिछड़ना।

भारतीय समाज में इतिहास लेखन की पुरातन विधा, वंशावली संरक्षण की बहियों का यदि व्यापक स्तर पर अध्ययन एवं अन्वेषण किया गया तो कई सामाजिक-सत्य और ऐतिहासिक तथ्य उजागर होंगे । साथ ही, सामाजिक विषमता और असहिष्णुता समाप्त होकर देश एवं राष्ट्र भक्ति के प्रति समर्पण की एक एकात्मक सोच जाग्रत होगी। ❑

-११६/३२६, विक्रमादित्य मार्ग, मानसरोवर, **जयपुर**

100% PURE SUPER REFIND

कलश मेंहन्दी®

पाउडर

TM. 567862

राजस्थान की रचीली मेंहन्दी

-: निर्माता :-

गहलोत मेहन्दी उद्योग

जी-30, ईन्डस्ट्रीयल एरिया, सोजत सिटी-306104(राज.) जिला पाली

फोन नं. 02960-(F) 222255 (R) 222782

लोक इतिहास की सशक्त कड़ियां : वंशावली लेखन

भंवर सिंह सामौर

वंशावली लेखन लोक इतिहास का सशक्त स्रोत है । इतिहास का कोई आकार नहीं होता - वह तो सिर्फ व्याप्ति है। हमारे देश में इतिहास की लोक वाचिक परम्परा रही है । पौराणिक वंशावलियाँ इसकी साक्षी देती हैं । इतिहास लोक गाथाओं के सहारे चलता रहा । घटनाएं लोक में विसर्जित होकर इतिहास-चक्र बन गईं। लोक गाथाएं मिथ बन गईं । लोक पात्र अलौकिक आभा से मंडित होकर जन जन की प्रेरणा के स्रोत बन गए ।

मनुष्य मात्र का इतिहास जानना है तो वंशावली लेखन की परम्परा को न केवल जीवित ही रखना होगा बल्कि आधुनिक तकनीक का सहारा लेकर उसे जनगणना, जन्म-मृत्यु पंजीकरण और सर्वे आदि नई परम्पराओं से जोड़कर समीचीन बनाना होगा।

लोक इतिहास की लुप्त कड़ियों को जोड़ने का कार्य किया वंशावली लेखन ने । वंशावली के नाम पर नाक भौं सिकोड़ने वाले इतिहास लेखकों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि लोक इतिहास की अद्वितीय अवधारणा वंशावली लेखन ने ही संभव बनाई है । वंशावली लेखन हमारे समाज का जीता जागता इतिहास है। यह पीढियों से वंशावली लेखकों द्वारा संधारित किया जा रहा है।

वंशावली लेखन के विविध रूप इसे और भी प्रासंगिक बना देते हैं। मनुष्य मात्र का इतिहास जानना है तो वंशावली लेखन की परम्परा को न केवल जीवित ही रखना होगा बल्कि आधुनिक तकनीक का सहारा लेकर उसे जनगणना, जन्म-मृत्यु पंजीकरण और सर्वे आदि नई परम्पराओं से जोड़कर समीचीन बनाना होगा। वंशावली लेखन परम्परा आज के मनुष्य को अपने अतीत से जोड़ती है । अपनी परम्परा, इतिहास एवं जीवन शैली से कटे लोगों को यह वंशावली लेखन ही विगत परम्परा, इतिहास एवं जीवन शैली से जोड़े रखता है।

देश का निर्माण

आज भी उपासना पद्धति में बदलाव को स्वीकार करने वाले लोग जब अपने नाम के साथ चौहान, प्रतिहार, परमार, भाटी, मोहिल, दाहिमा, सोलंकी, चाहिल, खींची, चीता, मेहरात, रावत, मेव, कायमखानी इत्यादि पहचान के प्रतीकों का प्रयोग करते हैं तो वे सीधे अपने आप को पृथ्वीराज चौहान, गुर्जर प्रतिहार, भीम चालुक्य, गोगा बापा, अचलदास खींची, भोज, विक्रमादित्य से जोड़कर गौरवान्वित अनुभव करते हैं । यह बोध उन्हें अपनी वंशावली सुनने की परम्परा से ही मिला है ।

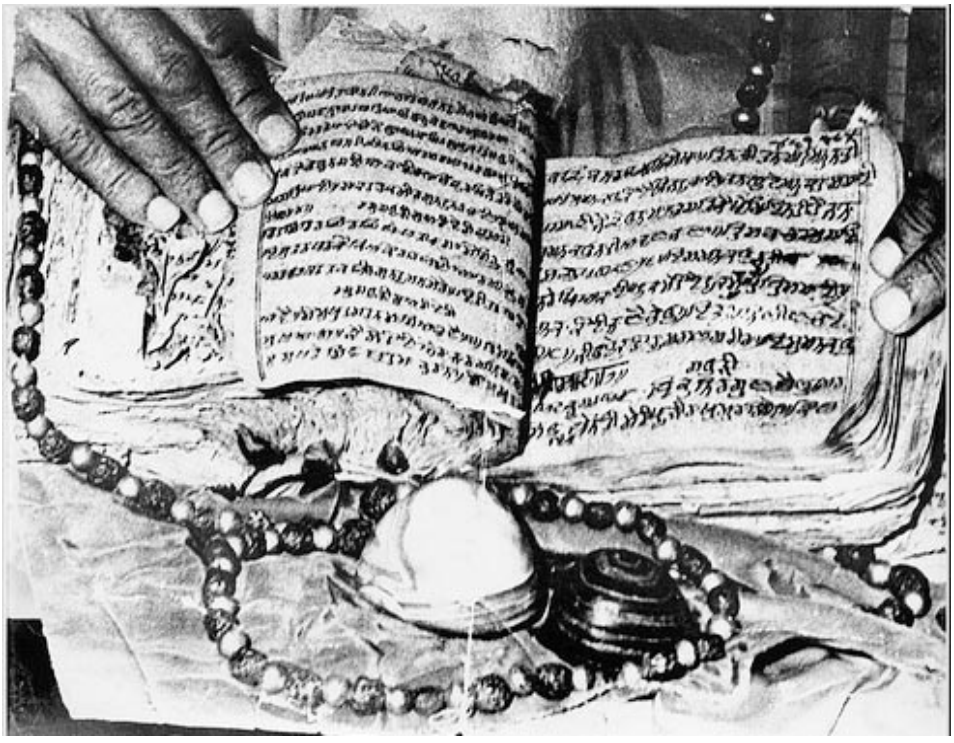

वंशावली लेखन की जो सबसे महत्त्वपूर्ण देन है वह यह है कि इस परम्परा ने बूढे-बच्चे, स्त्री-पुरुष सबके ऐतिहासिक विवरण को संभव बनाया है । इसमें उस व्यक्ति

देश के हर हिस्से में हैं वंशावली लेखक

आज विश्व की अनेक प्राचीन सभ्यताएँ नष्ट हो गयी हैं, उनकी संस्कृति लुप्त हो गयी हैं, परन्तु भारतीय संस्कृति आज भी लगभग वैसी ही है जैसी अतीत में थी। गहराई से चिन्तन करने पर ध्यान में आता है कि इसके मूल में वंशावली लेखन परम्परा का महत्वपूर्ण योगदान है। यह परम्परा पीढ़ी–दर–पीढ़ी अपने पूर्वजों और उनके द्वारा किये गये सुकृत्यों, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का स्मरण करवाती रहती है, जिससे संस्कृति अक्षुण्ण बनी रहती है।

वंशावली लेखन परम्परा का निर्वाह करने वाले लोग भारत में अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग नामों से सम्बोधित किये जाते हैं यथा–कर्नाटिक में हेलवा; बिहार में पंजीकार; गुजरात में बही बंचा, बारोठ; पंजाब व हरियाणा में पुरोहित–राजपुरोहित; तीर्थस्थलों पर तीर्थ–पुरोहित तथा पण्डे; राजस्थान में ब्रह्मभट्ट, जागा, भाट, राव बड़वा, जागीरदार, भट्ट, राणीमंगा, कंवर मंगा, चारणादि। वंशावली आलेखित करने का तरीका अद्भुत है। वंशावली लिखने का कार्य हर कोई नहीं कर सकता। उसका परम्परागत रूप से बना बनाया तरीका है। वंशावली लेखकों की हस्तलिखित बहियों को बाँचने या पढ़कर सुनाने की भी अपनी तकनीक है। इसे विरासत या धरोहर के रूप में सीखने का अभ्यास करना पड़ता है। देश के हर इलाके, हर जाति, हर समुदाय एवं हर पंथ में किसी न किसी रूप में यह परम्परा पाई जाती है।

वंशावली लेखन की परम्परा वैदिक काल से ही प्रारम्भ हो गयी थी। और निरंतर चल रही है। महाभारत काल में तो धन से भी अधिक वृत्त (वंशावली–लेखन) को महत्व दिया गया। महाभारत में कहा गया है, कि अपने इतिहास (वृत्त) की रक्षा यत्न पूर्वक करनी चाहिए। धन तो आता–जाता रहता है। धन की दृष्टि से कमजोर होने पर भी कोई नष्ट नहीं होता, पर जिसका इतिहास नष्ट हो जाता है वह वास्तव में ही नष्ट हो जाता है।

हमारे मनीषियों ने इसीलिये इतिहास एवं संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये वृतान्त (वंशावली लेखन) को आवश्यक माना। विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारे इतिहास को नष्ट करने का प्रयास किया। कई तथ्यों को तोड़मरोड़ कर प्रस्तुत किया। यहाँ तक कहा गया कि भारतीयों को इतिहास का ज्ञान नहीं था। वंशावली लेखन परम्परा इतिहास लेखन ही था, जिसमें राजा–महाराजाओं से लेकर सेठ–साहूकारों तक का वंशक्रम मिलता है। राजस्थान में आदिवासी जनजातियों की भी वंशावली लेखन की परम्परा रही है। वंशावली लेखन परम्परा ने ही लोगों को बोध कराया कि जो आज आदिवासी (जनजाति) है, उनके पुरखे कभी शासक थे। सथुर ग्राम के हजारी लाल जी के हस्तलिखित वंशावली ग्रन्थों में आलेखित है कि बून्दी राज्य की स्थापना मीणा शासक भूषा ने की थी। (कुछ इतिहासकार बून्दा मीणा को बून्दी का संस्थापक मानते हैं)। बाद में राव देवा ने छल–बल से मीणाओं को परास्त कर अपने हाड़ा साम्राज्य की नींव डाली।

वंशावली लेखन परम्परा लोक इतिहास को सहेजकर रखने की प्रणाली है, अतः इस पर शोध आवश्यक है। यद्यपि राजस्थान के इतिहासकारों ने समय–समय पर वंशावली लेखन परम्परा के ऐतिहासिक महत्व को स्वीकार किया है, परन्तु इस विषय को आधार बनाकर इतिहास लेखन की कोशिशें नगण्य हुई हैं। बड़वों और भाटों की पुस्तकें इतिहास के लिये बहुत उपयोगी हो सकती हैं।

– बाबूलाल भाट

के ननिहाल, दादी के पीहर, ससुराल व बेटे-बेटियों के विवरण सही रूप में मिलते हैं, जो पीढ़ी दर पीढी चलते हैं तथा दूसरे व्यक्तियों, परिवारों एवं समाजों से जुड़कर देश का निर्माण करते हैं ।

इसी परम्परा के कारण व्यक्ति का आकाश विस्तार पाता है। तभी वह अपने पुरखों के विस्तार की परम्परा से जुड़ता है। तभी जिन बातों को इतिहास भूल गया उन्हें लोगों ने अपने हृदय में बिठा लिया । इसी लोक ज्ञान के बल पर ईरान का शाह रजा मुहम्मद पहलवी अपने नाम से पहले आर्य मिहिर (आर्यों का सूर्य) का उपटंक लगाकर ही अपने नाम की पूर्णता समझता था । सद्दाम हुसैन ईराक का शाब्दिक अर्थ आर्य अर्क (आर्यों का सूर्य) से करता था तथा अपने पुत्रों के नाम उदय, गीगा आदि रखने की प्रेरणा लोक इतिहास से ही ग्रहण करता था।

पैंतालीस दिन रामलीला

इजरायल को भी लोक ने इसरायल (ईश्वरालय) ही स्वीकार कर रखा है । अफगान एयर सर्विस का नाम **एयर आर्याना** भी लोक परम्परा की पुष्टि करता है। सूर्यवंश, चंद्रवंश की लोक परम्परा को अपने झंडों में चांद, तारे एवं सूर्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने के पीछे भी यही वंशावली परम्परा की लोकाभिव्यक्ति है।

उधर इण्दोनेशिया, लाओस, कम्बोडिया, थाइलैण्ड आदि भी अपनी लोक परम्परा के कारण ही अपनी जड़ों से जुड़े हैं । इण्दोनेशिया में सुकर्ण, सुव्रत, सुशील, सुकर्ण पुत्री मेघावती से क्या आप अंदाज लगा सकते हैं कि इन नामों वाले लोग किस पंथ को

मानते होंगे ? ये सभी इस्लाम मतावलम्बी हैं पर अपनी जड़ों से नहीं कटे हैं । इसी कारण इण्दोनेशिया में ४५ दिन रामलीला मंचित होती है । रामलीला के पात्र मुस्लिम होते हैं, जबकि इस्लाम में नाटक वर्जित है । लाओस वाले अपने देश का नाम लव से जोड़ते हैं । थाइलैण्ड का शासक अपने नाम के साथ राम संबोधन जोड़ता है । सर्किलों पर धनुषबाण धारण किये राम की मूर्तियाँ चाहे जहाँ देखी जा सकती हैं । लोक परम्परा ने इन लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ रखा है । अन्यथा कबके ही ये ठूंठ हो जाते । जो अपनी जड़ों से कट गए हैं वे आज ठूंठ मात्र ही बन गए हैं ।

अफगान एयर सर्विस का नाम एयर आर्याना भी लोक परम्परा की पुष्टि करता है। सूर्यवंश, चंद्रवंश की लोक परम्परा को अपने झंडों में चांद, तारे एवं सूर्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने के पीछे भी यही वंशावली परम्परा की लोकाभिव्यक्ति है।

हर व्यक्ति नायक

इस प्रकार वंशावली लेखन की परम्परा को सशक्त बनाकर हम इतिहास की इन टूटी कड़ियों को जोड़ कर इतिहास का पुनर्निर्माण ही नहीं, इतिहास को पुनर्जीवित कर सकते हैं, क्योंकि इतिहास अपने आप को दोहराता है । वंशावली लेखक का ही यह माद्दा है कि वे अपने इस काम में कहीं ठहरते नहीं हैं । इससे लोक इतिहास का प्रवाह बना रहता है। वंशावली लेखन की यह सराहनीय उपलब्धि है। हमारे समाज में हर व्यक्ति को नायकत्व का दर्जा देने की देन वंशावली लेखन तथा विवाह संस्कार में देखने को मिलती है। वंशावली लेखन में हर स्त्री पुरुष नायक के रूप में चित्रित होता है। विवाह में भी हर स्त्री पुरुष जिसका विवाह हो रहा है जुलूस का नेतृत्व करता है। हर स्त्री पुरुष के विवाह का विवरण वंशावली लेखन ने ही संभव बनाया है। यह लोक इतिहास का नायाब नमूना है । इसे आज की जनगणना, जन्म-मृत्यु पंजीकरण, सर्वे आदि से जोड़ कर नया आयाम दिया जा सकता है । वंशावली लेखकों ने इतिहास को सामान्य जन से जोड़कर उसे सरस बना दिया है । लोगों के जीवन के आनन्द की धड़कनें इसी माध्यम से इतिहास का स्वरूप निर्धारित करती हैं । ❑

-प्राचार्य (से.नि.)१३४, गांधीनगर, **चूरू**

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

SKIPPER LIMITED

Manufacturer of Galvanised Steel & P V C Pipes, H.R. Coil/Strips, M S Angles, Swaged Type Steel Tubular, High Mast & Octagonal Poles, Scaffolding, Ground Based & Roof Top Telecom and Transmission Line Towers

OPERATOR

Horizontal Directional Drilling Machine for underground cable and pipe Lying Using Trench Less Techonology

REGISTERED OFFICE:
3A, Loundon Street, Kolkata-700 017
ph. 2289 2327/5731/32, Fax 2289 5733
mail@skipperlimited.com,www.skipperlimited.co.in

राष्ट्र निर्माण में देशज इतिहासकारों का योगदान

❑ जग जितेन्द्र सिंह 'विक्रम'

राष्ट्र का निर्माण भूमि, जन और संस्कृति के योग से होता है । हजारों हजार वर्षों तक किए गये त्याग और तपस्या के बल पर तथा अपने जीवन के उदाहरणों से राष्ट्र का निर्माण होता है । एक श्लोक दृष्टव्य हैः-

''एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्याम् सर्व मानवाः॥''

(अर्थात अपने पूर्वजों ने स्वयं के जीवन के उदाहरणों से ही पृथ्वी के मानवों को चरित्र की शिक्षा प्रदान की है ।)

राष्ट्र के निर्माण में केवल किसी जाति विशेष या स्थान विशेष का ही योगदान नहीं होता अपितु समाज के सभी वर्गों का योगदान होता है । समाज का प्रत्येक वर्ग एक सकारात्मक चिन्तन रखते हुए प्रयत्न करता है तथा उच्च चरित्र का जीवन जीता है तभी राष्ट्र रूपी भवन का निर्माण होता है । सबके सम्मिलित प्रयास से राष्ट्र भवन को भव्यता और विराटता प्राप्त होती है ।

हमारे राष्ट्र के निर्माण में देशज इतिहासकारों (वंशावली लेखकों) का बहुत बड़ा योगदान रहा है, परन्तु विदेशी इतिहासकारों ने इन्हें उपेक्षित रखा ।

सोचा समझा षड़यंत्र

देशज इतिहासकारों को उपेक्षित रखने के पीछे बहुत बड़ा षड़यन्त्र रहा होगा क्योंकि इनको साथ लेने पर विदेशियों द्वारा बुने गये षड़यन्त्र के ताने-बाने को खतरा था तथा इस देश के स्वाभिमान को दबाये रखना सम्भव नहीं था । विदेशियों द्वारा गढ़े गये मिथक जैसे आर्यों का बाहर से आगमन, भारत का राष्ट्र रूप में न होना आदि को सही नहीं ठहराया जा सकता था । अतः उन्होंने देशज इतिहासकारों को महत्व नहीं दिया ।

आज भी चिरन्तन काल से चला आ रहा एक बहुत बड़ा देशज इतिहासकारों का वर्ग है जिसके अन्तर्गत बड़वा, राव, चारण, भाट, कुल-गुरु , तीर्थ-पुरोहित, ब्रहम-भट्ट आदि आते हैं । यह वर्ग सनातन काल से अपने राष्ट्र की प्रत्येक जाति तथा व्यक्ति के इतिहास एवं वंशावली का लेखन कर रहा है । यह वंशावली लेखन की परम्परा हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा स्थापित की गयी है । हजारों वर्षों से यह वर्ग अपनी इस पुण्य परम्परा का निर्वहन करते हुए राष्ट्र निर्माण के पुनीत कार्य में संलग्न है ।

इतिहास गवाह है कि जब-जब भी अपनी मातृभूमि, अपनी संस्कृति और अपने धर्म पर संकट के बादल मण्डराये हैं, माँ भारती के लाडलों ने उन संकटों को छिन्न-भिन्न करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी । अपने-अपने कर्तव्य का पालन करते हुए इस मातृभूमि की आन-बान और शान को बनाये रखा ।

देशज इतिहासकारों के द्वारा मातृभूमि के प्रति निभाये गये कर्तव्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

(क) संस्कृति के संरक्षक एवं संवाहक के रूप में:-

पुराणों के रचनाकार महर्षि वेद व्यास ने वंशावली परम्परा का निर्वहन करते हुए पुराणों के प्रसिद्ध व्यक्तियों की वंशावली का लेखन किया है ।

महाभारत ग्रंथ एक लाख श्लोकों का इतिहास ग्रंथ है जो वंशावली लेखन की परम्परा तथा संस्कृति के ज्ञान का भण्डार है।

महाभारतकालीन संजय भाट ने महर्षि वेदव्यास से प्राप्त दिव्य दृष्टि के माध्यम से महाभारत के महासमर का वृतान्त सुनाया तथा धृतराष्ट्र के समक्ष सत्य को प्रकट किया । लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा ने राजा जनमेजय को उसका इतिहास सुना कर उसका कल्याण किया ।

पौराणिक काल से लेकर अब तक वंशावली लेखक एक साधक की तरह अपने यजमान के यहाँ जाकर विभिन्न कथाओं, कविताओं एवं ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करते हुए उनका संवहन भी करता है । एक पीढ़ी से दूसरी में वह इन मूल्यों को देता है तथा आने वाली पीढ़ियों को भी वंशावली लेखक संस्कारित करता चला आ रहा है ।

वंशावली लेखक चिरन्तन काल से घर-घर जाकर उनकी वंशावली एवं इतिहास के साथ-साथ धर्म एवं संस्कृति की शिक्षा समाज को देता है तथा अपने चरित्र, आचार एवं व्यवहार से उन्हें शिक्षित एवं संस्कारित करता है । इस कार्य को वह एकान्तिक निष्ठा से अपना धर्म समझते हुए करता है ।

वंशावली लेखक समाज के लोगों को उनके पूर्वजों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत कराता है तथा उनके श्रेष्ठ पूर्वजों का स्मरण कराकर उनके आत्मबोध को जाग्रत करता है । इससे व्यक्ति श्रेष्ठ मार्ग का चुनाव कर उस पर चलने को प्रवृत्त होता है । उसमें सद्गुणों का विकास होता है ।

देश, काल और परिस्थितियों की प्रतिकूलता में भी इन लेखकों ने वंशावलियों का संरक्षण कर समाज के इतिहास को संजोये रखा। संघर्ष के कालखण्ड में वंशावली लेखकों ने अनेक कष्ट उठाए परन्तु वंशावलियों के संरक्षण एवं सुरक्षा को महत्व देते हुए राष्ट्र रक्षा के यज्ञ में अपनी आहुतियाँ तक दी। एकान्तिक निष्ठा से वे इस कार्य को करते चले आ रहे हैं।

इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए ये देशज इतिहासकार घर-घर जाकर मान-अपमान का ख्याल न रखते हुए अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं । वंशावली लेखक के रूप में उदयपुर के महाराज राजसिंह (प्रथम) ने संस्कृति के संरक्षक एवं संवाहक कवियों, वंशावली लेखकों के सम्मान में लिखा है-

कहाँ राम कहाँ लक्ष्मण नाम रहिया रामायण ।
कहाँ कृष्ण बलदेव प्रगट भागवत पुरायण ।
वाल्मीकि सुक व्यास कथा कविता न करता ।
कौन सरूप सेवता ध्यान मन कवन धरंता ।
जुग अमर नाम चहो जको सुणो जीवन रा अखरां ।
राजसी कहै जग राण रा, पूजो पाँव कवेसरां ॥

(ख) धर्मरक्षक एवं योद्धा के रूप में:-

राष्ट्र के स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लड़े गये विभिन्न युद्धों में वंशावली लेखकों के योगदान को सदा याद किया जाता रहेगा । इसके कतिपय प्रसंग निम्नलिखित हैं-

१. पृथ्वीराज चौहान का सखा एवं योद्धा चन्दवरदाई जिसने अन्तिम समय तक चौहान का साथ दिया और अन्त में मुहम्मद गौरी का अपनी चतुराई से वध करवाया । कवि चन्द ने निम्न दोहे से पृथ्वीराज को शब्दभेदी बाण चलाने को प्रेरित किया-

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूकै चौहान।।

२. इतिहास प्रसिद्ध हल्दीघाटी के युद्ध में चारण 'जैसा' तथा 'कैसा' का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। उन्होंने वीरतापूर्वक युद्ध लड़ा । इन्हीं के साथ बड़वा बीट्ठलदास भी वीरगति को प्राप्त हुए, जिनका उल्लेख प्रसिद्ध इतिहासकार देवीसिंह

वंशावली लेखक चिरन्तन काल से घर-घर जाकर उनकी वंशावली एवं इतिहास के साथ-साथ धर्म एवं संस्कृति की शिक्षा समाज को देता है तथा अपने चरित्र, आचार एवं व्यवहार से उन्हें शिक्षित एवं संस्कारित करता है। इस कार्य को वह एकान्तिक निष्ठा से अपना धर्म समझते हुए करता है।

जी मण्डावा, डॉ. सज्जन सिंह जी राणावत आदि लेखकों ने अपनी पुस्तकों में शहीदों की सूची में किया है । इसी शहीदी के बदले में उनके पुत्र रतनदास को गांव कचनारिया (चन्देरिया के पास, जिला चित्तौड़गढ़) जागीर में मिला । आज भी वहाँ बीट्ठल सागर तालाब उनके नाम का साक्षी है ।

३. राणा अमर सिंह जी के समय लड़े गये विक्रमी १६७० के महिनाल के युद्ध में जो मुगल शहजादे खुर्रम की सेना से लड़ा गया था, बड़वा रतनदास और नाथूदास वीरगति को प्राप्त हुए । इसका उल्लेख डॉ. ईश्वर सिंह राणावत ने बान्सी के इतिहास में किया है । इसी शहीदी की साक्षी मेनाल प्रपात के पास हाइवे (राजमार्ग) पर खड़ी छतरी है । तदुपरान्त बड़वा जी को 'काका' पदवी से सम्मानित किया गया । आज भी बान्सी ठिकाणे के वंशज बड़वाजी को 'काका' से सम्बोधित करते हैं ।

नेपाल के महाराजा एवं महाराष्ट्र के शिवाजी महाराज के पूर्वज मेवाड़ से गये । इस तथ्य का प्रमाणीकरण वंशावलियों से किया जा चुका है । सिसोदिया वंश के वंशावली लेखकों ने इसके आधारभूत तथ्य उपलब्ध करवाये हैं । शिवाजी महाराज ने स्वयं हरिद्वार के तीर्थ पुरोहित से भी अपनी वंशावली का मिलान करवाया था । दोनों राजवंशों की वंशावलियाँ मेवाड़ के बड़वा परिवार ठिकाना टोकराँ में सुरक्षित हैं।

४. मेवाड़ महाराणा अरिसिंह (अड़सी) जी ने बड़वा अमर चंद को अपना प्रधान नियुक्त किया । बड़वा की सूझ-बूझ से उदयपुर पर महादजी सिंधिया द्वारा किया गया आक्रमण विफल हुआ ।

५. राठौड़ अखेराज सिंह ठिकाना मोकलसर (बाड़मेर) के साथ पृथ्वीपुरा के बड़वा (राव) बीड़दसिंह औरंगजेब के सेनापति परदल खाँ से युद्ध करते हुए गाँव कारणा में विक्रमी १७५३ में वीरगति को प्राप्त हुए । उनकी स्मृति में बीड़दसिंह की छतरी आज भी विद्यमान है ।

६. श्री कल्याण सिंह बड़वा निवासी-भारणी (जयपुर) ने सी.आर.पी.एफ. में सैनिक सेवा करते हुए श्रीनगर के लाल चौक में आतंकियों से जूझते हुए सन् १९९१ में वीरगति पाई, जो इस वर्ग के लिए गर्व का विषय है ।

(ग) साहित्यकार के रूप में :-

कवि चन्द- हिन्दी साहित्य की रचनाएँ **'रासो'** काव्य के अधिकांश लेखक इसी वर्ग के रहे हैं । इनमें प्रमुख ग्रन्थ **'पृथ्वीराज रासो'** के रचयिता चन्दवरदाई थे जो पृथ्वीराज चौहान के मित्र थे । चन्द वरदाई ने चौहान के कंधे से कंधा मिलाते हुए साथ दिया । जब पृथ्वीराज चौहान नव विवाहिता संयोगिता के मोह पाश में बंध गये तो कवि चन्द ने उन्हें राष्ट्र धर्म का पाठ पढ़ाते हुए निम्न दोहा लिख भेजा-

इत गौरी गरलाय, भोगत सम्भरी राय ।
उत गोरी गरलाय, भोगत राजश्री हूँतै ।।

कवि गंग- इनकी काव्य प्रतिभा के सभी कायल थे। इनकी सत्यनिष्ठा और बेबाक टिप्पणी के कारण अकबर ने उन्हें हाथी से कुचलवा दिया था । कवि गंग की रचनाएँ आज भी वंशावली लेखकों के मुख से उच्चारित होती रहती हैं ।

गूदड़ कवि- जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबार में आशु कवि गूदड़ थे । इनकी काव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर महाराजा ने इन्हें दस हजार रेख का गाँव कुचीपला, सोना ताजिम तथा राव की उपाधि प्रदान की ।

कवि राव- महाराणा फतहसिंह जी तथा बाद में महाराणा भूपाल सिंह जी के समकालीन दरबारी कवि दलपत सिंह ठिकाना टोकराँ (मेवाड़) की आशु काव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर महाराणा भूपाल सिंह नें उन्हें स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की तथा बागोर की हवेली रहने हेतु प्रदान की। साथ ही 'कवि राव' का सम्मान प्रदान किया। कवि दलपत ने उन्हें एक ही सवैये में महाराणा उदयसिंह से लेकर महाराणा भूपाल तक की वंशावली सुनाकर आश्चर्यचकित किया था । कवि की लिखी 'गोकल पच्चीसी' नीति की प्रसिद्ध काव्य रचना है ।

बड़वा सतकेश- कवि सकतेश (शक्ति सिंह जी) बड़वा, ठिकाना रतोप (ढुंढाड़) डिग्गी राजश्री ठा. भीमसिंह के दरबारी कवि एवं सलाहकार थे । कवि सकतेश ने ''औंकार निरूपण'' (काव्य ग्रंथ) की रचना कर प्रसिद्धि प्राप्त की।

जोर जी बड़वा- कहानीकार जोर जी बड़वा ठि. टोकराँ (मेवाड़) अपने कहानी कथन के लिए प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध साहित्यकार लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत ने अपने बचपन की स्मृति का वर्णन करते हुए अपनी पुस्तक 'मांझल रात' में लिखा है कि जोर जी बड़वा ने उन्हें बहुत प्रभावित किया, क्योंकि जोर जी ने उन्हें बचपन में कई कहानियाँ सुनायी थीं । उन्हीं की प्रेरणा से वह कहानीकार बनीं ।

देवीदान बड़वा- बड़वा देवीदान की ख्यात प्रसिद्ध है जिसके सम्पादक देवीलाल पालीवाल हैं । इसका राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर से प्रकाशन हुआ है । इनकी ख्यात मेवाड़ के इतिहास लेखन का आधार स्तम्भ है । इससे पूर्व भी ज्ञानाजी आदि बड़वाओं ने महाराणाओं की वंशावलियाँ प्रस्तुत की थी । बड़वा देवीदान के वंशज टोकराँ गाँव में निवास करते हुए आज भी सिसोदिया वंश की वंशावली लेखन के कार्य में संलग्न हैं ।

(घ) संत एवं समाज सुधारक के रूप में–

वंशावली लेखक समाज में प्रत्येक काल-खण्ड में संत एवं समाज सुधारक जन्म लेते रहे हैं, जिन्होंने वंशावली लेखन के साथ-साथ देश और समाज में सुधार के प्रयत्न किये। इनमें प्रमुख व्यक्तित्व निम्नलिखित हैंः-

१. संत नरहरिदास– ये गृहस्थ संत थे। ये वानप्रस्थ आश्रम में काशी जाकर रहने लगे थे। इन्होंने ही राम बोला (तुलसीदास) का पालन पोषण किया। इन्हीं तुलसीदास ने आगे चलकर रामचरितमानस की रचना की। संत नरहरिदास जी के वंशज आसलपुर में निवास करते हैं।

२. महाकवि सूरदास– इनका जन्म 'ब्रह्म भट्ट' परिवार में हुआ था। इन्होंने कृष्ण भक्ति करते हुए अनेक पदों की रचना की। इनके पद आज भी जन-जन के कण्ठों का हार हैं। इनकी रचनाएँ- सूर सारावली, साहित्य लहरी, सूर सागर आदि प्रसिद्ध हैं।

३. सन्त कुम्भनदास– इनकी गिनती अष्ट छाप के कवियों में होती है। इनका जन्म वंशावली लेखन परिवार में ही हुआ था। इन्होंने अकबर को फतहपुर सीकरी में फटकार लगाते हुए कहा-

संतन को सीकरी सो का काम।
आवत जात पन्हैया टूटै बिसरी गयो हरिनाम।

४. भंवर भगत– ये फेफ सिंह डोबर के पुत्र थे। इनका जन्म ढ़ाणी बड़वान, तह. फतेहपुर, जिला सीकर में हुआ था। ८ वर्ष की अवस्था में गोगा जी की भक्ति करने लगे थे। नाग के डसने से इनका देवलोक गमन हुआ। इनकी समाधि पर प्रतिवर्ष भादवा सुदी तेरस को मेला भरता है जिसमें सभी पंथ एवं मजहब के मानने वाले लोग आते हैं। कायमखानी समाज की उसमें बहुत अधिक श्रद्धा है।

५. दाता शिवसिंह जी– आप वर्तमान में गाँव बेमाली, जिला भीलवाड़ा में निवास करते हैं। आपने दाता भगवान (श्री गिरधारी सिंह जी नांदसा) से दीक्षा ग्रहण की है तथा गृहस्थाश्रम में रहते हुए, भगवद् भक्ति का संकल्प लिया है। आपके भीलवाड़ा जिले में हजारों अनुयायी हैं, जो आपको गुरु के समान मानते हैं तथा आपके प्रति अनन्य श्रद्धा रखते हैं।

राष्ट्रीय एकता के संस्थापक के रूप में–

देशज इतिहासकारों द्वारा लिखी गयी वंशावलियाँ राष्ट्रीय एकता की साधक हैं, क्योंकि इनसे हमें यह ज्ञात होता है कि हमारे पुरखे (पूर्वज) एक ही थे। जब हम वंश वृक्ष देखते हैं तो ज्ञात होता है कि सभी एक परम पिता की सन्तान हैं। कर्म एवं जन्म के आधार पर बाद में जाति व्यवस्था का निर्माण हुआ। आज भी एक ही गोत्र विभिन्न जातियों में मिलती हैं। उसके पीछे कारण यह है कि संघर्ष के काल-खण्ड में अपना अस्तित्व बचाने के लिए जो काम मिला वही करने लगे और वह काम पीढ़ी-दर-पीढ़ी करते रहने से उसी जाति के होकर रह गये। वंशावलियों से विभिन्न जाति के विभिन्न गोत्र प्रवर का ज्ञान होता है। साथ ही अपने पूर्वजों का ज्ञान होता है कि हमारे पूर्वज कहाँ से आये कहाँ-कहाँ रहे, वर्तमान में हमारे रक्त संबंध किन-किन से हैं।

नेपाल के महाराजा एवं महाराष्ट्र के शिवाजी महाराज के पूर्वज मेवाड़ से गये। इस तथ्य का प्रमाणीकरण वंशावलियों से किया जा चुका है। सिसोदिया वंश के वंशावली लेखकों ने इसके आधारभूत तथ्य उपलब्ध करवाये हैं। शिवाजी महाराज ने स्वयं हरिद्वार के तीर्थ पुरोहित से भी अपनी वंशावली का मिलान करवाया था। दोनों राजवंशों की वंशावलियाँ मेवाड़ के बड़वा परिवार ठिकाना टोकराँ में सुरक्षित हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं, कि 'हम सभी श्रेष्ठ महापुरुषों के वंशज हैं', यह जानकर हमें गर्व का अनुभव होता है। अपने पूर्वजों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का ज्ञान वंशावलियों के माध्यम से होता है। इस जानकारी का पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानान्तरण करने का कार्य करके वंशावली लेखक राष्ट्र की बहुत ही बड़ी सेवा कर रहे हैं। देशज इतिहासकारों (वंशावली लेखकों) ने चिरकाल से राष्ट्र के स्वाभिमान को जिन्दा रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारी संस्कृति का संरक्षण करने में इनका योगदान स्तुत्य है। आवश्यकता इस बात की है कि वंशावलियों को शोध का आधार बनाया जाए तथा उनके संरक्षण एवं संवर्द्धन को महत्व देकर राष्ट्र का सही इतिहास लिखा जाये। ❑

९-एफ-२२, तिलक नगर, भीलवाड़ा

Sushil Bagaria

RAJKUMAR BROTHERS

HARDWARE MERCHANTS COMMISION AGENT & ORDER SUPPLIERS

Stockist of-

M.S.wire Rod / Tore, Tata H.B. Wires, G.I. Barbed, Wire & Angealed wires, Wire Mesh, Wire Netting, Wire Nails, K.K. Nails, Panel Pins, tarfelt, Bolt Nuts & Rivets. Plastic Paper, Hand Pump, Welding Electrodes, Agrico Tools Etc.

167, Netaji Subhas Road (Rajkatra) Kolkata 700 007
Shop-2258-0040/41-7439201340,32918533 Fax. 2258-0014
Mob. 9339919389,9830057254

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Mr. Kishan Jhawar
(Dist. President BJP Northwest Kolkata)

Mrs. Sunita Jhawar
(Councillor K.M.C.)

180, M.G. Road, 4th Floor Kolkata 700 007
☎ (O) 2272 6361 (M)9830050425

वंशावली साहित्य की विधायें

❑ डॉ. देव कोठारी

अब तक जो वंशावली साहित्य उपलब्ध हुआ है, उसको समझने और पहचानने की दृष्टि से उसका वर्गीकरण कर समझना अधिक उपयुक्त रहता है । इस दृष्टि से इसका वर्गीकरण निम्नानुसार किया जा सकता है ।

(अ) विषय की दृष्टि से वंशावली साहित्य :-

(i) शासकीय (ii) जातीय(iii) धार्मिक

(आ) साहित्यिक स्वरूप की दृष्टि से वंशावली साहित्य :-

(क) अभिलेखीय- (i) प्रशस्ति (ii) शिलालेख

(ख) हस्तलिखित- (i) पोथी (ii) बही (iii) गुटका (iv) खरड़ा (v) पत्रक

(इ) रूप-परम्परा की दृष्टि से वंशावली साहित्य :-

(i) वंशावली (ii) ख्यात (iii) वात (iv) विगत (v) पीढी- पीढ़ियावली (vi) वंशवृक्ष (vii) पाटनामा (viii) गुर्वावली (ix) पट्टावली (x) हाल-हकीकत (xi) याददाश्त (xii) साख (xiii) नाम

(अ) विषय की दृष्टि से वंशावली साहित्य :- वंशावलियों में जो विवरण उपलब्ध होता है, विषय की दृष्टि से वह विवरण तीन तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है यथा :-

(i) शासकीय :- इस प्रकार के शासकीय वर्गीकरण में वे वंशावलियां सम्मिलित की जाती हैं जो शासक वर्ग अर्थात् राजा - महाराजा एवं सामन्त वर्ग से सम्बन्धित हैं और इन वंशावलियों में विशुद्ध रूप से इन्हीं शासकों-सामन्तों के परिवारों की वंशावलियों का उल्लेख होता है तथा अग्नि से उत्पन्न सभी वंशों की वंशावलियां भी इनमें सम्मिलित की जाती हैं ।

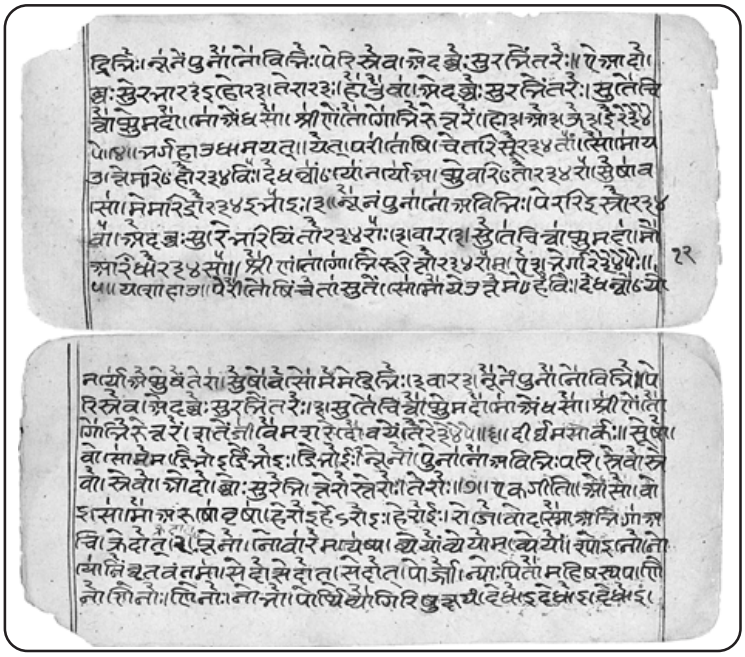

(ii) जातीय :- जातीय वर्गीकरण में वे वंशावलियां सम्मिलित की जाती हैं जो क्षत्रिय शासकों के अलावा जातियों जैसे ब्राह्मण, वैश्य एवं शुद्र आदि की हैं। इन सभी जातियों की अपनी-अपनी वंशावलियां होती हैं। वे सभी इस वर्गीकरण के अन्तर्गत शामिल की जाती हैं।

(iii) धार्मिक :- इस वर्गीकरण के अन्तर्गत वे वंशावलियां आती हैं जिनमें विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों के आचार्यों व उनके उत्तराधिकारियों एवं शिष्यों की नामावली और उनका विवरण प्रस्तुत किया जाता है । राजस्थान में इस प्रकार के धार्मिक सन्त सम्प्रदाय हैं - नाथ सम्प्रदाय, जांभोजी, जसनाथी, रामस्नेही, दादूपंथी, निरंजनी, लालदासी, अलखिया, गूदड़ तथा जैन मत में दिगम्बर व श्वेताम्बर सम्प्रदाय ।

(आ) साहित्यिक स्वरूप की दृष्टि से वंशावली साहित्यः-

इस वंशावली साहित्य में वे वंशावलियां आती हैं, जिनका साहित्यिक स्वरूप (क) अभिलेखीय व (ख) हस्तलिखित रूप में उपलब्ध होता है, यथा :-

(क) अभिलेखीय :- इस वर्गीकरण में पत्थर पर उत्कीर्ण वंशावलियां आती हैं ,जैसे :-

(i) शिलालेख :- पत्थर पर खुदे हुए शिलालेखों में भी वंशावलियों का उल्लेख पाया जाता है । शिलालेख आकार से छोटे होते हैं, इस कारण वंशावलियां इनमें विस्तार से नहीं दी जाती। ये शिलालेख स्थानीय भाषा व संस्कृत, प्राकृत व पाली भाषा में उत्कीर्ण होते हैं। राजस्थानी भाषा में शिलालेख बहुतायत से मिलते हैं ।

(ii) प्रशस्तियाँ :- ये भी पत्थर पर उत्कीर्ण होती हैं, किन्तु आकार में अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं । ये प्रायः संस्कृत भाषा में पाई जाती हैं। कुंभलगढ प्रशस्ति एवं राजप्रशस्ति ऐसी ही प्रशस्तियां हैं, जिनमें मेवाड़ राजवंश की वंशावली पाई जाती है।

(ख) हस्तलिखित :- कागज पर जो वंशावलियां लिखी जाती हैं, वे हस्तलिखित वंशावलियां होती हैं, लेकिन इन

कागजों को पोथी, बही, गुटका, खरड़ा (Scroll) आदि स्वरूपों में ग्रन्थित कर सुरक्षित किया जाता है ।

(i) पोथी :– हस्तलिखित कागजों को बीच में सिलाई कर पुस्तकाकार स्वरूप में बांध दिया जाता है, वह पोथी कहलाती है। इसका आकार निश्चित नहीं होता है । इसमें वंशावली लिपिबद्ध की हुई पाई जाती है ।

(ii) बही :– यह पोथी से भिन्न स्वरूप वाली होती हैं । इसकी लम्बाई ज्यादा होती है, वंशावली लिखने में इसकी लम्बाई से सुविधा रहती है ।

(iii) गुटका :– यह पोथी सदृश होता है किन्तु आकार में पोथी से बहुत छोटा होता है ।

(iv) खरड़ाः– खरड़ा को अंग्रेजी में (Scroll) कहते हैं । यह गोल आकार के रोल सदृश होता है । इस खरड़ा के कागज की चौड़ाई छः इंच से १२-१५ इंच तक होती है, लेकिन लम्बाई की सीमा तय नहीं होती है। इस लम्बे कागज को गोल-गोल जन्मपत्री की तरह लपेट दिया जाता है, यही खरड़ा कहलाता है । इन खरड़ों में अधिकतर जैन यति-महात्माओं द्वारा संग्रहीत वंशावलियां मिलती हैं ।

(v) पत्रक :– ये खुले और स्वतंत्र पत्र होते हैं। इनका आकार निश्चित नहीं होता। इन खुले पत्रों पर दोनों ओर हाशिया छोड़कर लिखा जाता है। जैन धर्म की गुर्वावली व पट्टावली ऐसे ही खुले पत्रक में मिलती हैं, जिनमें जैनाचार्यों व उनके शिष्यों के नामों को क्रमानुसार देते हुए उनके कार्यों का उल्लेख किया जाता है ।

(इ) रूप–परम्परा की दृष्टि से वंशावली साहित्य :–

हस्तलिखित स्वरूप में जो वंशावली साहित्य पोथी, गुटका, बही, खरड़ा आदि में विशेष रूप से उपलब्ध होता है, वह साहित्यिक रूप से काफी समृद्ध है । ये साहित्यिक रूप अपने आप में विशिष्ट शैली में लिखे होते हैं और उसी अनुसार उनका नामकरण व पहचान भी होती है । राजस्थानी भाषा में उपलब्ध इस रूप-परम्परा के कारण इस वंशावली साहित्य की विशेष ख्याति भी है और समृद्धता इसकी अपनी विशेषता है । इस विशिष्ट रूप-परम्परा से युक्त साहित्य का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार से है :-

(i) वंशावली :– वंशावली शीर्षक से उपलब्ध इन वंशावलियों में किसी व्यक्ति, परिवार, कुटुम्ब आदि के पूर्व पुरुषों के नामों का क्रमानुसार पंक्ति से वर्णन होता है ताकि सम्बन्धित वंश की सम्पूर्ण जानकारी एक साथ प्राप्त हो सके । कालान्तर में इन वंशावलियों का अर्थ वंशानुकीर्तन, वंशानुचरितम् भी किया जाने लगा । राजपरिवार की वंशावली को 'राजावली' या किसी जाति विशेष की वंशावली को 'वंश मुक्तावली' या वंश-वृक्ष अथवा 'वंश गुण-कीर्तन' भी कहा जाता है । इस प्रकार की वंशावलियां बहुतायत से मिलती हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ वंशावलियों के नामों का यहां पर उल्लेख किया जा रहा है :-

- *राठौड़ वंश गुणवर्णन*
- *वंशावली उदयपुर री*
- *वंशावली खींची सरकार री*
- *वंशावली राघोगढ़ री*
- *राजावली राणाजी री*
- *वंशावली सिरोही रै देवड़ा चौहाण री*
- *वंशावली सोलंकिया री*
- *वंशावली हाड़ा री*
- *वंशावली मारवाड़ री*
- *झाला री वंसावली*

- *महाजन वंश मुक्तावली (प्रकाशित)*
- *राजावली*
- *वंशावली कछवाहों की*
- *राठौड़ा री वंशावली*
- *वंशावली राणा री*
- *वंशावली रिणमलजी रै बेटा री*
- *वंशावली सिसोदिया री*
- *यदुवंश वंशावली*
- *वंशावली आमेर री*
- *बीकानेर रै राजावां री वंसावली*
- *धार परमार गोत्र वंसावली (प्रकाशित)*
- *अणहिलवाड़पत्तन राजावली*

(ii) ख्यात :– वंशावली लेखन 'रूप' की दृष्टि से यह रूप विशिष्ट है । यह 'ख्यात' शब्द संस्कृत के ख्याति

शब्द का तद्भव रूप है । इन ख्यातों में सामान्यतया प्रसिद्ध राजवंशों और राजाओं का वंशानुक्रम तथा राज्यानुक्रम से कालक्रमानुसार वर्णन रहता है। इन ख्यातों से मध्ययुगीन सामन्ती जीवन, जन-जीवन तथा सामाजिक इतिहास की पर्याप्त जानकारी भी उपलब्ध होती है। एक तरह से ये ख्यातें वंशावलियों का विकसित रूप होती हैं। तत्कालीन इतिहास व संस्कृति की दृष्टि से इनका बहुत महत्व है। ये ख्यातें चार प्रकार की होती हैं - इतिहासपरक, वारतापरक, व्यक्तिपरक एवं स्फुट । इनका लेखक एक व्यक्ति या उसके वंशज होते हैं । धर्म व जाति परक ख्यातें भी पाई जाती हैं। कुछ ख्यातों का नामोल्लेख इस प्रकार है -

- *ख्यात वात संग्रह*
- *मुहणोत नैणसी री ख्यात (प्रकाशित)*
- *दयालदास री ख्यात (प्रकाशित)*
- *बांकीदास री ख्यात (प्रकाशित)*
- *तेरापंथ री ख्यात (प्रकाशित)*
- *मुंदियाड़ री ख्यात*
- *बूंलिया परिवार री ख्यात*
- *गोगुन्दा री ख्यात (प्रकाशित)*
- *कछवाहा री ख्यात*
- *मारवाड़ री ख्यात (प्रकाशित)*

(iii) वात :- राजस्थानी साहित्य में 'वात' शब्द कहानी का पर्याय होता है । वातें पौराणिक, ऐतिहासिक, मनोरंजनात्मक, पशु-पक्षी सम्बन्धी कई तरह की हो सकती हैं । लेकिन ऐतिहासिक वातों में सम्बन्धित व्यक्ति या वंश के पूर्व पुरुषों का उल्लेख भी मिलता है एवं उनके महत्वपूर्ण व प्रभावी कार्यों का वर्णन भी उनमें पाया जाता है । इस प्रकार ये वातें वंश विशेष के उल्लेखनीय कार्यों का समर्थन करती हुई तत्कालीन ऐतिहासिक व सांस्कृतिक जानकारी के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण व उपयोगी होती हैं। कुछ वातों का यहां उल्लेख किया जा रहा है ।

- *वात मेड़तिया री*
- *राजा करणीसिंघजी रै कंवरा री वात*
- *तुंवरा री वात*
- *वात मेवाड़ रा धणियां री*
- *कछवाहां री वात*

(iv) विगत :-'विगत' शब्द का अर्थ है विवरण । इस रूप-परम्परा में विगतकाल (बीते हुए समय) की घटनाओं का नामों के साथ विगतवार वर्णन इनमें मिलता है । इनमें तत्कालीन नामों की सूची-टिप्पणियों के साथ पाई जाती है । साथ ही इनमें उस समय के गांवों, गढ़, कुओं, बाग-बगीचे, मंदिर, वंश तथा क्षेत्रीय विवरण भी पाया जाता है। ये तत्कालीन तथ्यात्मक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विवरण की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण हैं। ये विगत ग्रंथ वंशावलियों के पूरक ग्रंथ के रूप में काफी उपयोगी हैं। कुछ का नामोल्लेख इस प्रकार है :-

- *राठौड़ा री खांपा री विगत*
- *ओसवालां रै जातां री विगत*
- *रिड़मल रै वंशजां री विगत*
- *वीदावतां री विगत*
- *महाराज तखतसिंह रै कंवरां री विगत*
- *मारवाड़ रै परगनां री विगत*
- *दिल्ली राजा बैठा तिंया री विगत*
- *कूंपावत राठौड़ा री विगत*
- *राठौड़ा रै खांपा री विगत*
- *चारणां रै सांसण री विगत*
- *जोधपुर रै देवस्थान री विगत*

(v) पीढ़ी-पीढियावली :- ''पीढ़ी' या 'पीढ़ियावली' इन दोनों रूपों में वंश-परम्परा उपलब्ध होती है । प्रारंभ से व्यक्तियों के क्रम में नाम इनमें संग्रहीत होते हैं । आगे चलकर नामों के साथ उनके महत्वपूर्ण कार्यों और उनके जीवन-काल से सम्बन्ध रखने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का भी इनमें उल्लेख किया जाने लगा । राजवंशों के अलावा सेठ-साहूकारों, सामन्तों आदि की पीढ़ी या पीढ़ियावलियां उपलब्ध होती हैं । वंशावली का ही यह अन्य रूप है । कुछ नाम इस प्रकार हैं :-

- *महाराणा री पीढ़ियावली*
- *बीकानेर रै अमरावां री पीढ़ियां*
- *कांधलौता री पीढ़ियां*
- *ओसवालां री पीढियां*

- *बीकानेर नै जोधपुर रै राठौड़ां राजावां री पीढ़ियां*
- *चहुवाण सिसोदिया वगैरे राजपूतां री पीढ़ियां*
- *वागड़िया चहुवाणां री पीढ़ी*
- *ओसवालां री पीढ़ियावली*
- *भाटियां री पीढ़ियां*
- *राठौड़ां री पीढ़ियां*
- *मारवाड़ रा राठौड़ सरदारां री खांप री पीढ़ियां*

(vi) वंशवृक्ष :– इस रूप-परम्परा में वंशावली का प्रारम्भ वृक्ष के मूल अर्थात् जड़ से होता है । मूल या जड़ में मूल पुरुष का नाम आता है । फिर वृक्ष जिस तरह तना, टहनियां व पत्तों के रूप में विकसित होता है, उसी तरह वंश-वृक्ष में भी वंश का क्रम नीचे से ऊपर की ओर बढ़ता है, उदाहरणार्थ :-

तपागच्छ श्रमणवंशवृक्ष (प्रकाशित)

(vii) पाटनामा :– पाटनामा का अर्थ है पाट पर बैठने वालों की नामावली । यहां पाट का अर्थ गद्दी या सिंहासन से है । ये पाटनामा राजपरिवार से जुड़े हुए ही मिलते हैं । इनमें एक राजा के पाट पर उसके दिवंगत होने के बाद उसका उत्तराधिकारी बैठता है। इस क्रम में क्रमशः उनमें नाम होते है । नामों के साथ उनके विशिष्ट कार्यों, घटनाओं आदि का भी वर्णन होता है । मेवाड़ राजपरिवार से सम्बन्धित 'उदयपुर पाटनामा' प्रसिद्ध है । यह अब प्रकाशित हो चुका है ।

(viii) गुर्वावली :– यह श्वेताम्बर जैन-परम्परा से सम्बन्धित रचना है। इसमें जैन गुरुओं का, उनके उत्तराधिकारी के क्रम से विवरण मिलता है । प्रथम गुरु (या आचार्य) कौन थे तथा उनके बाद उनके उत्तराधिकारी कौन हुए ? उन उत्तराधिकारी गुरुओं का, उनके शिष्यों का, मंदिर बनाने, प्रतिष्ठा कराने आदि का विवरण पाया जाता है । ऐसी गुर्वावलियों के कुछ नाम इस प्रकार हैं ।

- *वृद्ध गुर्वावली*
- *खरतरगच्छ गुर्वावली (प्रकाशित)*
- *गुरु परम्परा गुर्वावली*
- *गुर्वावली सटीक*

(ix) पट्टावली :– यह भी श्वेताम्बर जैन-परम्परा से सम्बन्धित रचना है । यह पट्टावली, उपर्युक्त गुर्वावली के समान ही है । केवल नाम का अन्तर है । इसमें भी जैन गुरुओं-आचार्यों की क्रमशः पट्ट-परम्परा अथवा गुरु परम्परा का उल्लेख होता है । गुरु के पट्ट पर आसीन होने वाले उत्तराधिकारी के नाम के साथ उनके विशिष्ट कार्यों का विवरण भी इनमें पाया जाता है । कतिपय नाम इस प्रकार हैं :-

- *तपागच्छ पट्टावली (प्रकाशित)*
- *नागौरी लुंका री श्री पुजा री पट्टावली*
- *जैसलमेर री पट्टावली*
- *वेगड़गच्छ पट्टावली*

(x) हाल-हकीकत :– वंशावली लेखन की इस रूप-परम्परा में तत्कालीन महापुरुष से सम्बन्धित विशिष्ट घटनाओं का विस्तार से हाल या हकीकत के रूप में वर्णन होता है । ये हाल या हकीकत दोनों नामों से मिलती हैं । वंश के इतिहास की दृष्टि से यह काफी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है, कुछ नाम इस प्रकार हैं :-

- *चित्तोड़, अजमेर, जोधपुर आदि री ऐतिहासिक हकीकत*
- *हाडां री हकीकत*
- *सांखला दहियां सूं जांगलू लियो तैरों हाल*
- *घाटी राह री हकीकत*
- *मेड़ता री हकीकत*
- *पातसाह औरंगजेब री हकीकत*

(xi) याददाश्त :– यह रूप-परम्परा उपरोक्त हाल-हकीकत की तरह की रचना है, केवल नाम में अन्तर है । ये 'याद' एवं 'याददाश्त' दोनों रूपों में मिलती है । इस तरह की रचनाओं के कुछ नाम इस प्रकार से हैं :-

- *याददाश्त वंशावली जादौ करोली की*
- *याददाश्त हिन्दुस्तान*
- *दिल्ली रै धणियां री याद*
- *याददाश्त बनेड़ा ठिकाना री*
- *जोधपुर रै राजावां री राणियां नै कुंवरां री याद*
- *राव जोधा रै वेढ़ां री याद*

(xii) साख :– इस रूप परम्परा में किसी राजकुल या गोत्र अथवा जाति विशेष का विस्तार कैसे हुआ, एक शाखा दूसरी प्रशाखा में कैसे बढ़ी, उसका विवरण इसमें होता है । ये वंशावलियों के फैलाव को समझने के लिये महत्वपूर्ण हैं, कुछ नाम इस प्रकार हैं :-

- *साखां री विगत*
- *राजकुल री साखां*

(xiii) नाम :– वंशावलियों का एक रूप 'नाम' या 'नामा' संज्ञक रचनाओं के रूप में भी मिलता है। ऐसी रचनाएं विशेषकर राजपरिवार से सम्बन्धित होती हैं और उनमें राजपरिवार के कुंवरों, कुंवरियों, रानियों आदि का कालक्रम से उल्लेख मिलता है ।

यथा :-
- *राठौड़ राजावां रै कंवरा नै सतियां रा नाम*
- *बीकानेर रै राजावां रै सतियां रा नाम*
- *बीकानेर रै राजावां रै कंवरा रा नाम*

ऐसी रचनाओं में 'नामा' संज्ञक रचनाएं मुगल इतिहास से सम्बन्धित मिलती हैं । इनमें सम्बन्धित व्यक्ति विशेष का इतिवृत प्रशंसात्मक होता है । जैसे - हुमायूंनामा, अकबरनामा, जहांगीरनामा, औरंगजेबनामा आदि ।

वंशावली लेखन की उपर्युक्त रूप-परम्परा के वैविध्य की दृष्टि से वंशावली साहित्य के इस विवरण से यह पता चलता है कि यह साहित्य हमारे देश में प्रभूत परिणाम में विद्यमान है । इस साहित्य को संग्रहीत करने वाले संग्रहालय भी हैं। ❑

त्र्यम्बकेश्वर के तीर्थ पुरोहित

❑ राजेश सुरेश दीक्षित

हिन्दुओं के लिये भारत देश मातृभूमि कर्मभूमि तो है ही और भी महत्वपूर्ण धर्मभूमि भी है। बद्रीनाथ-केदारनाथ, रामेश्वर, द्वारका और जगन्नाथपुरी ये चार धाम, भगवान शिवजी के बारह ज्योतिर्लिंग, भगवती देवी माता के बावन शक्तिपीठ और अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी, द्वारावती ये मोक्षदायक स्थान हिन्दूधर्मीय भाविकों की दृष्टि से पुण्यपावन धाम माने जाते हैं। उन्हें तीर्थ क्षेत्र कहा जाता है।

हर हिन्दू व्यक्ति अपने परिवार के साथ इन पवित्र स्थानों की यात्रा करता है । उसे तीर्थ यात्रा कहते हैं । हिन्दू धर्म श्रुति (वेद), स्मृति और पुराणग्रंथों को पवित्र मानकर उनके आदेश का सम्मान करने वाला धर्म है । हिन्दू धार्मिक भाविकों के लिये तीर्थयात्रा करना मोक्ष का सुलभ मार्ग पुराण ग्रंथों ने बताया है , इसलिये प्राचीन समय से हिन्दू तीर्थयात्रा करते हैं।

तीर्थ क्षेत्रों में हिन्दू ब्राह्मण जाति के लोग सभी हिन्दू धर्मीय तीर्थ यात्रियों से वहाँ तीर्थ का पूजन, देवताओं का पूजन, स्नान, और अन्य धार्मिक अनुष्ठान करवाते हैं । तीर्थ यात्रियों के भोजन तथा निवास की व्यवस्था करते हैं । उसके बदले यात्री भी उनका सम्मान करके दान-दक्षिणा अर्पण करते हैं। यह हिन्दुओं की धार्मिक व्यवस्था पूरे भारत में देखने को मिलती है। तीर्थ क्षेत्रों में यात्रियों की मदद करने वाले ब्राह्मणों को तीर्थ पुरोहित कहा जाता है।

तीर्थ क्षेत्र की अनुपम व्यवस्था

गुजराती लोग तीर्थ पुरोहित को 'गोर' कहते हैं। उत्तर भारतीय 'पण्डा' (पण्डित का लघुरूप) और दक्षिण भारतीय लोग 'कुलगुरु' कहते हैं। महाराष्ट्र के लोग तीर्थ पुरोहित को 'उपाध्याय' कहते हैं । भारत की विविध भाषाओं में तीर्थ पुरोहित के लिये अलग-अलग शब्द देखने को मिलते हैं । तीर्थ पुरोहित यात्रियों को 'यजमान' कहते हैं । प्रादेशिक भिन्नता के आधार पर, जातियों की भिन्नता के आधार पर अलग-अलग प्रांत के । विशिष्ट जातियों की व्यवस्था करने का कार्य विशिष्ट तीर्थ पुरोहित परिवार करता है । उस तीर्थ पुरोहित परिवार के पास उस प्रांत की विशिष्ट जातियों के हिन्दू परिवारों का खानदानी इतिहास गोत्र और वंशनाम के आधार पर संचयित किया जाता है।

तीर्थ पुरोहित अपने यजमान की भाषा बोलते हैं । यजमान की संस्कृति आचार-विचार पूजा पद्धति से परिचित रहते हैं । तथा खाने-पीने की पद्धति और व्यंजनों को जानते हैं तीर्थ पुरोहित और

'' गुजरात के लोग तीर्थ पुरोहित को 'गोर' कहते हैं, उत्तर भारतीय 'पण्डा' और दक्षिण भारतीय 'कुलगुरु' कहते हैं तथा महाराष्ट्रीय तीर्थ पुरोहित को उपाध्याय कहते हैं''

यजमान दोनों परिवार एक दूसरे को मदद करते हैं।

हर हिन्दू अपना नाम, पिता का नाम, वंश का नाम एकत्रित करके अपनी पहचान देता है। इसके अलावा अपने परिवार का गोत्र और पूर्वजों का मूल स्थान (गाँव) ये भी हिन्दू व्यक्ति को मालूम होता है। भाषा, प्रांत और जाति ये भी हिन्दू व्यक्तियों की पहचान के साधन होते हैं । इन सभी पहचान चिन्हों का उपयोग तीर्थ पुरोहित अपने यजमानों की पहचान करने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

जैसे वो यात्री का पहले नाम पूछेंगे । नाम पता चलने पर उनको यात्री के प्रांत और जाति के बारे में अंदाजा आता है । फिर वो विशिष्ट प्रांत और जाति के लोगों का पुरोहित यात्रियों को अपने घर ले जाकर गोत्र, जाति, गाँव, वंशनाम इनके आधार पर नामावली निकाल के पुराने रिकार्ड दिखाता है । उनमें अगर यात्री के पूर्वजों का नाम निकलता है, तो वो कब आये थे, उन्होंने तीर्थ यात्राओं के दौरान क्या-क्या धार्मिक अनुष्ठान किये थे, ऐसी जानकारी पूर्वजों के हस्ताक्षर में यात्री को प्राप्त होती है । वो संतुष्ट होकर तीर्थ क्षेत्र के उस विशिष्ट ब्राह्मण परिवार को अपना तीर्थ पुरोहित मानता है तथा उसके द्वारा धार्मिक अनुष्ठान सपन्न करके यात्रा के दौरान भोजन निवास आदि सुविधाओं का सशुल्क लाभ लेता है । अपने घर से दूर उस तीर्थ क्षेत्र में उसको घर मिलता है और पुरोहित परिवार को उसकी सेवा करके रोजी-रोटी प्राप्त होती है।

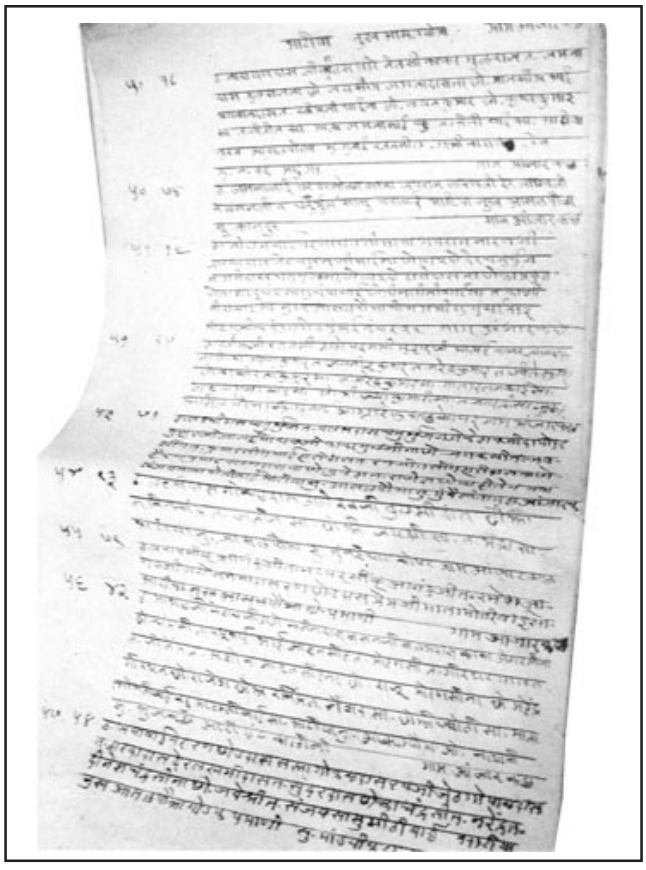

यही पूरे भारतवर्ष में हिन्दू तीर्थ क्षेत्र में हिन्दू यात्रियों की व्यवस्था पद्धति है।

श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर

हिन्दुस्थान में भगवान शिवजी के बारह ज्योतिर्लिंग स्थान विख्यात हैं। उन बारह स्थानों में एक महाराष्ट्र के नासिक जिले में त्र्यंबकेश्वर क्षेत्र शामिल है । प्राचीन समय से हिन्दू तीर्थयात्री इस पवित्र नगरी की यात्रा करने आते हैं । यहाँ पर ब्रह्मगिरि पर्वत से गंगा गोदावरी का उद्भव हुआ है । महर्षि गौतम मुनि द्वारा 'न्याय' शास्त्र की रचना इसी स्थान पर सपन्न हुई थी। दक्षिण भारत में कुंभपर्व का यह एकमात्र स्थान माना जाता है।

हिन्दू धर्मीय यात्री यहाँ पर यात्रा करने आते हैं तब वो अपने तीर्थ पुरोहित के घर में निवास करके उस पुरोहित द्वारा त्र्यंबकेश्वर पूजन, गंगा पूजन तथा अन्य धार्मिक विधि सपन्न करते हैं। यहाँ पर तीन सौ से अधिक तीर्थ पुरोहित अभी भी वास्तव्य करते हैं । हिन्दुस्थान के अलग-अलग प्रदेश के विविध जाति वाले भाविकों लिये विशिष्ट तीर्थ पुरोहित कार्य करते हैं। जिस तीर्थ पुरोहित के पास उस हिन्दू यात्री के पुरखों का नाम मिलता है, यात्री उस तीर्थ पुरोहित को अपना कुलगुरु मानकर उनका सम्मान करता है तथा उनके घर निवास करके उनके द्वारा धार्मिक विधि संपन्न करवाता है।

तीर्थ पुरोहित अपने रिकार्ड में यात्री के हस्ताक्षर से उनका वंश वर्णन लिख देता है और पुराने रिकार्ड बुक में उनके नाम मिलते हैं । प्राचीन समय से चलता आया यह सिलसिला आज आम हिन्दू के कौटुम्बिक इतिहास को जानने का विश्वसनीय स्रोत है। भारतीय न्यायपालिका द्वारा कई बार कौटुम्बिक विवादों में निर्णय देने के लिए सबूत के स्वरूप में इस स्रोत को मान्यता मिली है।

लगभग तीन सौ साल तक के रिकार्ड बुक आज भी अच्छी अवस्था में पाये जाते हैं । उससे पुराने समय के रिकार्ड बुक भी देखने को मिलते हैं लेकिन उनकी अवस्था ठीक नहीं है यातायात के साधन अब अच्छे हो गये हैं अतः यात्रा करना सुरक्षित और सुविधाजनक हुआ है। तीर्थ क्षेत्र में यात्रियों की भीड़ होने लगी है इसलिए रिकार्ड बुक चलाना कठिन और खर्चे वाला कार्य होने लगा है। इस कारण से ये परम्परा नष्ट होने की कगार पर है ।

प्राचीन परम्परा

श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर में हिन्दू तीर्थ यात्रियों के वंश वर्णन जतन करने की परम्परा यहाँ के तीर्थ पुरोहितों के द्वारा सपन्न की जाती है । उसकी एक विशिष्ट पद्धति देखने को मिलती है।

त्र्यंबकेश्वर में भारत के भिन्न प्रदेश में वास्तव्य करने वाले विविध जातियों के हिन्दू यात्रियों के लिए अलग-अलग तीर्थ पुरोहितों की रचना है। अपने पास कौनसे प्रदेश के कौनसे जाति के वंश वर्णन हैं, ये तीर्थ पुरोहित जानते हैं। जब आप त्र्यंबकेश्वर में प्रवेश करते हैं तब आपको अपना मूल प्रदेश, गाँव तथा जाति और वंशनाम पूछा जाता है। उसके आधार से एक तीर्थ पुरोहित जिसके पास आपका वंश वर्णन मिलने की संभावना है वे आपको रिकार्ड बुक दिखाता है। आपके वंश के नाम देखकर आप उस पुरोहित की सेवाओं का लाभ लेते हैं। बाद में आप के हस्ताक्षर से आपका रिकार्ड भी उसमें सम्मिलित किया जाता है।

रिकार्ड बुक की चोपड़ियाँ दो प्रकार की देखने को मिलती हैं। एक चोपड़ी को 'नामावली' कहते हैं और दूसरी प्रकार की चोपड़ी को 'बही' कहते हैं। नामावली का आकार बड़ा होता है। यह चोपड़ी तीर्थ पुरोहितों द्वारा लिखी जाती है। इसमें वंशनाम, जाति, गाँव के आधार से नाम जतन किये जाते हैं और नये मिलाये जाते हैं। नामावली का आधारभूत वंशनाम, जाति, गाँव से वंशनाम और गाँव की रचना शब्दकोश की तरह देवनागरी अक्षरलिपि वर्णमाला को आधारभूत मान कर की जाती है। इसके अलावा नामावली में हर नामों के पहले बही क्रमांक और पन्ने का क्रमांक देखने को मिलता है। बही में यात्री अपने हस्ताक्षर से अपने वंश का वर्णन लिखता है। त्र्यंबक यात्रा की तिथि, साथ आने वाले साथियों के नाम लिखकर अपना हस्ताक्षर लिखता है। तीर्थ पुरोहित का नाम लिखकर उसके प्रति श्रद्धा प्रकट करता है।

बही का क्रमांक और पन्ने का क्रमांक लिखकर पुरोहित उनके वंशवर्णन के पन्ने पर नामावली में नये नाम लिखकर वंश वर्णन को आगे बढ़ाता है।

इंडेक्स बही

छोटी चौपड़ी को 'बही' कहते हैं। उसके ऊपर बही क्रमांक लिखा जाता है। बड़ी चोपड़ी को 'नामावली' कहते हैं। उसके ऊपर क्रमांक नहीं होता। वो नामावली प्रदेश-जाति के नाम से पहचानी जाती है।

बही में तीर्थ यात्री अपने हस्ताक्षर से अपना वंश वर्णन लिखते हैं। नामावली में जहाँ उनका पहला इतिहास तीर्थ पुरोहित ने लिखा है उसी पन्ने पर नये नाम बही क्रमांक और पन्ना क्रमांक के साथ सम्मिलित किया जाता है।

जैसे-जैसे रिकार्ड बढ़ते गये वैसे- वैसे दोनों चोपड़ियों की संख्या बढ़ने लगी। फिर ब्रिटिशकाल में तीर्थ पुरोहितों द्वारा एक विशिष्ट क्रमांक की बही में नामावली चोपड़ी की अनुक्रमणिका बनाई गयी। उस बही को 'इंडेक्स बही' कहते हैं।

'इंडेक्स बही' में कौन सी नामावली में उस प्रदेश के कितने गाँव और कितनी जाति के लोगों का वंशवर्णन आता है। ये देखने को मिलता है।

इतिहास का दर्पण

हिन्दू तीर्थक्षेत्रीय रिकार्ड बुक (नामावली) परम्परा से हमें क्या प्राप्त हो सकता है?

१. हर हिन्दू खानदान को अपनी परम्परा, संस्कृति, मूल निवास विस्तार, कुलधर्म, कुलाचार, गोत्र और पूर्वजों के नाम प्राप्त करने का नामावली सबसे विश्वसनीय स्रोत है।

२. भाषा शास्त्रविद इस परम्परा के अध्ययन से भारतीय भाषाओं का विकास क्रम समझ सकता है।

३. मानववंश शास्त्र के अध्ययनकर्ताओं का ये सम्पूर्ण अध्ययन का विषय है।

४. इतिहास के अध्ययनर्ताओं को अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का सुराग इसमें प्राप्त हो सकता है।

५. सामाजिक शास्त्रों के अध्ययनकर्ताओं को इससे लाभ हो सकता है।

६. धर्मान्तरित हिन्दुओं को अपनी जड़ों का परिचय देकर उनकी हिन्दुओं के प्रति घृणा कम की जा सकती है। धार्मिक उन्माद और अलगाववाद को कम करके इस देश में धार्मिक सहयोग की भावना को बढ़ावा मिल सकता है।

७. यह परम्परा हिन्दुस्थान के इतिहास का दर्पण है। इसका अध्ययन होना चाहिए। इस परम्परा को संरक्षण तथा प्रोत्साहन देना चाहिए।

-मु.पो. त्र्यंबकेश्वर, जि. नासिक (महा.)

हिन्दुस्तान के अलग-अलग प्रदेश के विविध जाति वाले भाविकों के लिये विशिष्ठ तीर्थ पुरोहित कार्य करते हैं। जिस तीर्थ पुरोहित के पास उस हिन्दू यात्री के पुरखों का नाम मिलता है, यात्री उस तीर्थ पुरोहित को अपना कुलगुरु मानकर उनका सम्मान करता है तथा उनके घर निवास करके उनके द्वारा धार्मिक विधि संपन्न करवाता है।

सूर्या

सूर्या ट्यूब को सर्वश्रेष्ठ 5 स्टार प्राप्त हैं

15 साल* तक चले

आँखो के लिए खूब आरामदेय

UPTO 85% बचत

साल में 600 रू० की बिजली की बचत

* Compare to GLS bulb

कंज्यूमर ल्यूमिनेयर्स

वर्षों का नाता, मजबूती का वादा

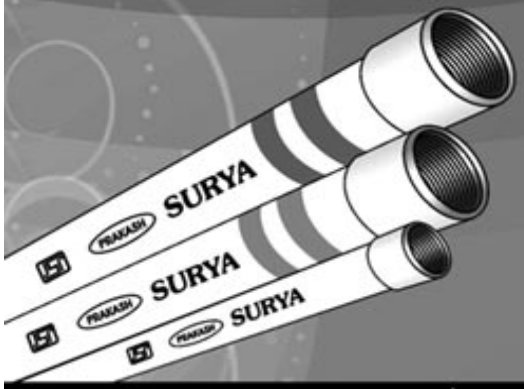

प्रकाश

सूर्या

स्टील ट्यूब्स एवं पाईप्स

Email : consumercare@sroshni.com
Website : www.suryaroshnilighting.com

आकर्षक जमा योजनाएं समृद्धि लाएं।

उत्तर भारत का अग्रणी मल्टीस्टेट नागरिक सहकारी बैंक
1972 से आपकी सेवा में

सुनहरे भविष्य की सुनहरी शुरूआत !

हमारे साथ

आदर्श को-ऑपरेटिव बैंक लि.

मल्टीस्टेट बैंक

प्रधान कार्यालय : तीन बत्ती, पोस्ट बॉक्स नं. 32, सिरोही (राजस्थान)
दूरभाष नं. (02972) 221265 (चार लाईनें) फैक्स : 221213

आंचलिक कार्यालय : आश्रम रोड़, उस्मानपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)
दूरभाष नं. (079) 27561712 फैक्स : 27561713

E-mail : info@acbl.in

शाखाएं

राजस्थान

जयपुर – मोती डूंगरी सर्कल (0141) 6532747, 2615274, चौड़ा रास्ता (0141) 2310091, संसारचन्द्र रोड़ (0141) 2360085, **अजमेर** (0145) 2630650, **ब्यावर** (01462) 251218, **किशनगढ़** (0146) 3245668, **उदयपुर** – सूरजपोल (0294) 2424108, 2420927, हिरण मगरी (0294) 2463724, **फतहनगर** (02955) 221393, पाली (02932) 228136, 228137, **सुमेरपुर** (02933) 252317, **फालना** (02938) 235115, **जालोर** (02973) 222839, **भीनमाल** (02969) 222770, **सांचौर** (02979) 284389, **सिरोही**– सदर बाजार (02972) 221264, 222369, तीन बत्ती (02972) 224296, **शिवगंज** (02976) 271125, **आबूरोड** (02974) 222227, 221609, **माउण्ट आबू** (02974) 238992, **पिण्डवाडा** (02971) 282715, **रेवदर** (02975) 283110, **सरूपगंज** (02971) 242034, **कालन्द्री** (02972) 264373, **पोसालिया** (02976) 267473, **जावाल** (02972) 260281, **मण्डार** (02975) 285538, **कैलाशनगर** (02976) 265059, **रोहिडा** (02971) 245747, **अनादरा** (02975) 244342

गुजरात

अहमदाबाद (079) 22122891, **सूरत** (0261) 3258580, 2345919, **पालनपुर** (02742) 259478 **ड़ीसा** – पुरानी सब्जी मण्डी (02744) 329743, एस.एस. मार्केट (02744) 221085, गायत्री मंदिर रोड (02744) 220745, राजपुर रोड (02744) 221054, **भीलडी** (02744) 329740, **धानेरा** (02748) 222315, **सुरेन्द्रनगर** – मुनी थोबान मार्ग (02752) 237326–27, वधवान (02752) 243994, जोरावर नगर (02752) 237329, जौनतान रोड़ (02752) 237328, **थानगढ** (02751) 220744, **हलवद** (02758) 260234, **लिम्बड़ी** (02753) 262354

॥ ॐ ॥

सुसंस्कार ! सुशिक्षा !! सुस्वास्थ्य !!!

उच्च मा. आदर्श विद्या मन्दिर

सांवली मार्ग, सीकर-332001 (राज.) Ph. 01572-270501, 9799490644

उच्च माध्यमिक, सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम

(भारतीय शिक्षा प्रसार समिति सीकर द्वारा संचालित सह-शैक्षिक आवासीय विद्यालय)

सीकर जिले में राज्य स्तरीय मैरिट वाला एकमात्र संस्थान (वाणिज्य वर्ग)

पीयूष अग्रवाल 94%

सीनियर सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा (वाणिज्य वर्ग)-2011

राज्य स्तरीय मैरिट में 8th स्थान

मंगेश मित्तल 90.77% राज्य स्तरीय मैरिट 25 स्थान

सुमित अग्रवाल 90.77% राज्य स्तरीय मैरिट 25 स्थान

देवांशु गुप्ता 90.15% राज्य स्तरीय मैरिट 29 स्थान

सीनियर सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा (विज्ञान वर्ग)-2011 के टॉपर्स

पुनीत अग्रवाल

श्योजीराम नागर

सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा-2008 बोर्ड मैरिट में चौथा स्थान

अमन भाटी

आदित्य शर्मा

विशाल सिंह

सत्यप्रकाश पारीक

92.00%

जयेश माथुर

बोर्ड परीक्षा-2011 का शानदार व उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम

छात्रावास सुविधा | कुशल समर्पित शिक्षक टीम | English Spoken

वाहन सुविधा | एन.सी.सी सुविधा | विस्तृत खेल मैदान

राजस्थान की सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा-2011 में सर्वाधिक 15 मैरिट देने वाला शैक्षिक समूह

सीनियर सैकण्डरी कक्षाओं के साथ CPT, Engineering, Medical हेतु नियमित कोचिंग

प्रवेश आवेदन पत्र एवं विवरणिका प्राप्त करने के लिए प्रात: 8.00 से 3.00 बजे के मध्य विद्यालय में सम्पर्क करें।

प्रवेश प्रारम्भ

High Class Multicolour Printing on
Latest High speed Brand New
Heidelberg 4-colour
with online coating

We Specialise in Multi-Colour Printing & Designing of

MAGAZINES, BROCHURES, NEWSLETTERS, ANNUAL REPORTS, SOUVENIRS, POSTERS, CONFERENCE MATERIAL ETC.

KUMAR & COMPANY

A-10, 22 Godown Industrial Area, Jaipur
Phone : 2210171, 2212773
email :kumar.companyjpr@gmail.com
kumarandcompany@aol.in

संघ शिक्षा वर्गों के समापन के चित्र

तृतीय वर्ष नागपुर

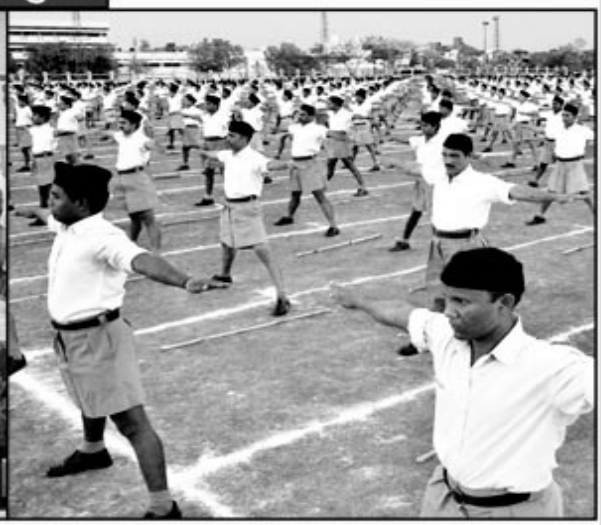

द्वितीय वर्ष सीकर

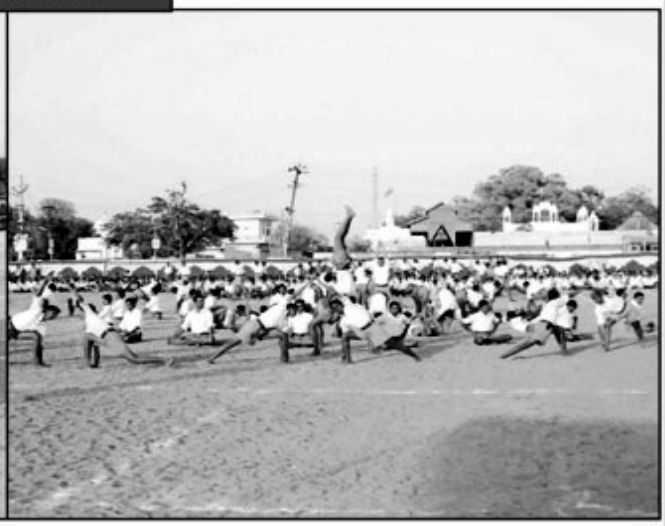

प्रथम वर्ष

हिण्डौन

बाड़मेर

देशभर में संघ शिक्षा वर्ग सम्पन्न

समाज परिवर्तन से ही भ्रष्टाचार समाप्त होगा– भागवत जी

''भ्रष्टाचार देश की विकट समस्या है। समाज परिवर्तन से ही भ्रष्टाचार समाप्त होगा। संघ समाज परिवर्तन का ही कार्य कर रहा है। संघ को इस बात से कोई लेना-देना नहीं कि सत्ता में कौन है और कौन होना चाहिए।'' ये उद्‌गार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन राव भागवत ने गत ६ जून को नागपुर में व्यक्त किये। तृतीय वर्ष संघ शिक्षा वर्ग के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार की दमनकारी कार्रवाई से भ्रष्टाचार समाप्त करने के प्रति उसकी गंभीरता एवं ईमानदारी पर संदेह होता है। इस अवसर पर कामकोटि पीठ के जगद्‌गुरु शंकराचार्य पूज्य जयेन्द्र सरस्वती विशेष रूप से उपस्थित थे। विश्व हिन्दू परिषद के उपाध्यक्ष गंगराजू कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

नागपुर में गत ९ मई से ७ जून तक लगे तृतीय वर्ष के संघ शिक्षा वर्ग में ७३८ स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। ये स्वयंसेवक देश के विभिन्न भागों से आये थे। इनमें ६ प्रशिक्षणार्थी ४ नेपाल एवं २ इंग्लैण्ड से आये। संघ दृष्टि से उत्तर पश्चिम क्षेत्र (राजस्थान) से ५८ स्वयंसेवक तृतीय वर्ष में दीक्षित होकर आये हैं। तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण वर्ग प्रतिवर्ष नागपुर में ही लगता है, जिसमें देश भर के चुने हुए स्वयंसेवक भेजे जाते हैं।

राजस्थान क्षेत्र के संघ शिक्षा वर्ग

द्वितीय वर्ष के वर्ग क्षेत्रीय आधार पर लगते हैं। प्रथम वर्ष के वर्ग प्रान्तों के अनुसार लगते हैं। इन संघ शिक्षा वर्गों में ४० वर्ष तक की आयु के स्वयंसेवक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। ४० वर्ष से अधिक आयु वाले स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण के लिए समय-समय पर विशेष वर्ग लगाये जाते हैं।

द्वितीय वर्ष

संघ दृष्टि से राजस्थान को तीन प्रान्तों जयपुर, जोधपुर एवं चित्तौड़ में बांटा गया है। इन तीनों प्रान्तों का द्वितीय वर्ष का संघ शिक्षा वर्ग इस बार सीकर में २९ मई से १७ जून तक लगा। सीकर के रामलीला मैदान में १७ जून को वर्ग का समापन समारोह हुआ । इस अवसर पर सरसंघचालक भागवत जी ने स्वयंसेवकों एवं उपस्थितजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार मिटे और कालाधन देश में आये यह भारत की जनता की मांग है। सरसंघचालक जी का कहना था कि जो लोग देश की जनता की आवाज को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं उनके आन्दोलन को कुछ लोग राजनैतिक रूप देकर खत्म करने की कोशिशें कर रहे हैं। अब तो स्थिति यह हो गई है कि रक्षक ही भक्षक हो गये हैं। वैदिक आश्रम पिपराली के सुमेधानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुये समापन समारोह में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। सुमेधानन्द जी ने लोगों को अपनी सोच बदल कर राष्ट्रहित का ध्यान रखने की सलाह दी।

प्रथम वर्ष

जयपुर प्रान्त का प्रथम वर्ष संघ शिक्षा वर्ग हिण्डौन में २९ मई से १७ जून तक लगा। इस वर्ग के समापन समारोह में अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख सुहासराव ने भारत की शिक्षा पद्धति से जीवन मूल्यों में आ रहे ह्रास पर चिंता व्यक्त की और कहा कि पढ़े-लिखे लोग अधिक भ्रष्ट हो रहे हैं।

जोधपुर प्रान्त का वर्ग बाड़मेर में, जबकि चित्तौड़ प्रान्त के दो वर्ग कोटा व डूँगरपुर में २२ मई से १२ जून तक लगे। बाड़मेर में वर्ग के समापन समारोह में क्षेत्र प्रचारक दुर्गादास मुख्य वक्ता थे। जसनाथ आश्रम के महंत मोटनाथ की अध्यक्षता में समापन समारोह हुआ। कोटा में क्षेत्रीय संपर्क प्रमुख राजेन्द्र कुमार एवं डूँगरपुर में सदानन्द सप्रे ने वर्गों के समापन समारोहों को सम्बोधित किया। हिण्डौन में ३३६, बाड़मेर में ४४७, कोटा में ३१० एवं डूँगरपुर में २५९ स्वयंसेवकों ने प्रथम वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। ❑

तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण वर्ग ३० दिन का होता है। जबकि द्वितीय वर्ष एवं प्रथम वर्ष का शिक्षा वर्ग २०–२० दिन के होते हैं। इन वर्गों में भीषण गर्मी के उपरान्त भी स्वयंसेवक अपने खर्चे पर सम्मिलित होते हैं तथा वर्ग में रहकर प्रातः चार बजे जागरण से रात्रि १० बजे तक लगातार शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। इस प्रकार प्रशिक्षणार्थी संगठन शास्त्र का पाठ ग्रहण करते हैं और प्रतिवर्ष श्रेष्ठ कार्यकर्ता तैयार होते हैं।

बदरी–केदार के अनोखे इतिहासकार

❑ मनोज रावत

बात उन दिनों की है जब केंद्रीय पर्यटन मंत्री जगमोहन थे। एक बार वे पर्यटन और रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए बनी चार धाम सर्किट योजना की समीक्षा करने बदरीनाथ पहुंचे । वहां उन्हें बताया गया कि कुछ पंडे उनसे मिलना चाहते हैं। ये पंडे जानना चाहते थे कि जगमोहन का पैतृक स्थान कहाँ है । मगर जगमोहन ने उनमें खास दिलचस्पी नहीं दिखाई और कह दिया कि उनका घर दिल्ली है । मगर पंडों ने आग्रह किया कि वे पाकिस्तान स्थित अपने मूल क्षेत्र का नाम बताएं। झिझकते हुए जब जगमोहन ने प्रांत और जिले का नाम बताया तो पंडों की भीड़ छंट गई। सिर्फ एक दुबला-पतला युवक ही वहाँ खड़ा रहा जिसका कहना था कि उस जिले का पंडा वह है। बाद में जब उस युवा पंडे ने जगमोहन को उनके पैतृक गांव के लोगों के बारे में भी बताना शुरु किया तो वे हैरान रह गए। इसके बाद उन्होंने भी खुद पंडे की बही में अपनी बदरीनाथ यात्रा का विवरण दर्ज किया।

यह एक छोटा-सा उदाहरण है जो बदरीनाथ और केदारनाथ जैसे महत्वपूर्ण तीर्थों की यात्रा में यहां के तीर्थपुरोहितों यानी पंडों की भूमिका और उनके योगदान के बारे में बताता है। मीडिया और तकनीक के इस युग में आज हर तरह की जानकारी और सुविधा सुलभ है , लेकिन एक दौर ऐसा भी था जब स्थितियां इसके उलट थीं। जानकारी और सुविधाएं नहीं के बराबर थीं और बदरी-केदार की यात्रा इतनी दुष्कर और खतरों से भरी होती थी कि जाने वाले अक्सर कहते थे कि क्या पता अब मिलना हो, न हो। इतने कठिन समय में भी अगर लोग इस यात्रा पर जाने का साहस जुटा लेते थे तो इसमें उनकी श्रद्धा के साथ बदरी-केदार के तीर्थ-पुरोहितों यानी पंडों का भी अहम योगदान था । आज भी ऐसे यात्रियों की संख्या बहुत है जिन्हें दूसरी किसी भी व्यवस्था की तुलना में अपने पंडों पर ज्यादा भरोसा है।

बदरी-केदार के कपाट छह महीने ही यात्रा के लिए खुलते हैं। सर्दियों में विकट भौगोलिक परिस्थितियों और पौराणिक मान्यताओं के कारण इन्हें बंद रखा जाता है । सड़क मार्ग न होने के कारण मोक्ष धाम बदरीनाथ (ऊंचाई ३,१३३ मीटर) और द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ (३,६८० मीटर) तक पहुंचना पहले बहुत टेढ़ी खीर हुआ करता था। चीन के हमले के बाद, वर्ष १९६५ में बदरीनाथ तक सड़क मार्ग पहुंचाना सरकार की मजबूरी हो गई । हालांकि केदारनाथ मंदिर तक पहुंचने के लिए आज भी गौरीकुंड से १४ किलोमीटर पैदल चढ़ाई चढ़कर जाना पड़ता है। यात्रा की मुश्किलों और सुविधाओं के अभाव के कारण उन दिनों यात्री भी कम संख्या में जाते थे। प्रसिद्ध घुम्मकड़ राहुल सांकृत्यायन १७ मई १९५१ को बदरीनाथ पहुंचे थे। यहां उन्होंने तीन दिन प्रवास किया। अपने यात्रा विवरण में वे लिखते हैं, *''मंदिर के आसपास के कुछ मकानों को छोड़कर बदरीपुरी में कच्चे मकान ही हैं. इन्हीं झोपड़ियों में छह महीने के यात्रा काल में आने वाले कुछ हजार यात्री ठहरते हैं।''*

प्राचीन काल की चट्टी व्यवस्था

श्री बदरीनाथ पंडा पंचायत के अध्यक्ष मुकेश भट्ट 'प्रयागवाल' बताते हैं, *''सौ साल पहले तो परिस्थितियां और भी दुष्कर थीं। ऋषिकेश से आगे कहीं भी सड़क मार्ग नहीं थे।''* जानकार बताते हैं कि उस समय पैदल यात्रा चट्टी व्यवस्था के भरोसे चलती थी। चट्टी यानी वह जगह जहां पर आस-पास के गांवों के लोग यात्रियों को राशन और चौका-बर्तन उपलब्ध कराते थे। हर ५ मील पर कम से कम एक चट्टी होती थी । ऋषिकेश से लेकर बदरीनाथ तक की यात्रा में ४६ चट्टियां पड़ती थीं । तब यात्रा पर भी ज्यादातर बुजुर्ग लोग ही जाते थे। प्रयागवाल बताते हैं, *''उस कठिन समय में भी तीर्थ-पुरोहितों ने हिमालय के इन दुर्गम तीर्थों की यात्रा करने के लिए श्रद्धालुओं को तैयार किया।''*

श्री केदार पंडा पंचायत के तीर्थपुरोहित श्रीनिवास पोस्ती तथा प्रयागवाल का दावा है कि उत्तराखंड में तीर्थपुरोहित परंपरा आदिगुरु शंकराचार्य की बदरी-केदार यात्रा के समय से ही शुरु हो गई थी। पोस्ती बताते हैं कि केदारखंड में भी बदरीकाश्रम निवासी धर्मदत्त नामक ब्राह्मण के अवंति नगर जाकर चंद्रगुप्त नामक

वैश्य को यात्रा पर आने के लिए प्रेरित करने का वर्णन है। बदरी-केदार के पंडों की बहियों में लगभग दो सौ साल पुराने यजमानों के यात्रा विवरण उपलब्ध हैं। पोस्ती कहते हैं, *''पहले यात्री बदरीनाथ तथा केदारनाथ की यात्रा पर बहुत कम संख्या में आते थे इसलिए उनकी जानकारी मौखिक रूप से ही रहती थी। बाद में जब संख्या बढ़ने लगी और शिक्षा का प्रसार होने लगा तो यात्रियों के नाम बहियों में दर्ज किए जाने लगे।''* आज यहां आने वाले लोग जब अपने पुरखों द्वारा अंकित साक्ष्यों को देखते हैं तो उन्हें हैरानी के साथ-साथ गौरव का भी अनुभव होता है। इस तरह यहां आने वाला व्यक्ति स्वयं ही इस परंपरा से जुड़ जाता है।

इतने कठिन समय में भी अगर लोग इस यात्रा पर जाने का साहस जुटा लेते थे तो उसमें उनकी श्रद्धा के साथ बदरी-केदार के तीर्थ पुरोहितों यानी पंडों का भी अहम योगदान था।

बदरीनाथ पंडा पंचायत के महासचिव रहे मुकेश अल्खानियां अपने यजमान रायबहादुर कस्तूर चंद समीर चंद डागर के अभिलेखों को दिखाते हुए कहते हैं, *'' दो सौ साल पहले इसी परिवार ने बदरीनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था तथा तप्त कुंड से लेकर मंदिर तक की सीढियां भी बनवाई थीं।''* बदरी-केदार के पंडों के पास राजा-महाराजाओं की दी सनदें और ताम्र पत्र भी मिलते हैं।

कपाट बंद होने पर

बदरी-केदार के कपाट बंद होने के बाद भी पंडों का यजमानों से संपर्क नहीं टूटता। श्रीनिवास पोस्ती बताते हैं, ''सर्दियों में ये तीर्थपुरोहित देश भर में अपनी-अपनी यजमानी के क्षेत्रों में जाते हैं। भौगोलिक रूप से दुष्कर तीर्थों में हुई सेवा-सत्कार से कृतज्ञ यजमान अपने घरों में इन तीर्थपुरोहितों का दिल खोलकर स्वागत करते हैं। तीर्थपुरोहितों के अपने यजमानों के साथ आत्मीय पारिवारिक संबंध होते हैं, इसलिए तीर्थपुरोहित अपने रिश्तेदारों से अधिक अपने यजमानों के सुख-दुख में सम्मिलित होते हैं। शीतकाल की इन यात्राओं से पंडों और यजमानों के पुराने संबंधों में एक नया पहलू तो जुड़ता ही है, उस क्षेत्र के अन्य श्रद्धालुओं को भी बदरी-केदार यात्रा पर आने का संबल और प्रेरणा मिलती है। तीर्थपुरोहितों का मानना है कि सदियों से अनवरत चली आ रही इस परंपरा का ही परिणाम है कि पहले सैंकड़ों की संख्या में आने वाले यात्रियों की संख्या समय बीतने के साथ लाखों में पहुंच गई है।

बदरीनाथ

तिब्बत सीमा के पास चमोली जिले में स्थित बदरीनाथ धाम में उत्तराखंड और नेपाल के पंडे चमोली जिले के डिमरी जाति के हैं । बाकी सारे भारत के तीर्थपुरोहित बदरीनाथ से लगभग २५० किमी नीचे देवप्रयाग कस्बे के आसपास स्थित टिहरी और पौड़ी जिले के २०-२५ गांवों के निवासी हैं। केदारनाथ (रुद्रप्रयाग जिला) के पंडे जाड़ों में मंदिर के कपाट बंद होने पर वहां से ६०-७० किमी नीचे आकर ऊखीमठ और गुप्तकाशी के पास के गांवों में रहते हैं ।

सभी यजमान समान

बदरी तथा केदार दोनों तीर्थों के पुरोहितों के तीर्थ कृत्य भी अलग-अलग हैं। बदरीनाथ के पंडे तप्त कुंड व पंच शिला पूजन कराकर जाते समय यात्रियों को सुफल आशीर्वाद देते हैं तो केदारनाथ के तीर्थपुरोहित यात्रियों के पूर्वजों के पिंड भरते हैं, मंदिर के भीतर संकल्प पूजा कराते हैं और सावन के महीने यात्रियों द्वारा संकल्पित ब्रह्म कमल के पुष्पों को केदारनाथ मंदिर के शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। पिछले साल राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल बदरीनाथ यात्रा पर गई थीं। उनके तीर्थ पुरोहित प्रकाश नारायण बाबुलकर 'शास्त्री' बताते हैं , *''महामहिम ने सभी धार्मिक कार्य श्रद्धापूर्वक संपन्न कराए।''*

प्रतिष्ठित यात्रियों का आना भले ही सम्मानजनक हो परंतु बदरी-केदार के ये तीर्थ पुरोहित अपने सभी यजमानों को समभाव से देखते हैं। पोस्ती बताते हैं, *''होटल और धर्मशालाओं का किराया देने में असमर्थ गरीब यात्रियों को तीर्थपुरोहित अपने घरों में ठहराते हैं। यात्रियों को वापस जाते समय सुफल(यात्रा आशीर्वाद) देते हुए उनसे यह भी पूछा जाता है कि उनके पास वापस जाने के लिए धन है या नहीं । यात्रियों के पास धनाभाव होने पर पंडे उन्हें वापस जाने का खर्चा भी देते हैं । बाद में जब इन गरीब किसानों के घरों में धन-धान्य होता है तो ये श्रद्धालु तीर्थपुरोहितों से लिए गए इस धन को वापस कर देते हैं। यात्री को पहचाने बिना भी सारा लेन-देन पीढ़ियों से चले आ रहे आपसी विश्वास पर चलता है।''*

इस बारे में एक घटना उल्लेखनीय है। बदरीनाथ के पास ७

साल पहले एक बस दुर्घटना हुई थी। बस में सवार यात्री पूर्वी उत्तर प्रदेश के थे जिनकी आर्थिक हालत बहुत अच्छी नहीं थी। इन गरीब यात्रियों को सबसे पहले मिलने उनका पंडा ही आया। पंडे को देखते ही यात्रियों में जान आ गई। हालांकि पंडे की भी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी इसलिए उसने उधार लेकर ३०,००० रुपए का बंदोबस्त किया और पहले बदरीनाथ अस्पताल में भर्ती घायलों को रजाइयां भेजीं। इसके बाद वह बदरीनाथ से सबसे नजदीक स्थित कस्बे जोशीमठ पहुंचा जहां कुछ और घायल भर्ती थे। फिर वह पंडा एक और कस्बे गोपेश्वर पहुंचा जहां गंभीर रूप से घायल यात्री भर्ती थे और जहां दुर्घटना में मरे यात्रियों का पोस्टमार्टम भी होना था। यात्रियों के परिजनों के आने तक पंडा अन्तिम संस्कार की तैयारी भी कर चुका था। बदरीनाथ के तत्कालीन थाना प्रभारी दिनेश बौंठियाल इस घटना की पुष्टि करते हैं।

इलाहाबाद के आस-पास के क्षेत्र के पंडे प्रयागवाल, कुंमायूं के पंडे कूर्माचली, नेपाल राजपरिवार के पंडे लालमुइया और मेरठ के पंडे मेरठवाल के नाम से जाने जाते हैं।

पण्डों के उपनाम

दुर्गम हिमालय की यात्रा में अपनेपन का अहसास, तन - मन-धन से सेवा और धार्मिक कार्यों को संपन्न कराने का काम कोई भी ट्रैवल एजेंसी नहीं कर सकती। इसीलिए किसी भी माध्यम से बदरी-केदार जाने वाला यात्री वहां आकर अपने पंडे से जरूर मिलता है। श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के पूर्व मुख्य कार्याधिकारी जगत सिंह बिष्ट कहते हैं, *''यात्रा को बढ़ावा देने में तीर्थपुरोहितों का सबसे बड़ा योगदान है। परंपरा से बने विश्वास के कारण यात्री बेहिचक अपने तीर्थपुरोहितों की बात पर विश्वास कर निःसंकोच यात्रा करने आते हैं।''*

तीर्थपुरोहितों के उपनाम भी उनके यजमानी के क्षेत्रों के नाम से हो जाते हैं। जैसे इलाहाबाद के आस-पास के क्षेत्र के पंडे प्रयागवाल, कुंमायूं के पंडे कूर्माचली, नेपाल राजपरिवार के पंडे लालमुइया और मेरठ के पंडे मेरठवाल के नाम से जाने जाते हैं। देशभर में घूमने वाले पंडे अपने यजमानों के क्षेत्र की भाषा, संस्कृति, खान-पान और रीति-रिवाजों को उस क्षेत्र के निवासियों से अधिक जानते हैं। देवप्रयाग संस्कृत महाविद्यालय के आचार्य शैलेंद्र कोटियाल 'शास्त्री' बताते हैं, *''तीर्थपुरोहितों के गांवों में मिनी भारत बसता है। इन गांवों में भारत की सभी भाषाओं के जानकार मिल जाते हैं।''*

शिक्षा का प्रसार

शास्त्री आगे बताते हैं कि तीर्थपुरोहित उत्तराखंड जैसे दुर्गम क्षेत्र में पूरे भारत की संस्कृति लाए और सदियों के इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान से पहाड़ के दुर्गम इलाकों में आर्थिकी का संचार होने के साथ-साथ शिक्षा का प्रसार भी हुआ। वे कहते हैं, *''१०० साल पहले देवप्रयाग में मुकुंद दैवज्ञ के निर्देशन में संस्कृत व ज्योतिष के सैकड़ों स्तरीय ग्रंथ प्रकाशित हुए। बाद में उनकी परंपरा को उनके शिष्य आचार्य चक्रधर जोशी ने आगे बढ़ाते हुए न केवल प्रकाशन कार्य जारी रखा बल्कि ज्योतिष की तथ्यपरक व वैज्ञानिक जानकारियों के लिए देवप्रयाग में एक वेधशाला भी खोली।''* श्रीनिवास पोस्ती भी बताते हैं कि केदार के तीर्थपुरोहितों ने भी २०० साल पहले गुप्तकाशी के पास शोणितपुर में संस्कृत पाठशाला खोली जो आज भी शिक्षा के प्रसार में लगी है। देश के अन्य तीर्थों में भले ही तीर्थ पुरोहितों के साथ यात्रियों को कड़वे अनुभव होते हों मगर बदरी-केदार के तीर्थ पुरोहित अपनी कुछ विशिष्टताओं के कारण आज भी अपने यजमानों के दिलों में बसे हैं। ❑

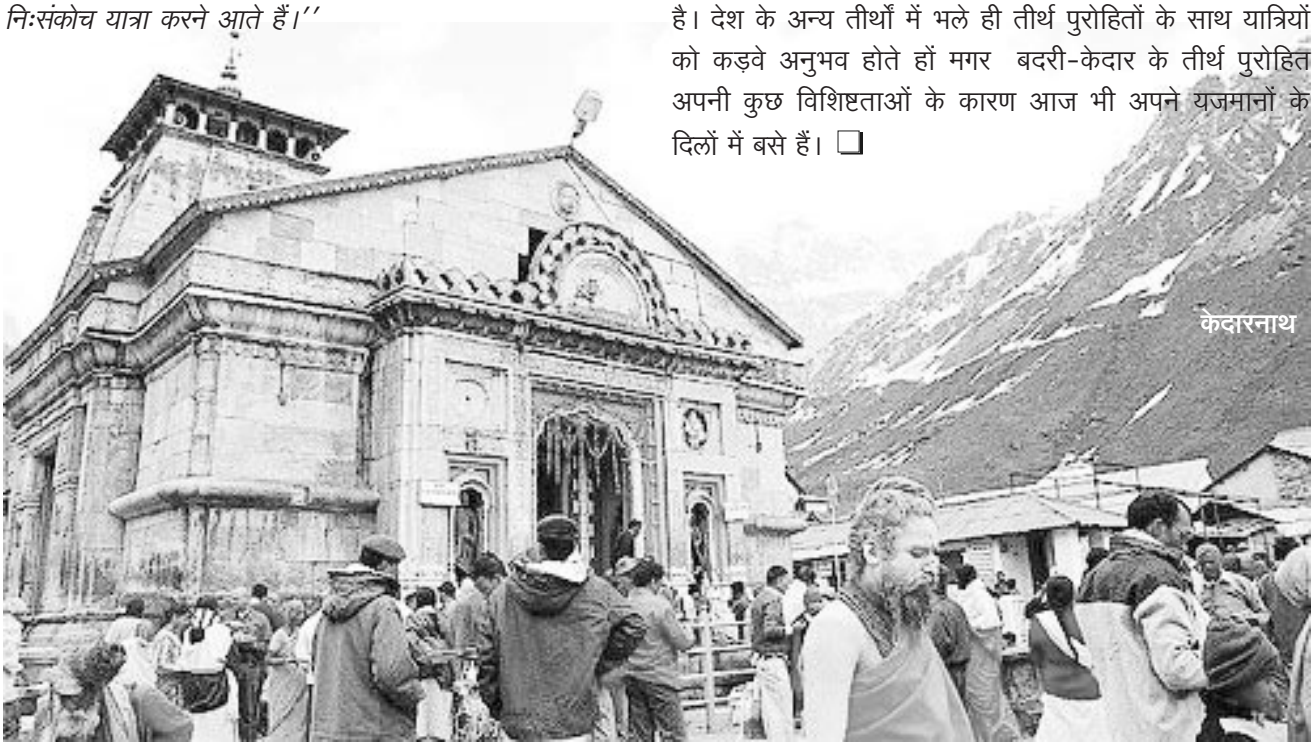

केदारनाथ

चारण साहित्य में वंशावली संरक्षण

❑ **ओंकार सिंह लखावत** (पूर्व सांसद)

समाज, जाति और परिवार हिन्दुस्तान की वास्तविक शक्ति हैं। सभ्यता के विकास के प्रारम्भिक समय से ही भारत उपरोक्त तीनों विशेषताओं से परिपूर्ण रहा है। उक्त तीनों अंगों को एक-दूसरे से ताकत मिलती रही है और राष्ट्र रक्षा एवं संवर्द्धन में एक-दूसरे के पूरक बनकर पूरे सामर्थ्य से कार्य करते रहे हैं। अनेक विदेशी हमले हिन्दुस्तान पर हुये, विदेशी शासन भी रहा परन्तु सभी प्रकार के हमलों को समय और काल के अनुसार विफल कर दिया गया। पश्चिमी देश न तो अपनी संस्कृति से भारत को विकृत कर सके और न ही इस्लामिक देश कट्टरपंथिता में जकड़ सके।

हिन्दुस्थान में लोगों ने अपनी संस्कृति से प्रेरणा लेकर जीवन को जिया। हर हिन्दुस्थानी ने अपने पुरखों की गौरवशाली परम्परा को स्मरण कर भविष्य का निर्धारण किया। उतार चढ़ाव केवल अस्थाई ठहराव बन कर रह गये।

जड़ों की पहचान

इस सबके जड़ में यदि कोई मूल बात है तो वह यह है कि हम हमारी जड़ों को पहचानते हैं, आदर से स्मरण करते हैं और समय-समय पर इनसे सीख लेते हैं। जड़ों को पहचानने का कार्य हमारी वंशावली संरक्षण परम्परा के माध्यम से सुगम होता गया। सरकारी कार्यालय नहीं, अपितु समाज के इस वर्ग ने इस दायित्व का कुशलता से शताब्दियों तक निर्वहन किया। हर नये परिवार के सदस्य का नाम उसके प्रारम्भिक पुरखों से जोड़कर बहियों, गीतों, छन्दों या वाचक परम्परा में समाहित होता गया।

इस समृद्ध परम्परा में एक महत्वपूर्ण विषय है गौरवशाली पुरखों के सद्कार्यों को स्मरण करना और उन पुरखों के यशस्वी जीवन को साहित्य के माध्यम से इतिहास का अंग बनाना।

इस समृद्ध परम्परा में एक महत्वपूर्ण विषय है गौरवशाली पुरखों के सद्कार्यों को स्मरण करना और उन पुरखों के यशस्वी जीवन को साहित्य के माध्यम से इतिहास का अंग बनाना। जब व्यक्ति अपने यशस्वी पुरखों को और उनकी सद् परम्परा को स्मरण करता है तो वह श्रेष्ठ कार्य करने के लिये और परम्परा को बेदाग आगे बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्पित होता है। हमारे यहाँ जीवन जीने का उतना महत्व नहीं रहा जितना मरने के पश्चात जीवित रहने की कला के पात्र बनने का। यह कार्य तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने जीवन काल में ऐसे श्रेष्ठ कार्य समाज व राष्ट्र हित में करे जो उसकी मृत्यु के पश्चात् भी आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणादायी रहें। मरने से पहले जीना तो बहुत आसान है परन्तु मरने के बाद जीना बहुत ही मुश्किल है। यश और अपयश के महत्व को जो व्यक्ति समझ ले वह समय का सही पारखी होता है।

इस कार्य की प्रेरणा देने का कार्य चारण समाज के कवियों ने किया। चारणों की उत्पत्ति कीर्ति, ज्ञान एवं विद्या के प्रचार के लिये हुई। यथा-*''चारयन्ति कीर्तिम् विद्याम् ज्ञानम् वा इति चारणाः।''* चारणों की उत्पत्ति सृष्टि के प्रारम्भ काल से ही देवों के साथ होने का उल्लेख श्रीमद् भावगत के तृतीय स्कन्ध में इस प्रकार मिलता है -

देव सर्गश्चाष्टविधो विवुधाः पितरो सुराः।
गंधर्वासरसः सिद्धा यक्ष रक्षांसि चारणाः॥

ओजस्वी वाणी

चारणों ने समाज के श्रेष्ठ लोगों और शासकों की कीर्ति में अपनी लेखनी से गीत एवं छन्द लिखे व ओजस्वी वाणी से इस प्रकार उच्चारित किये कि इस यश गाथा के पात्र बनने के लिये राष्ट्र, समाज, राज्य एवं धर्म की रक्षार्थ सर्वस्य न्यौछावर करने के लिये भारतवासी तत्पर रहते थे। योद्धाओं के सम्मुख उनके गौरवशाली पुरखों और उनकी वंश परम्परा को प्रभावी रूप से चारण प्रस्तुत करते थे। कविता को सुनकर सुनने वाला अपना स्वयं का नाम उस गौरवशाली यशस्वी परम्परा में जुड़वाने के लिये सबकुछ कर गुजरता था। वह हर क्षण सोचने को विवश होता था कि मुझसे ऐसा कोई समाज और देश विरोधी कार्य न हो जाये जिससे मेरी वंश परम्परा कलंकित हो।

चारणों ने शूरवीरों की वीरता का वर्णन करते हुए रासो लिखे, गीतों का सृजन किया, ख्यातें लिखी गईं और परवाड़ों को शब्दों में ढ़ाला गया। इसी चारणी परम्परा में योद्धा के शौर्य का बखान करने वाले एवं उसके पुरखों का स्मरण करने वाले कुछ गीतों के अंशों की ओर हम यहाँ पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं-

अर्जुन गौड़ के शौर्य का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा-

''खित पड़ियो न पळचरा खाधो, पावक घट सकियो न प्रजाळ।
वीठळ-सुतन तणो तन विढ़तां, त्रिजड़ां चहोट गयो रणताळ॥''

(न वह जमीन पर गिरा और न मांसभक्षियों ने उसे खाया

'' चारण साहित्य परम्परा ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सद्कार्य करने वाले महापुरुषों पर अपनी लेखनी द्वारा साहित्य का सृजन किया और उनके यशस्वी पूर्वजों का विशेषताओं के साथ उल्लेख इसलिये किया ताकि वंश परम्परा चलती रहे।''

उसको अग्नि भी जला नहीं पायी। पीठलदास गौड़ के पुत्र अर्जुन का शरीर युद्ध में तलवारों के ही चिपट गया।) इसमें अर्जुन गौड़ के पिता का उल्लेख हुआ है। इसी रचना में आगे -*''पालहरो असुरां पाड़तो, रज-रज धारा विलग रह्यो''* में अर्जुन गौड़ को गोपालदास के वंशज (पौत्र) के रूप में स्मरण किया गया है।

एक अन्य रचना में वीर दुर्गादास राठौड़ की कीर्ति का उनके पिता आसकरण के नाम का उल्लेख करते हुये यों वर्णन किया गया है -*''तवै हिन्दू तुरक नमो आसातणा, तो बिना कवण असमान तोलै''* किया गया है।

१८५७ के स्वातन्त्र्य संघर्ष में आऊवा में लड़े शिवनाथ सिंघ कूंपावत का व उनके पुरखों का उल्लेख करते हुये कवि ने रचना यों लिखी-

बखत-सुत आउवै झाट खग बजाई, काट घण दळां, रजावट केवै।
मुरधरा ढाल मर बिरंग रंग मिटायो, सुरंग रंग कियो रिड़माल सेवै॥

(बखत सिंह के पुत्र ने आउवा के युद्ध में तलवार का ऐसा प्रहार किया कि राजपूती प्रतिशोध में बहुसंख्यक शत्रुओं को काट डाला। मरुधरा की रक्षा करने वाले, रणमल के वंशज, शिवनाथ सिंह ने स्वयं का बलिदान कर मेरे बदरंग रंग को मिटा कर लाल रंग से रंग दिया)।

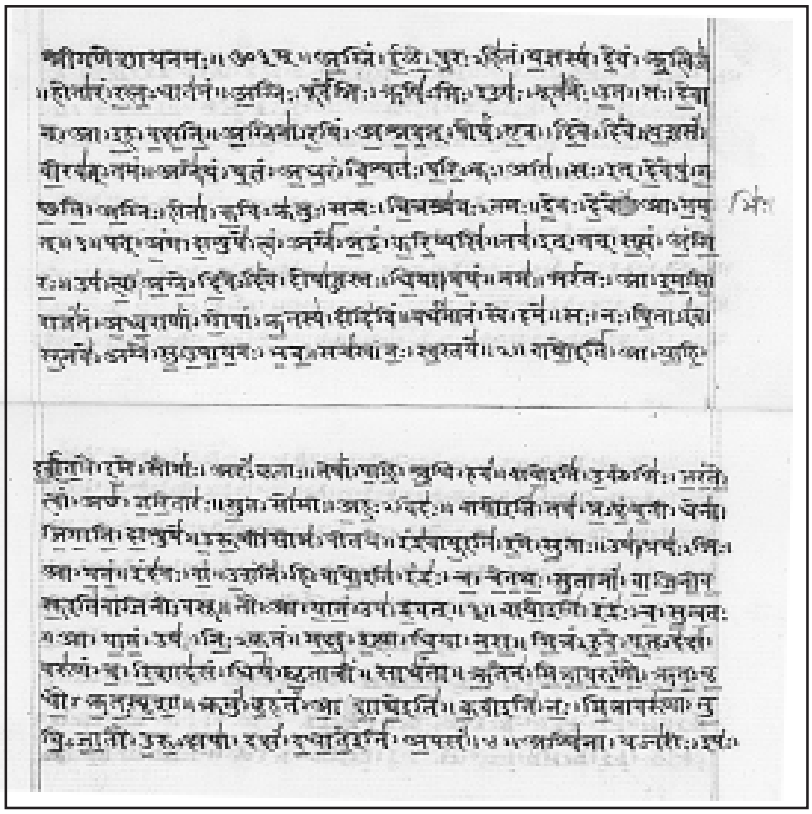

चेतावनी रा चूंगटिया

अंग्रेजों के शासन काल में मेवाड़ के महाराणा फतह सिंह लॉर्ड कर्जन के दरबार में भाग लेने के लिये १९०३ में जब दिल्ली जा रहे थे तो स्वातन्त्र्य प्रेमियों ने केसरी सिंह बारहठ से निवेदन किया कि वे अपनी वाणी का उपयोग कर मेवाड़ महाराणा को लॉर्ड कर्जन के दरबार में जाने से रोकें अन्यथा स्वतंत्रता आन्दोलन पर इसका विपरीत असर होगा। केसरी सिंह बारहठ ने महाराणा फतह सिंह को उनके गौरवशाली पुरखों का स्मरण कराते हुए ' चेतावनी रा चूंगटिया ' शीर्षक से दोहे लिखकर बीच मार्ग पर रेल में दिये। इसी से प्रेरित होकर महाराणा फतह सिंह ने अपने यशस्वी पुरखों और अपनी गौरवशाली परम्परा को स्मरण किया और वे लॉर्ड कर्जन के दरबार में उपस्थित नहीं हुये। उपरोक्त घटना ने स्वातन्त्र्य आन्दोलन को मजबूती प्रदान की। महाकवि सूर्यमल्ल मीसण ने वंश भास्कर जैसे महाकाव्य की रचना करते हुये लिखा-

के न बभूवुर्भूपा वितरणशीला बुधा विजेतारः।
ये कविसूक्तिनिबद्धास्ते ह्याकल्पं स्थिता सशोवपुषः॥

(इस जगत में कितने ही युद्ध जीतने वाले भूपति हुए, बड़े विद्वान हुए पर कवियों की सुन्दर उक्तियों में जीने वाले कम हुए। वे ही लोग प्रलयकाल तक यशस्मी शरीर में स्थित हैं। कवियों के ऐसे उत्कृष्ट समाज की मैं स्तुति करता हूँ) सूर्यमल्ल मीसण ने अपने ग्रंथ का वंश भाष्कर नामकरण को लेकर यों वर्णन किया-

बंस प्रकासक ग्रंथ यह, कवि कुल पूरन काम।
जानहु याको सुकविजन, बंसभास्करहि नाम॥

महाकवि नरहरिदास बारसठ ने राव अमर सिंह राठौड़ के शौर्य को लेकर ५०७ दूहे(सोरठा) लिखे। इन सोरठों में केवल राव अमर सिंह राठौड़ नहीं अपितु उसकी गौरवशाली वंश परम्परा का प्रभावी रूप से वर्णन किया गया है। कवि ने अमर सिंह राठौड़ (वि.सं.१६९५-१७०१) के पूर्वज राव सिहा (वि.सं. १२७८-१३३०) जो मारवाड़ राज्य के संस्थापक थे, का वर्णन करते हुये लिखा-

*''छाडो छल रखपाल, सहजे जाल्हण **सीहऊत**।*
विसभो बिरद विसाल, मारु मंडली-कामंडल॥''

इसी प्रकार राव अमर सिंह राठौड़ के पूर्वज **तीडौजी** (वि.सं.१४०१-१४१४) का वर्णन भी किया।

समीयांणे अडसाल, जल चाढण जाल्हण हरौ।
चढ़ीयौ चमर बंबाल, तीडौ रवि साखी तीयै।

इस प्रकार वंशावली संरक्षण करने वालों ने महापुरुषों की उपलब्धियों को उजागर कर उनकी कीर्ति फैलाने के लिये साहित्य का सृजन किया और एक के बाद एक वंश परम्परा को गौरवशाली रूप से चलाने के लिये इस साहित्य ने आधारशिला का काम किया।

चारण साहित्य परम्परा ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सद्कार्य करने वाले महापुरूषों पर अपनी लेखनी द्वारा साहित्य का सृजन किया और उनके यशस्वी पूर्वजों का विशेषताओं के साथ उल्लेख इसलिये किया ताकि वंश परम्परा चलती रहे।

आज भी ऐसे हजारों चारण कवि विद्यमान हैं जिनको राष्ट्र, समाज, धर्म एवं संस्कृति पर हुये आक्रमणों का मुकाबला करने वाले महापुरुषों एवं उनकी वंश परम्परा के बारे में साहित्यिक रचनायें मौखिक रूप से याद हैं और साहित्य का अपार भण्डार उपलब्ध है।

इस प्रकार चारणों के साहित्य में वंशावली के गौरवशाली पक्ष को उजागर करने का काम आदि-अनादि काल से चला आ रहा है। आवश्यकता है इस साहित्य को संजोकर, गौरवशाली पुरखों का स्मरण कर उनकी वंश परम्परा बचाने के लिये कालजयी सद्कार्य सतत् चलता रहे। ❑

२४-ए, मोहन कॉलोनी, स्वेज फार्म
सोडाला, जयपुर

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

ASHISH NAHATA

Sarees (P) Ltd.

WHOLESALER OF FANCY PRINTED & EMBROIDERED SAREES

(Park Street)
45/1, Rafi ahmed Kedwai Road,
2nd Floor, Kolkata-700 016

2265-0772(Shop)
2265-9147(Shop)

RANG REZ

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

श्रीमती™

A HOUSE OF FANCY EMBROIDERED SAREES & LEHANGA-CHUNNI

Binod Kochar 98312 81372
Lalit Jain 98311 91380

Navyug Commercials Pvt. Ltd.
58, Sir Hariram Goenka Street
2nd floor, Room #2A Kolkata-700 007,ph.22743937

Moti Jain 3250 2144
Ajay Jain 2227 6926

Arihant Sarees Pvt. Ltd.
'Siddha Park', 9Park Street
3rd floor, Kolkata-700 016

Binod Jain 98312 81372
Lalit Jain 98311 91380

Champashree
24, Kalakar Street,
(5th Floor) Kolkata-700 007
Off. 2274 1411/6672

भट्ट एवं पण्डों का सिख इतिहास में योगदान

❑ सरदार चिरंजीव सिंह

पंजाब के इतिहास में गुरुओं की यात्राओं का योगदान अद्वितीय है। उनका मुख्य आदर्श जागरण था। इसी जागरण के आधार पर उन्होंने सामाजिक क्रांति पैदा की और आगे चलकर राजनैतिक क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। प्राचीन मान्यताओं वालों को वे नई दिशा देने में सफल रहे। मीरी-पीरी के सिद्धान्त का सृजन कर खालसा का निर्माण किया और खालसा ने त्याग और अगणित बलिदान देकर स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। परन्तु यह दुःखद है कि गुरुओं की इस क्रान्तिकारी देन का सिलसिलेवार ब्यौरा अंकित नहीं हो सका।

प्राचीन साखियां चमत्कारी वर्णन तो करती हैं परन्तु तिथि, संवत् रचना आदि का ब्योरा नहीं देतीं। यही सत्य संपूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास है। कविता महाकाव्य के माध्यम से रोमांचकारी प्रसंग उपलब्ध होते हैं, परन्तु उनको ऐतिहासिक तथ्यों के रूप में लिपिबद्ध करना संभव नहीं हो पाता।

आधुनिक इतिहास लेखन

वर्तमान समय में सुप्रसिद्ध सिख विद्वान प्यारा सिंह 'पद्म', जिन्होंने सिख पंथ के बारे में आधुनिक दृष्टिकोण से उच्च स्तरीय दार्शनिक खोज की है, के अनुसार *''संभवतः यह बात मुस्लिम इतिहासकारों के प्रभाव से शुरु हुई कि प्रत्येक घटना का समय, स्थान और संबंधित पात्रों की ऐतिहासिक जानकारी भी दी जाए। पुराने समय में प्रत्येक कबीले के विशेष व्यक्ति अपने कबीले व खानदान की संभाल करते थे। प्राचीन विरासत या 'मीरास' को संभालने के कारण ही यह लोग 'मिरासी' कहलाते थे, जिसका अरबी भाषा में अर्थ है 'पुश्तैनी' अथवा खानदानी याददाश्त की रक्षा करने वाला। भारत में यह कार्य भाट (भट्ट) ब्राह्मण करते थे।''*

भट्ट लोग पुरोहिताई करते थे। यह लोग अपने यजमानों की खुशी व गम के मौके पर उपस्थित होकर कार्य कर अपनी दक्षिणा लेते थे। यह इनका रोजगार भी था। इसलिए ये अपने पास बहियां रखते थे। जहां जाते थे यजमानों के नाम-पते वंशावली के साथ-साथ दर्ज करते जाते थे। कोई खास घटना घटी तो यह लोग उसका ब्यौरा भी तुरन्त मौके पर जाकर लिख लेते थे। इसका लाभ यह था कि जब इनके यजमान का कोई खास समागम होता तो यह खाते पढ़कर यजमानों के पूर्वजों की वीरता सुना देते। इस तरह नई पीढ़ी में जोश भर देते और अपनी दक्षिणा भी यजमानों को प्रसन्न करके लेते थे।

साधरणतया भट्ट राजपूतों के पुरोहित थे। चौहान, पंवार, राठौर, तूमर, जादों-इनके पूर्वजों की गौरव गाथा सुनाकर भट्ट इनको प्रसन्न रखते और इस प्रकार खानदानों का रिकार्ड भी इकट्ठा करते रहते थे।

पंडा बहियां

भट्टों के समान पण्डा लोग भी अपनी बहियों में अपने यजमानों के पुरखों के कारनामे दर्ज करते थे। यह परंपरा आज भी चालू है। अन्तर इतना है कि भट्ट चक्रवर्ती थे। वह घूम-घूम कर अपने यजमानों के नए कारनामे लिखते थे, पुरानी घटनाओं को सुनाते थे। परन्तु पण्डा लोग तीर्थों में निवास करते थे और आने वाले यात्रियों में अपने गोत्र के यजमानों को उनका इतिहास बताते थे। यह पण्डा लोग हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, पिहोवा, थानेसर, बनारस, मटन(कश्मीर), गया, इलाहाबाद जैसे बड़े तीर्थों पर निवास करते थे, आज भी करते हैं। कुछ घटनाएं भट्ट बही और पण्डा बही में समान रूप से मिल जाती हैं, विशेषकर उनकी तिथि, स्थान, समय और प्रसंग। इससे उनकी प्रामाणिकता और बढ़ जाती है तथा उसका लाभ इतिहासकारों को हो जाता है।

बहियां और सिख इतिहास

यह सब प्रसंग प्रो. प्यारा सिंह 'पद्म' द्वारा लिखित पुस्तक 'गुरु किआं साखिआं (पंजाबी) से लिये गये हैं। यह उनकी पंजाबी भाषा का अनुवाद मात्र है। उनके प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है। भट्टों का संबंध सिख आंदोलन के साथ तीसरे गुरु अमरदास जी से शुरु हुआ। पांचवें गुरु अर्जुन साहिब जी के समय अनेक भट्ट सिख बन गए और गुरु साहिबान की सरगर्मियों के समय, स्थान, पता यथासंभव अपनी बहियों में दर्ज करने लगे। यहां हम उन ब्रह्मज्ञानी भट्टों का उल्लेख नहीं कर रहे हैं जिनकी

कुछ घटनाएं भट्ट बही और पण्डा बही में समान रूप से मिल जाती हैं, विशेषकर उनकी तिथि, स्थान, समय और प्रसंग। इससे उनकी प्रामाणिकता और बढ़ जाती है तथा उसका लाभ इतिहासकारों को हो जाता है।

वाणी श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में दर्ज है और जिन्होंने गुरु चरण में बैठकर ऐसी गुरु महिमा गाई है कि उनकी वाणी भी गुरु रूप का दर्जा हासिल कर चुकी है।

ऊपर उन भट्टों का उल्लेख है कि जो जन साधारण होते हुए भी गुरु सिख इतिहास के ऐसे प्रसंग अपनी बहियों में दर्ज कर गए जिनके कारण हमें बिखरे हुए साखियों के इतिहास को क्रम देने में सहायता मिलती है। यह भट्ट कोई विद्वान इतिहासकार नहीं थे, न ही उनका उद्देश्य इतिहास लिखना था परन्तु वह अपनी बहियों में तथ्यों का एक ऐसा खजाना दर्ज कर गए कि आज बड़े-बड़े इतिहासकार उनकी खोज करने में अपनी जिंदगी लगा रहे हैं।

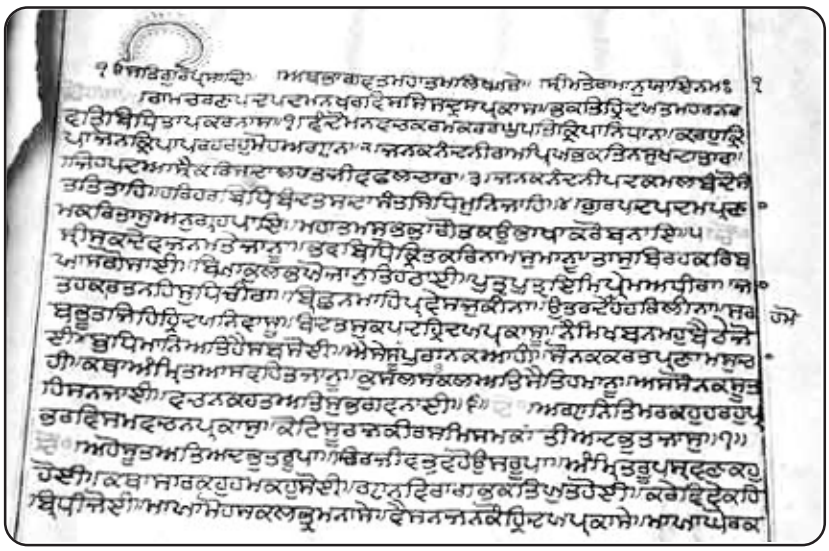

सिखों को इस बात की हैरानी होती है कि सिख परंपरा और गुरुघर की घटनाएं भी पण्डों, भट्टों के खातों में दर्ज हैं। आज यह सिद्ध हो गया है कि विद्वानों, इतिहासकारों को इन बहियों का प्रामाणिक सहारा है।

सिख इतिहास के प्रसंग

उदाहरण के तौर पर प्रो. प्यारा सिंह 'पद्म' सिख इतिहास के कुछ प्रसंगों का वर्णन करते हैं। बाबा तेग बहादुर जी के विक्रमी १७१३ में तीर्थयात्रा पर जाने के बारे में बड़ी महत्वपूर्ण जानकारी भट्ट बही में मिलती है। वह कब गए, उनके साथ कौन गए आदि। बही में निम्न शब्द लिखे हैं-

१. गुरु तेगबहादुरजी, बेटा गुरु हरगोबिन्द जी महल छटेका, पोता गुरु अर्जन का, सोढी खतरी, बासी कीरतपुर, परगणा कहलूर,संवत् १७१३ आषाढ़ परविष-११, तीर्थ यात्रा जाने की तिआरी की। गैलों माता नानकी जी आईं, इस तरह गुरु हरगोबिन्द जी माता नेति जी आईं स्त्री गुरदिता जी की, माता हरि जी आईं-स्त्री गुरु सूरजमल जी की, बाबा बालू हसना ते, बाबा अलमस्त जी आए। चेले गुरु गुरदिता जी की माता गुजरी जी आईं स्त्री गुरु तेज बहादुर जी की, कृपाल चंद आइआ बेटा बाबा लाल चन्द सुभीखी का, दीवान दरगा मल आइआ बेटा द्वारका दास छिब्बड़ ब्राह्मण का, साधु सिंह आइआ बेटा श्री चन्द खोसले का , दुर्गादास आइआ बेटा पदमराय हजावत चौहान का, दिआलदास आइआ बेटा माईदास, पवार बलवंतका, चउपत राय आइआ-बेटा पेरा राम छिबर का होर सिख आए। (भट्ट बही तलाउंदा परगणा जींद)।

(ऐसा लगता है यह यात्रियों का दल आराम से पैदल चलता और स्थान-स्थान पर पड़ाव करता हुआ पांच महीने बाद हरिद्वार पहुंचा जैसा कि वहां की बही में दर्ज है ।)

२. लिखतं तेगबहादुर, बेटा गुरु हरिगोबिन्द जी, बासी कीरतपुर, तालुका राज कहलूर, संवत् १७१३ माघ मास की पूर्णिमा के दिन, श्री गंगाजी आए साथ माता नानकी जी आए। साथ स्त्री माता गुजरी जी आईं, सणे संगी साथिआं सुख दे स्नान। (पण्डा बही भवानी दास हवेली सोढिआं हरिद्वार)।

बाबा रामराय जी खुद गुरु हरिकिशन जी के संस्कार(अंतिम फूल) लेकर गए थे। इसका उल्लेख भट्ट बही में इस प्रकार है-

३. गुरु रामराय बेटा हरिराय महल सप्तमें का, बासी कीरतपुर, परगणा कहलूर संवत् १७२१ माह जेष्ठ कृष्ण पक्ष तेरस के दिन दिंहु गुरु हरि किशन जी कीआं असतीआं लै के गंगाजी गिआ। गैलों माता सुलखणी जी आईं, माता गुरु हरिकिशन जी की, गैल दीवान दरगाह मल छिब्बर आइआ। (भट्ट बही मुलतानी)

४. लिखतं गुरु रामराय, बेटा गुरु हरिराय जी का, पोता गुरुदिता जी का, सोढी खतरी, वासी कीरतपुर परगणा कहलूर संवत् १७२१ माह जेठ बदी तेरस के दिंहु अपने भाई गुरु हरकिशन जी की अस्थियां लेकर गंगा जी गया। गैलो माता सुलखणी जी आईं, माता हरिकिशन जी की गैल दीवान दरगाह मल छिब्बर आइआ। (भट्ट बही मुल्तानी सिंध)

अब इस बारे में पंडा बही का लेख भी उल्लेखनीय है-

आगे लिखतं गुरु रामराय बेटा गुरु हरिराय जी का, पोता गुरु गुरुदित्ताजी का, २१ जेठ बदी तेरस के अपने भाई गुरु हरिकिशन जी के फूल लै के गंगाजी आइआ। साथ माता सुलखणी आईं। साथ दरगाह मल छिब्बर आया। (पंडा बही भवानीदास हवेली सोढियां, हरिद्वार)

गुरु गोबिन्द सिंह जी के बारे में

गुरु गोबिन्द सिंह जी के प्रकाश के बारे में यत्र तत्र परन्तु निश्चित जानकारी देने वाला विवरण इस प्रकार है-

५. गुरु गोबिंद दास बेटा गुरु तेगबहादुर महल नौमां का, पोता गुरु हरिगोबिन्द जी का , सोढी खतरी वासी पटना शहर तट नदी गंगा संवत् १७१८ मास सुदी सप्तमी बुधवार के दिंहु ढली रैण जनम हुआ दिंहु ढलें। माता नानकी जी ने गरीब-गुरबे को दान दीआ, रैण पई, दीप माला हुई, बडा कोतुहल हुआ। काई बार पार नहीं सी आई रहा, गुरु-गुरु जपणा, जनम सउरेगा गुरु हर थाई सहाइ होगु(भट्ट बही पूर्वी दखिणी)।

(दशम गुरु देहरादून से वापस आते हुए १७५१ विक्रमी शुरु में हरिद्वार गए थे। उसके बारे में बहियों का रिकार्ड इसकी पुष्टि करता है।)

६. लिखतं गुरु गोबिन्द दास बेटा सोढी खतरी, बासी चक नानकी, तालुका राज कहलूर। संवत् १७५१ चैत्रा मास की पहली के दिवस के गंगा जी आए। सुख के स्नान। साथ माता पंजाब कोइर आईं, इस तरह गुरु रामराय जी के साथ दीवान चन्द्र छिब्बर आया। साथ दीवान मनीराम आया। (पण्डा बही हवेली सोढ़ियां पं. भवानी दास)

७. लिखतं मनीराम बेटा नाइक भाई दास का पोता वल्लू का पडपोता मूले का, जतीआ पुआर, बंस बीझे का, जलाना बासी अलीपुर परगना मुलतान संवत् १७५१ मिति २ चेत, गुरु गोबिन्द जी के साथ दीवान होईकर हरिद्वार आए सुख के स्नान। (हरिद्वार पण्डा बही पंडत खेमचन्द चुन्नीलाल)

८. गुरु गोबिन्द सिंह जी महला दसमा, बेटा गुरु तेगबहादुर जी का साल १७५५ मंगलवार बैसाखी दिहु पांच सिखों को खण्डे की पाहुल दी, सिंघ नाम रखा। प्रिथमै दयाराम सोपती खतरी, बासी लाहौर खड़ा हुआ, पाछे मोहकम चन्द छीपा वासी द्वारका, साहब चन्द नाई बासी बीदर (जाफराबाद) श्री चवंदा चाट हस्तनापुर, हिम्मत चंद झीवर वांसी जगन्नाथ बारे बारी खड़े हुए, उनको नीला अंबर पहिनाइआ। वही वेस अपना कीआ। हुक्का, हलाल, हजामत हराम, टिका जंझू धोती का तिआग कराइआ। मीणे, धीर मल्लीए, राम राईए, सिर गुंमे, मंसदा की वरतन बंद की। कंघा, करद केस, कड़ा, कछहिरा सबको दिआ। सब केशधारी कीए।

सबका जनम पटना, वासी, आनंदपुर बताई। आगे गुरु की गति गुरु जाने। गुरु गुरु जपना-गुरु हरथाई सहाई होगु।(भट्ट बही भादसो परगना मानेसर)

९. गुरु गोबिन्द सिंह महला दसमा, बेटा गुरु तेगबहादुर जी का संवत १७६५, असु दिहं चार गए, गाम नांदेड देस, दखन में गुरु जी ने दया सिंह से कहा- माधे दास शस्त्रा बस्तर सजाए, हाथ में नेजा पकडि। गुरु जी के साहवें आइखला हुआ। सतिगुरु इसे अपने दसति मुबारिक से पाहुल दी, बंदा सिंह नाम रखा। इसे रहित बहित बताई। (भट्ट बही मुल्तानी)

१०. गुरु गोबिन्द सिंह महला दसमा बेटा गुरु तेगबहादुर जी का ने संवत १७६५ कार्तिक मास सुदी तीन मंगलवार के दिंहु गाम नान्देड देस दखन तट गोदावरी से बंदा सिंह के मद्रदेश जाने को बचन हुआ। गैलों बाबा बिनोद सिंह, काहन सिंह, भगवंत सिंह, कुइअर सिंह, बाज सिंह, पांच सिख तैयार किए। छिए सिख बणजारा टांडा में पंजाब आए। (भट्ट बही मुल्तानी सिंध)

११. गुरु गोबिन्द सिंह महला दसमा, बेटा गुरु तेग बहादुर जी का, मुकाम नांदेड तट गोदावरी से देश दखन, १७६५ कार्तिक मास सुदी चौथ, शुक्ल पक्ष बुधवार के दिंहु भाई दया सिंह से बचन हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ले आओ, बचन पाए दया सिंह गुरुग्रंथ साहब ले आए। गुरु जी ने पांच पैसे एक नारियल आगे भेंट रखा, माथा टेका। सरबत संगत से कहा- मेरा हुक्म है, मेरी जगह गुरु श्रीगुरु ग्रंथ जी को जानना। जो सिख जानेगा , गुरु तिस की बहुडी करेगा, सत्कार मानना । (भट्ट बही तलाउंदा, परगणा जींद)

ऐतिहासिक दस्तावेज

भट्ट एवं पंडा बहियों में दर्ज की गई घटनाओं का महत्व संपूर्ण भारतवर्ष में है। आजकल तो न्याय प्रक्रिया में भी भट्ट, पण्डा बही को प्रमाणिक माना जाता है। आम धारणा है कि पण्डा लोग पंडताई के धंधे को अपने स्वार्थ के लिए चलाते हैं। परन्तु इन घटनाओं के ऐतिहासिक महत्व पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है। विशेषकर सिखों को इस बात की हैरानी होती है कि सिख परंपरा और गुरुघर की घटनाएं भी पण्डों, भट्टों के खातों में दर्ज हैं। आज यह सिद्ध हो गया है कि विद्वानों, इतिहासकारों को इन बहियों का प्रामाणिक सहारा है। ये और भी आश्चर्यजनक है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी के खालसा सजाने की घटना के बाद भी भट्ट बहियों में आगे सम्पूर्ण घटनाक्रम दर्ज हैं। गुरु घर के व्यक्ति सिंह सजने के बाद,पुरानी रीति-नीति छोड़ने के बाद भी पण्डों और भट्टों को पूर्ण जानकारी देते रहे। ❑

(पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय सिख संगत)

Narayan Manihar
Ghanshyam Manihar

Manihar Gems

44, Burtolla Street, (1st Floor)
Kolkata-7 Ph. 2269-7291, 2271-0237

Dealers of Perecious & Semi-Precious Stones

भारतीय गोविज्ञान परीक्षा

कक्षा ३ से १२ वीं तक पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों को देशी गौवंश की आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक महत्व की जानकारी देने हेतु भारतीय गोवंश रक्षण-सवधन पारषद क तत्वाधान में अखिल भारतीय स्तर पर **'भारतीय गौविज्ञान परीक्षा'** ३० सितम्बर २०११ में आयोजित होगी। परीक्षा हेतु सम्पूर्ण सामग्री बिना लाभ पर प्राप्त करने एवं अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

सुरेश कुमार सेन (राष्ट्रीय संयोजक)
कार्यालयः बी-३२४, सुभाषनगर, भीलवाड़ा (राज.) ३११००१
मोबाइल 094140-13214

मुस्लिम समाज के गोत्र–पाले और चौदराहतें

❑ मिर्जा हबीब बेग 'पारस'

तमाम इतिहासकारों ने यह तस्लीम कर लिया है कि आर्य कौम भारत देश से जाकर ईरान, इराक, मिश्र, तुर्की होते हुए यूरोप तक जा बसी थी। आर्य कौम हिन्दुस्तान में पुराने जमाने से आबाद है। हिन्दू कौम व संस्कृति का पुराना इतिहास भारत पर गैर कौमों के हमलों में तबाह हो गया या फिर यह लोग इस नायाब इतिहास को लूट ले गये ? चुनांचे वेदों में बेशुमार ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। ऐतिहासिक जानकारी शुरूआत में वेदों और पुराणों के नाम से मशहूर हुई (जो इलहामी आसमानी सहिफे है)। पुराने जमाने में हिन्दुस्तान के इतिहासकारों ने इसके कई मायने (मतलब) बयान किये हैं। आर्य का शब्द 'आर' से बना है, 'आर' के मायने शब्दकोश में 'काश्तकारी' और 'जमीन फाड़ने' वाले को कहा जाता है। आर्य के मायने मोअजिज आला विशिष्ठ वरिष्ठ में भी आता है और शरीफखानदानी बहादुर और गौरे लबे चौड़े आदमी को भी आर्य कहा जाता है। यह भी सत्य है कि आर्य भारत से होते हुए अफगानिस्तान, ईरान, इराक, अरब, टर्की और यूरोप में जा बसे थे। मालूम यह हुआ कि दुनिया में आर्य कौम हिन्दुस्तान से ही जाकर आबाद हुए हैं।

यूरोप में आर्य कहलाना अपने आप को औरों से बड़ा समझा जाता है। आर्य शब्द पूरी दुनिया में जितनी भी इंसानी नस्लें हैं, सबमें पाया जाता है। जर्मन, नोर्वे, स्वीडन, आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड, फ्रांस और अफगानिस्तान के रहने वाले लोग आदिकाल से आर्य कहलाते हैं। आर्यों के एक 'स्प्र' ने हिन्दुस्तान में पैर जमाये और दूसरा 'स्प्र' यहां से पलायन करके दुनिया के कोने-कोने में जा बसा। यह देखा जाता है कि दुनिया के बहुत से लोग अपने को आर्य कहलाने पर फ़ख्र महसूस करते हैं।

> *"आर्यों के एक 'स्प्र' ने हिन्दुस्तान में पैर जमाये और दूसरा 'स्प्र' यहाँ से पलायन कर दुनिया के कोने–कोने में जा बसा। यह देखा जाता है कि दुनिया के बहुत से लोग अपने को आर्य कहलाने पर फ़ख्र महसूस करते हैं।"*

मुकद्दस किताबें

सच तो यह है कि हिन्दोस्तान में तबाही व बर्बादी गजनी और गोरी के दौरे हुकूमत में हुई थी। हिन्दुस्तानी कुतुबखानों को इन बाहर के आये हुए दुष्टों ने नष्ट कर दिया या फिर यह लोग लूट कर ले गये। आज भी इंग्लैण्ड के म्यूजियम में संस्कृत के ही नहीं तमाम भारतीय जबानों की किताबें लन्दन म्यूजियम की जीनत बने हुए हैं।

लाला लाजपतराय अपने एक मजमून (आर्यों का असली वतन भारत) में लिखते हैं कि इंसानी नस्ल को दुनिया में तीन या चार भागों में बांटा गया है। १. आर्य २. मंगोल ३. स्मेतक ४. नीग्रो (काले)। आर्य कौम में यूरोपियन, मौजूदा हिन्दुस्तान, ईरान, इराक गिने जाते हैं । आर्य कौम नस्ले इंसानी की तमाम नस्लों से ऊँचा स्थान रखती है।

संस्कृत में दो किताबें रामायण और महाभारत हैं। यह दोनों किताबें मुकद्दस (पवित्र) समझी जाती हैं। यह दोनों किताबें असल में भारत का ऐतिहासिक मंजर (इनसाईक्लोपीडिया) है और दुनिया की सबसे बड़ी नजमों में गिनी जाती हैं। महाभारत एक अजीबो - गरीब किताब हैं जिसमें 'इल्म और फन ' की बातों पर तबसीली बहस की गई है। देखने में यह किताब कौरव पाण्डव का इतिहास दिखती है , लेकिन गौर से पढ़ा जाये तो यह उस जमाने का इतिहास है । इसमें भगवान श्रीकृष्ण जी ने युद्ध में पाण्डवों का साथ दिया था।

इस सब का लब्बो-लुआब यह है कि आज सारे हिन्दुस्तानी इस आर्य कौम के ही बेटे-बेटियाँ हैं। यहाँ के मुसलमान भी इसी आर्य कौम की पैदाइश हैं । नतीजतन मुसलमानों के भी वो ही गोत्र हैं जो हिन्दुओं के हैं। मुलाहिजा फरमायें-

परमार

परमार अग्निकुल के हिन्दू व मुसलमान हैं। यह बहुत ही मशहूर कुल है । परमारों की हुकूमत नर्बदा तक फैली हुई थी। राजा श्रीराम परमार कौम के राजा रहे हैं । महाराजा भोज भी परमार कौम के ही थे। मौर्य नस्ल का ताल्लुक भी परमार नस्ल से ही है। मौर्य नस्ल की हुकूमत हिन्दुस्तान, गजनी, काबुल, ईरान, इराक तक फैली हुई थी। इस वास्ते मौर्या नस्ल को चक्रवर्ती राजा कहा जाता है। गोरखपुर से लेकर गजनी, ईरान, इराक तक सम्राट अशोक की लाट के चिन्ह जगह-जगह मिलते हैं।

मौर्य नस्ल के मुसलमान राजपूत अपना शिजरा चन्द्रगुप्त,

मीणा जाति की ही एक शाखा हैं मेव

सिर्फ एक ही उल्लू काफी है बर्बाद गुलिस्तां करने को,
जब हर साख पर उल्लू बैठा हो अंजामे गुलिस्तां क्या होगा ।

सभी धर्म एक ही हैं धर्म बुनियाद है सनातन धर्म की बुनियाद है 'ऊँ नम: शिवाय' व मुस्लिम धर्म की इला ए इल्लेलाह या मोहमद रसूल अल्लाह। दोनों का अर्थ एक ही है। आयत व चौपाई एक ही है धर्म में केवल भाषाओं का अंतर है फिर भी यह स्पष्ट है कि हम भारत में ही हैं, यहीं की संतान हैं, हिन्दू हैं मेरा कहना केवल इतना है कि केवल मुसलमान होने से नफरत मत करो, हम आपके ही हैं, आपके ही भाई हैं ।

हम लोगों ने हमारे जागाओं से पूरी वंशावली प्रात कर ली है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समस्त मेव जाति मीणाओं से निकली है। यह सही है कि हिन्दुस्तान में ९९ प्रतिशत मुस्लिम किसी न किसी हिन्दू जाति से निकले हैं अत: हम लोग इसी सर जमीन के हैं। हमारी जाति ने चाहे मोहमद बिन कासिम हो, या शहाबुद्दीन गोरी सभी का मुकाबला किया हमने कभी भी गुलामी स्वीकार नहीं की अकबर ने मुल्ला व पंडित दोनों को भड़काकर मेव व मीणाओं को अलग कर दिया फूट डाल कर राज किया, परन्तु कालान्तर में हिन्दूओं ने हमें अछूत मान लिया । यहां मैं अपना दर्द कुछ शब्दों से कहना चाहूंगा-

जख्म दिया है फूलों ने, कांटों से शिकायत करना क्या,
दर्द दिया है अपनों ने, गैरों से शिकायत करना क्या।

मेरा निवेदन है कि इतिहास अभी अधूरा है हमें पूरे भारत की ऐसी जातियों का इतिहास निकालना होगा तभी हमारे प्रयास सफल होंगे राव जी, बड़वा, जागा से निवेदन है कि उन्हें पूरे भारत में घूमना होगा तभी सभी तथ्य एकत्रित होंगे व सही इतिहास बनेगा व लिखा जाएगा जब तक सभी मोतियों को एक माला में नहीं पिरो दिया जाता तब तक हमें सफलता नहीं मिलेगी और यह आज केवल राव, जागा, बड़वा इत्यादि वंशावली संरक्षणकर्ता ही कर सकते हैं।

मुझे लगता है इस देश में जो लोग रहते हैं और इसको अपना घर समझते हैं चाहे वे किसी भी पंथ को मानने वाले क्यों न हो, वे 'हिन्दू' ही हैं ।

–शेर खां दुलोत, पूर्व सरपंच, शेरपुर, मेवात

समुद्रगुप्त और हर्ष से मिलाते हैं। धार देश के अमीर भी परमार नस्ल के हैं। परमार मुसलमान अलवर, भरतपुर, गुड़गांव, फरीदाबाद, पानीपत, अलीगढ़ में रहते हैं।

बड़गुर्जर लालखानी मुसलमान

यह नस्ल सूर्यवंशी है जो अपना ताल्लुक भगवान श्रीराम के बेटे लव से मिलाती है। यह बड़गुर्जर लालखानी मुसलमान ढूंढार के मुकामात पर काबिज थे । आमेर खेली के मुकामात पर भी इनका कब्जा रहा है। यह मुसलमान आमेर की पहाड़ी की तलहटी में आज भी बड़ी तादाद में आबाद हैं , जो सिपाहीगिरी और मिलेट्री में ही भर्ती होना पसन्द करते हैं।

राठौड़ और तंवर नस्ल के क्षत्रिय मुसलमान बनकर अरावली पर्वत के आस-पास बस गये थे, जो आज भी आबाद हैं। कई बार इन मुसलमानों की पृथ्वीराज चैहान के खिलाफ आमेर के राजा का साथ देने पर बड़ी लड़ाइयाँ हुई हैं। थोड़े अर्से बाद एक बड़गुर्जर नस्ल का समुदाय मुसलमान बन गया था। खेड़ी नवाब कुंवर नफाशत अली राही इसी नस्ल के थे। नवाब अहमद शहीद भी इसी नस्ल के गुर्जर हैं। इनका असल नाम बड़गुर्जर तथा बिगड़ा हुआ नाम बैरगुर्जर है।

बड़गुर्जर ३६ शाही खानदानों में से है । यह लोग ढूंढार के अमृतपुर, माचड़ी इलाके में आज भी काबिज हैं। अलवर के राजगढ़ के पास दरीबा में बड़गुर्जर मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद रहती है। राजा प्रताप सिंह ने राजकोल की लड़की से शादी की और दहेज में हाफूस मिला । प्रताप सिंह की ९वीं पुरूस्त में लालसिंह हुआ है जो अकबर राज में मुसलमान हो गया था। उसका नाम बदनसिंह भी था । बदनसिंह के बजाय लालखां रखा गया । इसी लालखां के नाम से लालखानी राजपूत मुसलमान हुए हैं, जो आज भी अपने यहां हिन्दू राजपूतों की सी रस्में मानते हैं। यह लोग अपने गोत्र में शादी नहीं करते और अपनी लड़कियों के नाम दो तरह के रखते हैं । एक नाम हिन्दू रीति रिवाज से रखा जाता है और दूसरा मुसलमान । यह लोग आज भी लड़की की शादी में फेरे करवाने पर भी एतराज नहीं करते हैं। इनके रीति रिवाज हिन्दू राजपूतों से बहुत मेल खाते हैं । यह मुसलमान पानीपत, बुलन्दशहर में भारी तादाद में आबाद हैं । बड़गुर्जर मुसलमान ५ शाखों में बटे हुए हैं - लालखानी, अहमदखानी, विक्रमखानी, कमालखानी और रायखानी । लालखानी मुसलमानों की कछुवाह राजपूतों में आज भी रिश्तेदारी मौजूद है।

कछुवाह मुस्लिम

कछुवाह अपनी वंशावली श्रीरामचन्द्र जी महाराज अयोध्या

'' मौर्य नस्ल के मुसलमान राजपूत अपना शिजरा चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त और हर्ष से मिलाते हैं। धार देश के अमीर भी परमार नस्ल के हैं। परमार मुसलमान अलवर, भरतपुर, गुड़गाँव, फरीदाबाद, पानीपत, अलीगढ़ में रहते हैं। ''

के बेटे श्री कुश की तरफ मंसूब करती है। कछुवाह कौम राजपूताना की जबरदस्त कौम है। इस नस्ल के महाराजा श्री नरू जिन्होंने नाहरगढ़ किला अजीमोशान तामीरात कराया। यह कौम बहुत बहादुर और बड़ी-बड़ी जंगों को फतेह करने वाली है। कछुवाह राजपूत मुसलमान जयपुर, अलवर, हरियाणा, गुड़गांव और दिल्ली के आस-पास बसे हुए हैं और राजपूताना में शेखावटी इनका मशहूर इलाका है तथा जयपुर के राजावत कहलाये जाते हैं। इसी कौम के दो भाई जालिम सिंह और फूल सिंह हुए हैं जो अकबर के दौरे हुकूमत में किसी कारणवश मुसलमान हो गये थे। बाद में उनका नाम मिर्जा राजा फूल बेग व मिर्जा राजा जालिम बेग पड़ा। इसी नस्ल के मशहूर शायर मिर्जा राजा हबीब बेग पारस याने यह लेखक हैं, जो इस गोत्र और वंशावली का संयोजक हैं।

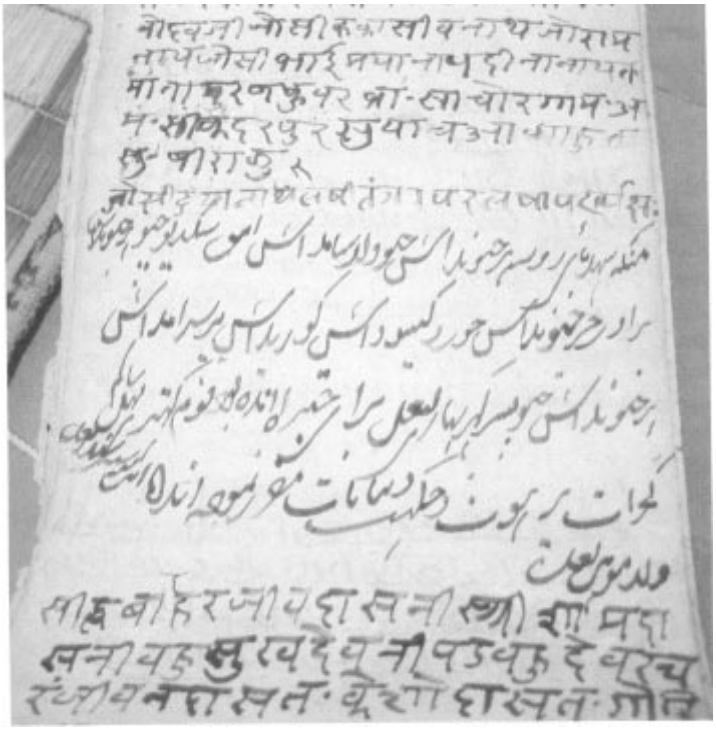

चैहान (चौहान)

मशहूर है कि परसराम जो कि एक राजा गुजरा है के जमाने में हिन्दुओं का धर्म नष्ट हो गया था। तब आबू पर्वत के ऋषियों ने एक अग्नि यज्ञ किया था। जिसमें दुआ मांगी थी कि भगवान हमारे धर्म को बचाओ और उनकी दुआ कबूल हो गई । उस यज्ञ के कुण्ड में से चार बहादुर देवता निकले। उन्हीं में से चार क्षेत्रीय राजपूत परमार, चालुक्य, प्रतिहार, चैहान खानदान की बुनियाद पड़ी । इसीलिए यह कौम अग्निकुल कहलाती है। चैहान के मायने चार हाथ की तलवार के हैं । चैहानों का राज्य अजमेर, दिल्ली और हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्से पर था । चैहान मुसलमानों में कायमखानी, मंसूरी और कुरैशी नस्ल के पाये जाते हैं । जो जयपुर और भारत देश की छोटी से छोटी ढाणी में भी मिल जाते हैं। महाराजा पृथ्वीराज चैहान के पतन के बाद बहुत से चैहान राजपूत मुसलमान हो गये थे। चैहानों में ५३ गोत्र हैं जो तेली तरेपन के नाम से मशहूर हैं और अखण्ड भारत के कोने-कोने में बसे हुए हैं। उनका पेशा घाणी से तेल निकालना, गाय पालना और रूई को धुनना है । मुसलमानों में मंसूरी समाज का आज व्यापार जगत में बड़ा नाम है।

यह लोग स्वभाव के बहुत शान्त होते हैं और अपना गुजारा कम खर्च पर भी कर लेते हैं। यह कौम बड़ी मेहनती है।

राठौड़ मुसलमान

अजमेर की तलहटी में एक चन्द्रवंशी राजा किशन नाथ हुआ , जो कन्नौज के तख्त (राजगद्दी) पर बैठा । बाद की वंशा-वलियों ने राठौड़ नस्ल को सबकंसों में लिखा है । क्षत्रिय कौम का दूसरा नाम राठौड़ है। राठौड़ों का राज कन्नौज में था और वह अपना सिलसिला ताजदारे कौशल्या अयोध्या के राजा श्रीराम से मिलाते हैं।

जोधपुर राठौड़ नस्ल की राजधानी रही है। महाराजा अमर सिंह राठौड़ का मुगल फौज में भारी दबदबा रहा है । इसी की वजह जोधपुर के बहुत से राठौड़ मुगलों के सम्पर्क में आकर मुसलमान हो गये थे।

जोधपुर शहर को राजा राय जोधा ने बसाया था। काठियावाड़, गुजरात के राठौड़ अपने आप को अग्निवंशी कहते हैं। राठौड़ वंश के मुसलमान सारे भारतवर्ष में फैले हुए हैं और यह लोग अपने राठौड़ भाईयों को अपने हर अच्छे बुरे काम में बुलाते रहते हैं। इनकी तमाम रस्में राजपूती रस्में हैं।

राठौड़ मुसलमान खानदान आज भी बहुत उरूज पर है । पंजाब, कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली राजपूताना में राठौड़ मुसलमान बड़ी तादाद में रहते हैं । ❑

-पानों का दरीबा, सुभाष चौक, जयपुर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

बंशीलाल नथमल

बंशीलाल बजरंग लाल

46, स्ट्राण्ड रोड, कलकता -७

☎ 22581377 Mob.9831126681

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Vinod Kumar Choraria

CHORARIA ENGINEERING COMPANY

A HOUSE OF ALL TYPES OF WELDING ELECTRODES, FILLER ROADS, ADHESIVES, SEALENTS AND SPECIALITY LUBRICANTS, COLD WELDING ORDER SUPPLIEDRS.

32, NETA JI SUBHAS ROAD KOLKATA-700 001
PHONE : 2242-3084, MOB; 98305-91961/97482-12436
TALE FAX: 033 2231-6436,
E-mail :choraria_engg_co@yahoo.co.in

हां हिन्दू ही हैं सारे मुसलमान

❑ सुहेल वहीद

यह बिल्कुल सच है । जिस तरह हिन्दू समाज अगड़ों और पिछड़ों में बंटा है, बिल्कुल उसी तरह मुसलमान अशराफ और अजलाफ में बंटे हुए हैं। अशराफ का मतलब सवर्ण और अजलाफ वो हैं जो सवर्ण नहीं हैं। हिन्दुओं की ही तरह मुसलमानों ने भी अपने आपको हजारों जातियों में बांट रखा है। यहां भी अछूत होते हैं, मसलन लालबेगिये। जिस तरह सवर्ण हिन्दुओं में सिर्फ जाति से काम नहीं चलता और गोत्र की भी आवश्यकता पड़ती है , उसी तरह सवर्ण मुसलमान यानी अशराफ में हड्डी से हड्डी मिलाई जाती है। दिसावरी और पुरबिए भी यहां खूब पाए जाते हैं। पेशे के हिसाब से बिल्कुल हिन्दुओं की ही तरह मुसलमानों ने भी अपनी जाति व्यवस्था विकसित कर रखी है।

मौलाना अशरफ अली थानवी की मशहूर धार्मिक पुस्तक 'बहिश्ती जेवर' को भारत के मुसलमान बड़े आदर भाव से पढ़ते हैं। शादी में लड़की को दहेज में यह पुस्तक जरूर दी जाती है। इसमें साफ-साफ लिखा है कि रजीलों के साथ कैसा वर्ताव किया जाना चाहिए। औरतों को किस तरह से पति की सेवा करनी चाहिए, उनके इशारों का मोहताज रहना चाहिए और कमीनों को किस हद तक की सजा दी जानी चाहिए। यह कमीने और रजील कोई और नहीं अजलाफ की श्रेणी में आने वाले शूद्र मुसलमान हैं। अजलाफ के घर किस दिशा में हों और वे अशराफ से कैसे पेश आएं, यह भी इस पुस्तक में साफ लिखा है। बिल्कुल ब्राह्मणवाद और वही वर्ण व्यवस्था, जो हिन्दुओं ने भारत में प्रचलित की हुई है। प्रख्यात उर्दू लेखक आले अहमद सुरूर ने अपनी पुस्तक 'दानिश्वर इकबाल' के पृष्ठ २० पर लिखा है,'सर सय्यद मुसलमानों में तबकाती तफरीक (अशराफ-अजलाफ) के शिद्दत से कायल हैं। अब यकीन करने में दिक्कत होती है कि सर सय्यद भी वर्ण व्यवस्था के इतने कट्टर समर्थक थे। शायद इसीलिए लगभग पचास-साठ वर्षों तक अलीगढ़ विश्वविद्यालय में सिर्फ मुसलमान अमीरजादे ही पढ़ते रहे।

इस्लाम में सिर्फ ईद ही त्यौहार

दीवाली की तर्ज पर मुसलमान शबेबरात मनाने लगे। अब इस दिन बड़े पैमाने पर आतिशबाजी की जाती है और घर-घर चरागां (दिए जलाना) किया जाता है जबकि शबेबरात सिर्फ इबादत की रात है और बाकी तमाम रातों में इबादत के लिए सर्वोत्तम है। चूंकि यह रात रूहों के गुजर की रात भी है इसलिए दीवाली की तरह यहां भी पटाखे दागे और दिए जलाये जाने लगे। हालांकि दीवाली और शबबरात दोनों के मतलब और मकसद बिल्कुल अलग-अलग हैं। रामनवमी और शिवरात्रि के पैटर्न पर मुसलमानों ने ईदे मीलादुन्नबी मनाना शुरु कर दिया और लंबे-लंबे जुलूस निकालने लगे। यह दिन इस्लाम के आखिरी पैगम्बर हजरत मोहम्मद का जन्मदिन है और वफात का दिन भी इसीलिए इसे ज्यादातर लोग बारावफात भी कहते हैं। इस दिन जुलूस निकालने का कोई मतलब नहीं है लेकिन यहां यही होता है।

अगर सिर्फ इस्लाम की बात की जाए और मुसलमान की नहीं तो त्यौहार सिर्फ ईद है। बाकी कोई भी त्यौहार इस्लाम धर्म के अनुसार त्यौहार की श्रेणी में नहीं आता। मोहर्रम इस्लामी साल शुरु होने का पहला महीना है और मोहर्रम की १० तारीख को इमाम हुसैन शहीद हुए थे। भारत में दशहरे के तौर-तरीकों जैसा ही मोहर्रम मनाया जाता है । चूंकि दोनों मामलों में सत्य की असत्य पर विजय हुई इसलिए मोहर्रम में गाजे-बाजे, ताजिये, जुलूस, ढोल, तमाशा, मातम और न जाने क्या-क्या सब कुछ शामिल हो गया। मोहर्रम वास्तव में शहीद दिवस है, त्यौहार तो कतई नहीं लेकिन यहां उसे त्यौहार का स्वरूप दे दिया गया। मुसलमानों के एकमात्र त्यौहार ईद में सेवई खाने-खिलाने का रिवाज भारत में ही है क्योंकि सेवई सिर्फ और सिर्फ भारतीय व्यंजन है। होली की तर्ज पर यहां के शियाओं ने रंग खेल कर नौरोज मनाना शुरु कर दिया।

भारतीय परंपरा का दर्शन

बोहरा संप्रदाय में अभी भी उनके रहनुमा के आगे नतमस्तक होना पड़ता है। राजस्थान के गांवों में मुसलमानों ने जो मस्जिदें बनाई हैं, उनमें पत्थर इस तरह से लगे हैं मानो मन्दिर

दीवाली की तर्ज पर मुसलमान शबेबरात मनाने लगे। अब इस दिन बड़े पैमाने पर आतिशबाजी की जाती है और घर-घर चरागां (दिए जलाना) किया जाता है। रामनवमी और शिवरात्रि के पैटर्न पर मुसलमानों ने ईदे मीलादुन्नबी मनाना शुरु कर दिया और लंबे-लंबे जुलूस निकालने लगे। होली की तर्ज पर यहां के शियाओं ने रंग खेल कर नौरोज मनाना शुरु कर दिया।

विज्ञान का दावा कि मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू थे

अभी तक इतिहासकार जो दावे कर रहे थे उस पर चिकित्सा विज्ञान ने अपनी मोहर लगा दी है। यानी वंशानुक्रम अनुक्रम पर किये गये अध्ययन से पता चलता है कि उत्तर भारत के अधिकांश मुसलमानों के पूर्वज स्थानीय हिन्दू ही थे, जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था। इससे पता चलता है कि वे समय-समय पर भारत आने वाले मुस्लिम शासकों के वंशज नहीं हैं। इसी बात की पुष्टि डीएनए विज्ञान भी अब कर रहा है। भारत, स्पेन और अमरीकी विज्ञानियों द्वारा किया गया यह अध्ययन बताता है कि उत्तर भारत के शिया और सुन्नी मुसलमानों में से अधिकांश धर्म परिवर्तन करने वाले स्थानीय वाशिंदों के ही वंशज हैं। हालांकि कुछ शियाओं में विदेशी वंश के भी कुछ अंश पाए गए हैं। इसके बाबजूद अधिसंख्य मुसलमानों में उत्तर भारतीय हिन्दू जनसंख्या के अधिकाधिक वंशानुक्रम लक्षण पाए गए हैं। इसका खुलासा अमेरिकन जनरल ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी में किया गया है।

अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि उनका अध्ययन उत्तर भारतीय मुसलमानों के पूर्वजों की पड़ताल करता पहला शोध है। इसके लिए अध्ययन का आधार दो तथ्यों को बनाया गया है। एक, उत्तर भारतीय मुसलमान स्थानीय लोगों के वंशज हैं, जिन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया हो। दूसरे, क्या वे आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के दौरान समय-समय पर भारत आने वाले मुसलमानों के भी वंशज हो सकते हैं।

'द टैलीग्राफ' में संजय गांधी पोस्टग्रेज्युएट साइंस, लखनऊ में मेडिकल जेनेटिक्स की प्रमुख और अध्ययन दल की सदस्या सुरक्षा अग्रवाल कहती हैं, *''हमारे अध्ययन का निष्कर्ष बताता है कि धर्म परिवर्तन शिया-सुन्नी दोनों ही मुसलमानों में हुआ, लेकिन शियाओं में विदेशी वंश के लक्षण अधिक पाए गए।''* इस अध्ययन के तहत मिटोकॉन्ड्रियल डीएनए तकनीक के जरिये मुसलमानों के पूर्वजों का माँ और पिता की तरफ से पता लगाने की कोशिश की गई। इसके तहत माँ को सिर्फ पिता के द्वारा मिलने वाले वाय क्रोमोसोम्स की जांच की गई।

अमेरिका की फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के जीवविज्ञानी रिनी जे हैरेरा कहते हैं, *'मिटडीएनए परीक्षण में हमें भारत के बाहर के संकेत नहीं मिले। यानी दोनों ही के ज्यादातर पूर्वज स्थानीय लोग थे जो धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बन गए थे।'* अपनी तरह का यह पहला अध्ययन है जिसमें डीएनए परीक्षण के जरिये उत्तर भारत के मुसलमानों के पूर्वजों का पता लगाने की कोशिश की गई है।

हैरेरा कहते हैं समय के साथ-साथ इतिहास स्वयं को झुठला सकता है, लेकिन डीएनए झूठ नहीं बोलते। यहां यह भी कतई नहीं भूलना चाहिये कि विभिन्न इतिहासकार समय-समय पर यही दोहराते हैं कि भारतीय मुसलमान विदेशी मुसलमानों की संतान नहीं बल्कि धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बने स्थानीय लोगों के ही वंशज हैं।

हों। उन्हीं पर वे सजदा करते हैं। राजस्थान और दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु और केरल के मुसलमानों का रहन-सहन बोली-भाषा सब कुछ हिन्दुओं जैसी ही है। मुसलमानों ने भारत की प्राचीन सभ्यता के संस्कारों को अपने धार्मिक कार्यों में भी अपनाया हुआ है। यह सब इस बात का सबूत है कि भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश को छोड़कर कहीं का मुसलमान ईद पर सेवई नहीं खाता, ईदे मीलादुन्नवी पर जुलूस नहीं निकालता और शबबरात पर आतिशबाजी नहीं जलाता न चरागां करता है। यही नहीं इन तीन देशों के अलावा किसी भी देश के मुसलमान की बीबी शादी के दिन सुहाग का प्रतीक सुर्ख जोड़ा नहीं पहनती। यह विशुद्ध भारतीय परंपरा है जिसे यहां के मुसलमान सदियों से अपनाये हुये हैं।

मुसलमानों के एकमात्र त्यौहार ईद में सेवई खाने-खिलाने का रिवाज भारत में ही है क्योंकि सेवई सिर्फ और सिर्फ भारतीय व्यंजन है।

बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के मुसलमान शादी से पहले तिलक चढ़वाते हैं। यह उन्होंने अपने आस-पड़ोस से ही सीखा है। इस्लाम धर्म के अनुसार शादी करें तो तिलक क्या, दहेज से भी हाथ धोना पड़े लेकिन मुसलमान भी दहेज के मामले में हिन्दुओं से पीछे नहीं दिखते । इस मामले में ईसाई मुसलमानों से ज्यादा कट्टर साबित हुए हैं। पूरी दुनिया में ईसाई दुल्हनें एक ही ड्रेस पहनती हैं और शादी की रस्मों में भी एकरूपता है। दहेज भी उनके वहां अभी तक रिवाज नहीं बन सका है। उनके मुताबिक मुसलमानों ने प्राचीन भारतीय सभ्यता को अपने धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों में बहुत ज्यादा अपनाया है।

अमीर खुसरो का ज्यादातर कलाम भारतीय सभ्यता और परंपरा का सच्चा नमूना है। दरगाह चाहे ख्वाजा चिश्ती की हो या निजामुद्दीन चिश्ती की, उस पर उर्स और कव्वाली विशुद्ध भारतीय परंपरा है। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के अलावा न तो कहीं किसी पीर-फकीर का उर्स होता है और न कव्वाली। साढ़े सात हजार साल से चली आ रही पूजा-अर्चना की समृद्ध विरासत ही उर्स और कव्वाली की जननी है। सूफी परंपरा इस देश की रूह में बसी है जो हिन्दू तहजीब की जीती जागती निशानी है। सूफी न हिन्दू का होता है न मुसलमान का। इसी तरह उर्दू के बारे में चाहे कितना कहा जाए कि वह मुसलमानों की भाषा है लेकिन सच यह है कि उर्दू साहित्य में हिन्दू संस्कृति उतनी ही परवान चढ़ी है जितनी इस्लामी संस्कृति। एशिया के

'' मौत हो जाने पर दफनाने के अलावा बाकी सारे काम मुसलमान वही करता है, जो हिन्दू करते हैं । मसलन तेरहवीं, तीया और चालीसवां या फिर बरसी। यह सब भारत(पाकिस्तान और बांग्लादेश) के अलावा कहीं के मुसलमान नहीं करते ।''

सबसे बड़े कथाकार का खिताब उर्दू कथाकार कृष्ण चंदर को मिला हालांकि उस समय चीन में शू शुन पैदा हो चुके थे। यह सब समझ में नहीं आता है या कोई अब इन बातों को सुनना-समझना नहीं चाहता तो फिलहाल यही देख लें कि मुसलमान शराब पीने के मामले में भी किसी से पीछे नहीं हैं। मुस्लिम बहुल जिलों में प्रतिवर्ष बढ़ता आबकारी राजस्व इसका प्रमाण है।

शास्त्रीय संगीत के उस्ताद

मौत हो जाने पर दफनाने के अलावा बाकी सारे काम मुसलमान वही करता है, जो हिन्दू करते हैं । मसलन तेरहवीं, तीया और चालीसवां या फिर बरसी। यह सब भारत(पाकिस्तान और बांग्लादेश) के अलावा कहीं के मुसलमान नहीं करते । संगीत के क्षेत्र में भारत के मुसलमानों ने प्राचीन भारत की सर्वश्रेष्ठ परंपरा का प्रतिनिधित्व किया है। शास्त्रीय संगीत की शायद ही कोई ऐसी विधा बची है, जिसमें मुसलमान संगीत घरानों की कई-कई पीढ़ियों ने अपने जौहर न दिखाए हों। भारत के अलावा कहीं कोई मुसलमान संगीतज्ञ बन ही नहीं सकता। इस्लाम धर्म में संगीत पर सख्त पाबंदी है। बॉलीवुड जब से बना है, तब से अब तक कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि आधे से अधिक एक्टर, एक्ट्रेस, कमेडियन, फाइटर से लेकर लेखक,गीतकार, कैमरामैन और डायरेक्टर मुसलमान न रहे हों। ये सब मुसलमान इस्लामी फिल्में नहीं बनाते। निजा फाजली भी दोहे लिखते हैं। नौशाद भजनों के लिए संगीत तैयार करते हैं और मुहम्मद रफी इन्हें गाते रहे हैं।

अब रही बात पांच या दस प्रतिशत ऐसे मुसलमानों की , जो पांच वक्त की नमाज पढ़ते हैं, लंबी-लंबी दाढ़ियां रखते हैं, हिन्दी नहीं पढ़ते या पढ़ पाते हैं, हिन्दुओं के खिलाफ उल्टी-सीधी बातें करते हैं, उन्हें काफिर कहते हैं, उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते तो उनसे इतना परेशान होने की जरुरत नहीं । कुछ भी हो, जाने अनजाने उन्होंने भी प्राचीन भारतीय सभ्यता की हिन्दू परंपराओं को खूब अपना रखा है। मसलन शादी में उनकी बीबी भी सुर्ख जोड़ा ही पहनती है। तेरहवीं, तीया, चालीसवां उनके वहां भी होता है। ईद के दिन सारे मुसलमान (शाही इमाम भी) सेंवई खाते हैं, खजूर नहीं। नमाज पढ़ लेने, हज करने या अन्य एक-दो इस्लामी काम कर लेने से हमारे हिन्दू-पन पर जरा भी आंच नहीं आती। बेगम हजरत महल, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम और ए.आर.रहमान की परंपरा के हम हिन्दू हैं। ❑

(- साभार : नवभारत टाइम्स २७.०४.२००२)

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Mohan Pareek

CA

KOTILYA CONSULTANTS LIMITED

BK Market, First Floor
16 B, Shakespespeare Sarani Kolkata 700071
Tel. : (033) 2282-0068 , (033) 2282-0161
Fax (033) 2282-0899
E-Mail : pareekmh@yahoo.com

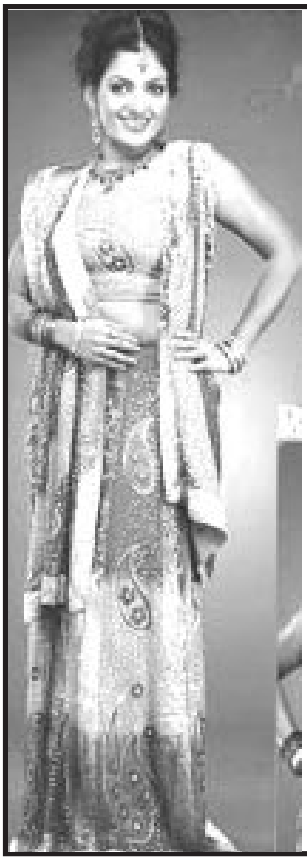

Himmat Barmecha

Patrani®

Speacialist in Embroidery
Sarees & Ghagra Chunni

-:Address :-
72, Burtalla Street,
1st Floor
Kolkata - 700 007

-:Phone No. :-
22727796 / 32933926 /
30620164
Mobile. 98302 37615
Resi: 23566235

इतिहास के संरक्षक– वंशावली लेखक

❑ **रघुवीर सिंह,** पूर्व महाराजा (सिरोही)

चारण, भाट, राव इन्होंने न केवल देश के इतिहास को सुरक्षित रखा अपितु इतिहास को सही समय पर मोड़ भी दिया। यह इनकी विशेषता है। मैं इनके इतिहासकार होने के नाते दो उदाहरण सामने रखूंगा। १३११ ईसवी सन् में दिल्ली के शक्तिशाली सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर आक्रमण किया। उस समय मेरे ही पूर्वज वीरमदेव सोनगरा जालौर के युवराज थे। खिलजी ने १३०७ में असिकगढ़ पर आक्रमण कर वहां के रघुवंशी राजा को परास्त कर दिया था। उसे विवश किया कि उसकी राजकन्या जो दूसरे क्षत्रिय राजकुमार को ब्याही थी, उसको उससे तलाक करवाकर सुल्तान को ब्याहे। उस राजकन्या के साथ उसकी जो पुत्री उस राजकुमारी से जन्मी थी वो भी साथ ही गई, क्योंकि वो छोटी थी। अलाउद्दीन खिलजी ने दोनों को मुसलमान बना कर दत्तक पुत्री का नाम फिरोजा रखा। वो फिरोजा जब बड़ी हो कर खिलजी की फौज के साथ जालौर आई तो वीरमदेव का रूप देखकर मोहित हो गयी और उससे प्रेम करने लगी। उसने कहा यदि मैं पति चुनती हूँ तो इसी को चुनूंगी। जन्म से तो क्षत्रिय थी पर अब उसका मज़हब बदल गया था। वीरमदेव ने कहा कि यह संभव नहीं कि मैं तुमसे शादी करूँ । मैं तारीफ करता हूँ उन चारणों की कि उन्होंने एक दोहा बनाकर वीरमदेव को प्रस्तुत किया। वो दोहा इस प्रकार है,

'' मो माही लाजो भाटिया, कुल लाजे चौहान।
वीरम परणे तुर्कीनी, तो अवलो ऊगे भान ॥''

और उसी के फलस्वरूप वीरमदेव ने बिल्कुल इन्कार कर दिया कि मैं यह शादी नहीं कर सकता। फलस्वरूप युद्ध हुआ।

वंशावली का इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है । इसके बिना इतिहास अधूरा है। वंशावली को जो महत्व भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में दिया गया है ,वो संभवतः विश्व के किसी अन्य देश में देखने को नहीं मिलता।

तारा हुया हुजूर

दूसरा किस्सा है १९११ ईसवी सन का। उस वर्ष इंग्लैण्ड की गद्दी पर जॉर्ज पंचम बैठा और सिंहासन आरुढ़ होते ही अपने साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण भाग भारत में वह आया। उसके आने पर दिल्ली में एक बड़ा समारोह रखा गया। अंग्रेजों ने महाराणा फतेह सिंह जी मेवाड़ से निवेदन किया कि आप भी इस समारोह में आयें। महाराणा साहब सहमत हो गये जाने के लिये। उस समय केसरी सिंह बारहठ एक महान कवि था। उसने कहा कि मेवाड़ की नाक कट जायेगी , यदि महाराजा दिल्ली जाते हैं और अंग्रेजों के दरबार में सम्मिलित होते हैं। यह हिन्दू सूरज का अपमान हो जायेगा। अब वो कैसे महाराणा साहब तक अपनी बात पहुँचाये। उस समय महाराजाओं की विशेष ट्रेन चलती थी। वो स्पेशल ट्रेन उदयपुर से रवाना होकर दिल्ली की ओर चली। केसरी सिंह जी ने खरवा के पास एक तल्ले के अन्दर अपना मोर्चा बनाया। ट्रेन आने के पहले बहुत बड़ा पत्थर उस रेल लाइन पर लुढ़कवा दिया और आगे से लाल झण्डा बता दिया, एक मील दूर से कि यहाँ खतरा है। ट्रेन को रोकना पड़ा। तब घोड़े पर सवार होकर महाराणा साहब के पास जाकर उन्होंने पांच दोहे कहे। प्रथम दोहा उन्होंने महाराणा साहब को कहा,

'' आगे–आगे बादशाह हिन्द हजरा सूर।
अब देखो मेवाड़ पथ तारा हुया हुजूर। ''

आगे तो आप हिन्दुस्थान के हिन्दुवा सूर्य हुए थे (यह उपाधि मेवाड़ के महाराणाओं को ८१५ ईसवी सन् से उपलब्ध है),सूर्य की जगह आपको अंग्रेज क्या टाइटल देंगे, नाइट कमाण्डर साहब ऑफ इण्डिया । सूर्य की जगह तारा बतायेंगे। आपका डिमोशन हो जायेगा। तो महाराणा साहब को समझ में आया और उन्होंने आदेश दिया कि इस ट्रेन को वापिस मोड़ा जाये। अंग्रेजों को बहाना बना दिया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है और वो नहीं गये। यहाँ मैं तारीफ करता हूँ इस सम्पूर्ण वंशवाचक समाज की, जिन्होंने न केवल इतिहास सुरक्षित रखा है,परन्तु सही वक्त पर सही मोड़ भी

दिया है।

क्षत्रिय राजवंश

इतिहास का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि किसी भी शासक को इतिहास का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इतिहास अपने आपको दोहराता है। वंशावली का इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है । इसके बिना इतिहास अधूरा है। वंशावली को जो महत्व भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में दिया गया है , वो संभवतः विश्व के किसी अन्य देश में देखने को नहीं मिलता। अपने शास्त्र बताते हैं कि मानव को पृथ्वी पर आये हुये दो करोड़ सत्यानवे लाख वर्ष हुये हैं और अपनी वंशावली सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा से प्रारम्भ होगी। विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र नासा ने कार्बन डेंटिंग के आधार पर यह निर्धारित किया है कि भगवान राम के समय में नल और नील द्वारा निर्मित राम-सेतु पैंतीस लाख वर्ष पुराना है।

भारत के क्षत्रिय राजवंश चार कुलों में विभाजित थे। सर्वप्रथम सूर्य वंश का भूमि पर राज्य रहा, जिसमें सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम हुये , जिन्होंने रामराज्य प्रणाली की स्थापना की और जो विश्व की चौदह शासन प्रणालियों में सर्वश्रेष्ठ है। आज से ५२८० वर्ष पूर्व महाभारतकाल में चन्द्रवंश का उदय हुआ, जिसमें भगवान श्री कृष्ण, कौरव और पाण्डव हुये। और पिछले २५०० वर्षों से देश पर अग्निवंश का शासन रहा। जिसके परमार, प्रतिहार, चालुक्य अथवा सोलंकी एवं चौहानों ने बारी-बारी से अपने साम्राज्य स्थापित किये।

चौथा ऋषिकुल है। जिसमें गौड़ इत्यादि क्षत्रिय आते हैं। इनका भी भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा, परन्तु इनका खण्डों में राज्य रहा है। इन चारों कुलों में सूर्यवंश की दस प्रमुख शाखायें हैं, जिसमें कच्छावा राजपूत इत्यादि आते हैं। मेवाड़ के महाराणा, जयपुर, जोधपुर और भावनगर के महाराजा इस कुल के वंशज हैं। चन्द्रवंश की भी दस शाखायें हैं, जिसमें यदुवंश, भाटी, जाडेजा, चन्देल एवं बुन्देल इत्यादि आते हैं। अग्निवंश की उत्पत्ति आबू पर्वत पर स्थित आश्रम के अग्निकुण्ड से उस समय हुई, जब भारत की रक्षार्थ महान योद्धाओं की आवश्यकता थी। कुछ विद्वान इतिहासकार इसे यज्ञ द्वारा शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया मानते हैं। संभवतः यह जिन एवं बौद्ध विचारधाराओं से प्रभावित होकर अपने दायित्व भूल गये। इसलिये उनको अपने दायित्वों को निभाने एवं परम्पराओं का अनुसरण करने के लिये ललकारा गया है।

ऋषिकुल- ऋषिकुल की बारह शाखायें हैं। इन सभी को मिलाकर क्षत्रिय कुल की ३६ शाखायें बनी हैं। मैं चौहान वंश का हूँ। सूर्यवंशीय महान धनुर्धर लक्ष्मण के पराक्रमी पुत्र मालव से यह वंश मालव कहलाया। अवन्तिका अथवा उज्जैन में उस वंश का राज्य होने से वो पूरा प्रदेश मालवा कहलाया। आज से २०६७ वर्ष पूर्व इस वंश के महान पराक्रमी सम्राट वीर विक्रमादित्य अपनी विजय पताका फहराते हुये भारत भूमि से बाहर मक्का-मदीना तक गये।

५१६ से ५८६ ईसवी के मध्य हूणों के आक्रमण हुए। इन बर्बर आक्रमणकारियों से देश की रक्षा करने के लिये अग्निकुल की उत्पत्ति हुई। इनमें प्रथम परमार हैं जिनका अर्थ होता है, पहला वार करने वाला। उसको अरभूत (आबू) क्षेत्र की रक्षा करने का दायित्व सौंपा गया। द्वितीय हैं प्रतिहार, जिनको मण्डोर क्षेत्र, तृतीय चालुक्य जिनको पश्चिम एवं दक्षिण भारत एवं चतुर्थ चहुमान को अहिछत्रपुर जो वर्तमान में नागौर कहलाता है, की रक्षा का दायित्व सौंपा गया। उल्लेखनीय है कि इन चारों वंश वीरों ने हूणों के शक्तिशाली साम्राज्य को भारत भूमि से हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त कर दिया।

चौहान- प्रथम चौहान सम्राट वासुदेव हुए जिन्होंने ६३१ ईसवी सन् में सपादलक्ष साम्राज्य की स्थापना की एवं सांभर झील के किनारे शाकम्भरी देवी मंदिर की प्रतिष्ठा की। वासुदेव से मैं चौहत्तरवाँ राजा हूँ और मेरी पूर्ण वंशावली तिथि क्रम में मुझे कंठस्थ याद है। बारहवें शाकम्भरी सम्राट **वाकपतिराज** प्रथम ने ९४० ईसवी सन् में महाभारतकालीन रणथम्भौर, जिसे रणस्तम्भपुर भी कहते हैं, के किले को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर उसका पुनर्निर्माण करवाया। उनके तीन पुत्र हुये । प्रथम, सिंहराज जो शाकम्भरी की गद्दी पर रहे। इनके वंश में अन्तिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान(११७८-११९२ ई.स.) हुए। द्वितीय, लक्ष्मण जिन्होंने ९४३ ईसवी में नाडोल राज्य की स्थापना की। इन्होंने वहाँ आशापूर्णा

देवी की प्रतिष्ठा की। तृतीय, वत्सराज जिसने हरियाणा, हिसार में अपना राज्य स्थापित किया।

सिरोही के राणीमंगा

नाडोल पर २२ पराक्रमी राजाओं ने राज्य किया। इनमें से शोभित ने मालवा के परमार सम्राट भोज के सेनापति को परास्त कर बंदी बनाया एवं महाराव केलण ने ११७७ ईसवी सन् में मोहम्मद गोरी को परास्त किया। उधर महाराव केलण के लघु भ्राता कीर्तिपाल सिंह ने ११८१ सन् में जालौर पर अपना आधिपत्य किया। वहां के स्वर्णगिरि के कारण उस कुल का नाम सोनगरा पड़ा। ११८३ ईसवी सन् में उन्होंने प्रसिद्ध राजधानी किराडू एवं बाड़मेर के समस्त क्षेत्र को अपने राज्य में सम्मिलित किया। महाराव कीर्तिपाल के पुत्र समर सिंह ने जालौर के भव्य दुर्ग का निर्माण करवाया, जिसकी प्रशंसा करते हुए तत्कालीन चीनी यात्रियों ने कहा कि ''मानो पृथ्वी के वक्षस्थल पर मणि उग रहा है।'' जालौर के महाराव समर सिंह के द्वितीय पुत्र माणिंग राय ने १२०६ ईसवी में सिरोही राज्य की स्थापना की और इस गद्दी पर मैं इस समय ३८ वाँ राजा हूँ।

सन् १४२५ में दसवें शासक महाराव सहस्त्रमल ने सिरोही शहर एवं वहां के दुर्ग की स्थापना की। सिरोही तलवार का ही पर्यायवाची शब्द है और यहाँ की तलवारें विश्व प्रसिद्ध हैं। मुझे यह कहते हुये गर्व है कि सिरोही की तलवारें हमेशा रण में चमकती रहीं। हमने कभी पराजय का मुँह नहीं देखा।

५ जनवरी १९४९ को सिरोही राज्य का विलीनीकरण हुआ। सिरोही राज्य के प्रत्येक विवाह, जन्म एवं मृत्यु का रिकार्ड **'राणीमंगा'** रखते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी महाराणियों से ही पुरस्कार प्राप्त करते हैं। हमारे नरेशों के शासन एवं पराक्रम के तिथि क्रम का रिकार्ड **बड़वा** रखते हैं, जो केवल राजाओं से ही पुरस्कृत होते हैं। मुझे यह कहते हुए गर्व है कि महाराव लक्ष्मण राव से लेकर आज तक का पूरा रिकार्ड हमारे पास उपलब्ध है।

करौली में श्रीकृष्ण के वंशज

यदुवंशी वर्तमान महाराजा करौली श्रीकृष्ण से १३८ वीं पीढ़ी हैं। गत ५२८० वर्षों में इन्होंने तीन बार अपनी राजधानी बदली- मथुरा, बाणासुर और करौली। जैसलमेर के भाटी वंश के महारावल भी भगवान श्रीकृष्ण के वंशज हैं और उन्होंने नौ बार अपनी राजधानी बदली । जाडेजा वंश के जामनगर के वर्तमान महाराजा जामसाहेब सताजी तृतीय भगवान श्रीकृष्ण से १३३ वीं पीढ़ी के हैं।

मुझे यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि मुगल शासकों ने भी अपना प्रतिदिन का रिकार्ड रखा और उनके दरबार में ऐसे रिकार्ड लिखने वाले हमेशा मौजूद रहते थे। भारत की एक और विशेषता है कि यहाँ के राव, भाट आदि वंशलेखक प्रत्येक जाति के साधारण से साधारण व्यक्ति का रिकार्ड रखते हैं। मुझे इस बात का पता तब चला जब हमारे मन्दिर के वंशानुगत पुजारियों के बीच विवाद हुआ तो उन्होंने अपना ५००० वर्षों का रिकार्ड मेरे सामने प्रस्तुत किया। यह वंशावलियों का रिकार्ड था जिसके आधार पर मैं निर्णय ले पाया कि किसका हक बनता है मन्दिर के पुजारी पद पर। इसलिये यह विश्व की एक अनोखी विधा जो भारत में उपलब्ध है संरक्षण और सम्मान की हकदार है और सम्माननीय है। ❑

ॐ
विद्या भारती
चित्तौड़ प्रान्त

विद्या भारती चित्तौड़ प्रांत का उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक, चारित्रिक गुणों का विकास कर राष्ट्र समर्पित जीवन का निर्माण करना है। विद्यार्थियों के गुणों के विकास के लिए संस्था द्वारा ११ जिलों में ५ वरिष्ठ माध्यमिक,५६ माध्यमिक, ८७ उच्च प्राथमिक,६७ प्राथमिक कुल २१५ विद्यालयों में २,६३२ आचार्य, आचार्याओं द्वारा ७३,३८६ छात्रों को अध्यापन कार्य कराया जा रहा है। वनवासी एवं पिछड़े वर्ग के छात्रों को निःशुल्क शिक्षा एवं संस्कारित करने के लिए २१०-एकल विद्यालय तथा १३७-संस्कार केन्द्र प्रांत में चलाए जा रहे हैं।

प्रांत में दो अर्द्ध आवासीय विद्यालय चलते हैं। जिसमें से एक कोटा में है, इसमें १२२ भैया रहते हैं, दूसरा अर्द्ध आवासीय विद्यालय कोठारा (बांसवाड़ा) में निःशुल्क चलता है। इस विद्यालय में १४५ छात्रों को ६ आचार्यो द्वारा अध्यापन कराया जाता है।

कक्षा १० बोर्ड राज्य की वरीयता सूची में
भैया नवीन सांखला,
१६ वां स्थान
विद्या निकेतन, फतहनगर

जिला वरीयता सूची में भैया बहिनें

अजमेर - १०	चित्तौड़-७
उदयपुर- ४	डूँगरपुर-१
बांसवाड़ा-१	कोटा-१

प्रो. रमेश चन्द्र शर्मा
अध्यक्ष

रामप्रकाश बंसल
मंत्री

TIN No. 08162602926
STC
STD 02925
Shop . 222177
9414418333
SHRIPATI TRADING COMPANY
General Marchant & Comission Agent
Naya Bazar, Phalodi-342301 Jodhpur (Raj)

Ramesh Jain
Santosh Jain
Vimal Jain
9830022673
9331655551
9330555551
श्री MKS
SHREE MARUDHAR KESHRI SAREES PVT. LTD.
Specialist in : Lahanga-Chunni
Pila Chundari & Fancy Sarees
Shree Arcade, No. 2,Jogendra Kaviraj Row, 1st Floor,
Near Kalakar Post Office, KOLKATA-700 007

वंशावली लेखन तथा वर्तमान चुनौतियाँ

❑ डॉ. सुखदेव राव

भारतीय संस्कृति में राव समाज की महत्ता प्राचीन काल से ही रही है और इन्हें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दायित्व का गौरव प्राप्त रहा है। संपूर्ण विश्व में कदाचित् एक भारतीय संस्कृति के अंतर्गत ही नृवंश-विवरण निरंतर लिखा जाता आ रहा है, जो यहां के आदि-मनीषियों के बेजोड़ चिंतन का परिणाम है। इस भारतीय परंपरा में 'जन्म विवरण' राव समाज रखता है, जबकि ' मरण विवरण' हरिद्वार का पंडा समाज। इस प्रकार दो स्त्रों में नृवंश-विवरण की परंपरा यहां अक्षुण्ण रही है , जिनमें से एक का श्रेय राव समाज को प्राप्त है। इस प्रकार का नृवंश विवरण केवल वंश जाति के इतिहास को ही सुरक्षित नहीं रखता है, बल्कि देश-समाज के इतिहास को भी सुरक्षित रखता है।

भारत की विशेषता

यह कार्य अनादिकाल से सिर्फ और सिर्फ हमारे हिन्दुस्तान में ही हो रहा है, अन्य देशों में ऐसी परम्परा देखने को बहुत कम ही मिलती है। जहां के लोग वंश परम्परा में विश्वास नहीं करते अपनी संपत्ति एक कुत्ते के नाम पर वसीयत लिख देते हैं, वे क्या जानेंगे वंशावली का महत्व ? बस यही बात सोचने की है। हमारे आदि मनीषियों ने बहुत सोच-समझकर इस परम्परा की शुरुआत की, पर देश का जो सामाजिक संगठन हजारों सालों से चला आ रहा था, वह आधुनिक युग में आकर छिन्न-भिन्न हो गया और उसका स्वरूप एकदम ही बदल गया। हरेक समाज, जो अपने विशेष दायित्व और वृत्ति से जुड़ा हुआ था, आधुनिकता के दबाब के कारण जुड़ा न रह सका। परिवर्तन के इस दौर में हरेक समाज के दायित्व और वृत्तियां प्रभावित हुईं। जो लोग कालांतर में हिन्दू से मुसलमान बने वे वापस अपनी जड़ों को ढूंढने लगे और इसी के परिणाम स्वरूप वंशावली लेखन परम्परा की महत्ता पुनः महसूस हुई। वंशावली लेखकों के मार्फत ही हम यह जान सकते हैं कि दुनिया में सबसे पुराना धर्म हिन्दू ही है। हिन्दू धर्म की प्राचीनता की पुष्टि वेदों और धर्म ग्रथों के अलावा कहीं होती है तो वह सिर्फ वंशावली के मार्फत ही होती है।

बदलते समय का प्रभाव

स्वतंत्रता के पश्चात् सबको विशेष कर्मबंधन से मुक्ति मिल गई। परिणामस्वरूप विभिन्न जाति-समाज अपने-अपने विशेष दायित्व से मुक्त होकर मनचाही आजीविका की ओर अग्रसर हुए। इस परिवर्तन का प्रभाव हर समाज पर पड़ना स्वाभाविक था, अतः राव समाज पर भी पड़ा। राव समाज के लोग भी अपनी वृत्ति छोड़कर आजीविका के अन्य साधन अपनाने लगे। परिणामतः राव समाज की पारंपरिक गतिविधियां निरंतर कम होती रहीं। किंतु परंपरागत दायित्व का निर्वहन आज भी समाप्त नहीं हुआ है।

वंशावली परंपरा का श्रीगणेश पृथ्वी के सृजन के साथ ही हो गया था। पहले वंशावली मौखिक परम्परा में चलती थी, ठीक उसी तरह जिस तरह हमारी भारतीय शिक्षा पद्धति में वेदों और पुराणों का मौखिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चला। पर उसके बाद समय के बदलने के साथ कुछ राजाओं, महाराजाओं, कीर्तिधारी लोगों, महापुरुषों आदि के बारे में वक्त के अनुसार ताम्रपत्र, भोजपत्र, शिलालेख आदि का प्रयोग होता रहा और जब से कागज का आविष्कार हुआ तब से वंशावलियां कागजों की बही बनाकर लिखी जाने लगी।

पद्धति लेखन

हिन्दू समाज की वंशावलियों का लेखन अलग पद्धति से होता है, जबकि मुसलमानों की वंशावली का लेखन अलग पद्धति से होता है। हिन्दुओं में चाहे किसी भी जाति की वंशावली हो, शुरुआत ॐ, त्रिशूल, स्वस्तिक या फिर अपने किसी इष्ट देव या देवी का नाम लिखकर की जाती है, उसके बाद कुछ दोहे लिखे जाते हैं, जैसेः-

सदा मनोरथ सुभ करण, वाणी अंधर वेस।
सारा पैली सिंवरिये, गवरी पुत्र गणेस ।।
सदा भवानी दाहिनी, सनमुख रहत गणेस।
पांच देव रक्षा करो, ब्रह्मा विष्णु महेस ।।

इस तरह कई दोहे लिखने के बाद वंशावली लेखन का कार्य शुरू होता है, जिसकी शुरुआत ऐसे होती हैः-

आद ओंकार अेक इंड उपाया, इंड फोड़ जमी असमान रचाया।
ब्रह्मा, विष्णु, महेस री माया, सब देवतां नै धंधे लगाया ।।

श्री परमेसरजी अखे बड़ रा पान में पोढ़ीया नै परीथवी परळै

हिन्दुओं में चाहे किसी भी जाति की वंशावली हो, शुरुआत ॐ, त्रिशूल, स्वस्तिक या फिर अपने किसी इष्ट देव या देवी का नाम लिखकर की जाती है, उसके बाद कुछ दोहे लिखे जाते हैं।

'' हर वंशावली लेखक को यजमान अपने घर बुलाकर अपने परिवार के सारे नाम तो लिखवाते ही हैं पर जन्म-मरण, शादी-विवाह, औसर-मौसर आदि का विवरण भी लिखवाते हैं तथा नाम लिखवाई में रावजी को सोना, चांदी, आभूषण, हाथी, घोड़े , ऊंट , कपड़े , सिरोपाव व लाख पसाव देने की परम्परा सदियों से रही है । ''

काळ भई। जद जाग ने जोवियो तो पिरथवी नहीं, जळ नहीं, आकास नहीं, सूरज नहीं, चंदरमा नहीं .....।

इसी तरह ऋषि कुल से होते हुए आम आदमी की वंशावली तक का ब्यौरा मिलता है।

वंशावली लेखकों ने जो कुछ भी लिखा वह वेदों और पुराणों के काफी नजदीक है। कहने का आशय यह है कि वशांवलियों में सृष्टि सृजन से लेकर अब तक जो कुछ भी लिखा मिलता है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज तो है ही, साथ ही हमारे इतिहास और साहित्य की वास्तविक परतें भी खोलता है।

इसी तरह मुस्लिम वंशावली लेखकों की वंशावलियों में अलग पद्धति देखने को मिलती है। कालांतर में जब फिरोज तुगलक के समय नागौर क्षेत्र में व्यापक स्तर पर इस्लामीकरण हुआ तो हिन्दू छीपा समाज को मुसलमान बना दिया गया। छीपे समाज की वंशावली को देखने से स्पष्ट होता है कि वे ही भाट जो हिन्दू परम्परा के पोषक थे, मुसलमान बनने के बाद कुरान की आयत एवं अमीर खुसरो के कलाम से वंशावली लिखना प्रारंभ करते हैं। सर्वप्रथम गणेश वंदना या इष्ट देव की वंदना की जगह अब 'बिस्मिल्लाह उर रहमान' लिखा जाने लगा।

दो पेठ

इसी तरह वंशावली लेखन पद्धति में कंवारी पेठ व परण्योड़ी पेठ पद्धतियाँ भी हैं। कंवारी पेठ का आशय होता है कि परिवार में जो मुखिया है उसके तमाम परिवार के नाम आने के बाद उसकी पत्नी का नाम आता है जबकि परण्योड़ी पेठ में पति के तुरन्त बाद पत्नी का नाम, उसका गोत्र, उसका गांव आदि लिखा जाता है। इसी तरह लेखन की शुरुआत में जाति, देवता, साखा, गौत्र, वीर, परवर, कटारी, वेद, कुलदेवी, खेत्रपाल, वरणदेवी, गुरु, कुल वृक्ष आदि चीजों का विवरण भी लिखा जाता है जिससे उस व्यक्ति की तमाम बातों की जानकारी हो जाती है कि अमुक व्यक्ति की क्या पहचान है?

हर वंशावली लेखक को यजमान अपने घर बुलाकर अपने परिवार के सारे नाम तो लिखवाते ही हैं पर जन्म-मरण, शादी-विवाह, औसर-मौसर आदि का विवरण भी लिखवाते हैं तथा नाम लिखवाई में रावजी को सोना, चांदी, आभूषण, हाथी, घोड़े, ऊंट, कपड़े, सिरोपाव व लाख पसाव देने की परम्परा सदियों से रही है। यह सारी बातें रावजी अपनी एक निश्चित शैली व पद्धति के रूप में मिति, वार व संवत् सहित लिखते हैं। इन बहियों में लिखने की तकनीक बिल्कुल निराली है। वंशावली लिखने का कार्य हर कोई नहीं कर सकता। उसका परम्परागत रूप से बना बनाया तरीका है। इन लिखी हुई बहियों को बांचने अथवा पढ़कर सुनाने की भी तकनीक है। इसे विरासत या धरोहर के रूप में सीखने का अभ्यास करना पड़ता है।

कुर्सीनामा

वंशावली लेखन की भी दो तरह की विधियां रही हैं। एक तो वंशावली लेखक बही में सीधी लाईन खींच कर उसमें उस वंश की आने वाली तमाम पीढ़ियों के नाम लिखता रहता है तथा पीढ़ियां आगे से आगे चलती रहती हैं और दूसरा तरीका होता है वंश वृक्ष बनाने का। वंश वृक्ष का रावों की भाषा में दूसरा नाम 'कुर्सीनामा' भी है। जब भी कभी न्यायालयों या अदालतों में जरूरत पड़ती है तो रावजी का कुर्सीनामा ही मान्य होता है। इस 'कुर्सीनामा' यानि 'वंशवृक्ष' का महत्व आज से ही नहीं सृष्टि के सृजन से ही रहा है। ऐसा माना गया है कि भगवान ब्रह्मा ने ही इस वंशवृक्ष की नींव रखी और उन्होंने मूल पुरुष वृक्ष को माना और शाखाओं को तीनों देव और पत्तों को सृष्टि, तभी तो कबीर ने लिखा है-

अक्षर पुरुष एक पेड़, निरंजन बाकी डार।
तीनो देव शाखा है, पात रूप संसार।।

इससे यह लगता है कि वंशावली लेखन में वंश वृक्ष की परम्परा सनातन सत्य की आधारशिला है, कुल की वाहिका है, धर्म की रक्षिका है। जिस पर हम वर्ग कर सकते हैं, जिसको सुरक्षित रखकर हम अपने-आप को धनी समझ सकते हैं। वर्तमान तक आते-आते हमारे पास यही एक ऐसी अनमोल धरोहर बच गई है जो विदेशी लोगों के हत्थे नहीं चढ़ी। हम सभी जानते हैं कि हमारे देश का अनमोल साहित्य का खजाना मुस्लिम

काल में हमलावरों द्वारा नष्ट कर दिया गया, जला दिया गया। रही सही कसर आधुनिक शिक्षा ने पूरी कर दी और कथित प्रबुद्ध वर्ग का तो वंशावली परंपरा से मोह ही भंग हो गया। वंशावली लिखने वाले और सुनने वाले, दोनों ही सामाजिक अभियान चलाकर इसे समाप्त करने पर उतारु हो गए। इस परंपरा के शिथिल होने का एक कारण संयुक्त परिवारों का टूटना भी है। सामाजिक व्यवस्था भी आज प्रभावशाली नहीं रह गई। आज सामाजिक व्यवस्था समाज संचालित न होकर व्यक्ति संचालित हो गई। इसी कारण आज वंशावली परम्परा भी समाज आश्रित न होकर व्यक्ति आश्रित हो गई है।

राष्ट्रीय एकता के वाहक

वैसे देखा जाए तो राष्ट्र की ही सबसे छोटी इकाई है व्यक्ति। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र। जब व्यक्ति की सोच बदलती है तो राष्ट्र की सोच बदलती है। जब व्यक्ति कुछ अच्छा करने लगता है तब राष्ट्र का विकास होता है और जब व्यक्ति ही बम फेंकने लगता है तो राष्ट्र को नुकसान पहुंचाता है। ऐसे हालातों में वंशावली लेखन परम्परा ही व्यक्ति की सोच बदल सकती है, दूसरी कोई नहीं। उसके लिए आपको आज से करीब पचास साल पूर्व के माहौल में जाना होगा। उस समय आज की तरह ना तो मनोरंज के साधन थे, न ही घर-घर टीवी थे। बड़े शहरों को छोड़ दें तो सिनेमा भी नहीं था और जहां था वहां अब जैसी सोच नहीं थी। लोग अपने बच्चों को सिनेमा देखने पर दण्ड भी देते थे। उस काल में, उस जमाने में ग्रामीण इलाकों और दूर-दराज की ढाणियों तक सम्पर्क सूत्र क्या था? भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संवाहक कौन था? घर-घर शिक्षा और संस्कारों का दीप जलाने वाला कौन था? लोगों को उसके इतिहास और विकास का ज्ञान कराने वाला कौन था? उसके बुजुर्ग अच्छे थे या बुरे, युद्ध में भागे या सीना तानकर खड़े रहे, यह आभास कराने वाला कौन था?उस आबादी में ब्राह्मणों के बाद पढ़ा-लिखा और विद्वान कौन था? तो सिर्फ और सिर्फ एक ही नाम सामने आता है वह है 'राव'। राष्ट्रीय एकता व सामाजिक संरचना की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है ?

राव की बही से ही पता चलता है कि राम का नाम अपने पिता के नाम पर 'दाशरथी' और माता के नाम पर 'कौशल' है। बहियों में ही यह लिखा गया कि इस वंश का नाम 'इक्ष्वाकु वंश' है और बहियों से ही यह जानकारी मिलती है कि इसी वंश का नामधारी व्यक्ति राजा रघु था जिसके नाम पर 'रघुकुल' चला। अगर वंशावली नहीं लिखी जाती तो शायद आज राम को हम अलग रूप में जानते, रघु को अलग रूप में, इक्ष्वाकु को अलग रूप में और दाशरथी को अलग रूप में जानते। या नहीं भी जानते। बहियों से ही यह पता लगा कि ये सब एक ही वंश के हैं। इससे बड़ी राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा करने वाली वंशावली लेखन परम्परा के अलावा दूसरी चीज मैंने अभी तक नहीं देखी।

परम्परा पर संकट

'वंश' अस्तित्व है और 'वंशज' अस्मिता और इस अस्तित्व का गवाह है 'राव'। हिन्दू संस्कृति की यह खासियत है कि यहां प्राचीन काल से ही वंश-परम्परा की निरंतरता के दर्शनों के लिए किसी भी वंश में जन्मने वाली संतानों के नाम राव लोग अपनी बहियों में लिखकर उस वंश की निरंतरता का लेखा-जोखा रखते हैं। पर वक्त के बदलाव के साथ राव लोग भी दूसरे काम-धंधों के प्रति उन्मुख हुए। नए युग में 'फास्ट लाइफ' जीने वाले लोगों की अब कोई इच्छा नहीं अपने बुजुर्गों (फोर-फादर्स) की वंशावली जानने की। शायद उनकी नजरों में कोई फायदा भी नहीं। वंशावलियां तो राजा-महाराजाओं की, जग प्रसिद्ध खानदानों की और बड़े-बड़े लोगों की होती हैं। बस सिर्फ यही सोच गलत है। वंशावली हर व्यक्ति की होती है। इसलिए वंशावली के महत्व को कभी नहीं नकारा जा सकता ।

आज हम देखते हैं कि धर्म और ज्योतिष के क्षेत्र में काम करने वाले लोग आधुनिक युग के अनुकूल स्वयं को ढालते हुए टीवी पर अपने कार्यक्रम दे रहे हैं। 'आस्था' जैसे धार्मिक चैनल तक अस्तित्व में आ गए हैं जिस पर प्रवचन और भक्ति संगीत घर बैठे देख-सुन सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि 'फास्ट लाइफ' के इस युग में, जबकि वक्त की कमी और गंतव्य की दूरी मनुष्य की समस्या बन चुकी है, अपने काम को युगानुकूल बनाना अति आवश्यक है।

राव समाज का मुख्य कार्य तो वंशावलियों का लेखा-जोखा रखना ही है, उनके पास विरुद बखानने की कला भी है, काव्य रचना की प्रतिभा भी है और मनोरंजक किस्से, कहानियां और प्रसंग-दृष्टांत सुनाने की युक्ति भी है। इन गुणों के कारण ही वो अपनी साख और पैठ रखता आया है। पर अब उसे इस पैठ को बचाये रखने के लिए संघर्ष की आवश्यकता है। राष्ट्रीय एकता और सामाजिक संरचना में जो महत्व रहा है उस पर अब खतरा मण्डराने लगा है। जब पहले रावजी घर आते थे तो परिवार वाले खुशी से झूम उठते थे, रावजी को ऊंचे मांचे पर पथरणा बिछाकर बिठाया जाता था। सारा कुनबा इकट्ठा होता था। जो लोग नाराज होते वे भी रावजी के आने पर राजी हो जाते। भाइयों में वैर-विरोध खत्म हो जाता। पर वर्तमान में कुछ संकट के बादल मंडराने लगे हैं । फलस्वरूप वंशावली लेखन में शिथिलता आने लगी है।

ऐसा नहीं कि इसमें राव दोषी नहीं हैं। राव भी उतने ही दोषी हैं जितने यजमान। रावों को भी अपने ज्ञान और अनुभव में पहले की तरह सुधार करना पड़ेगा। खोई हुई अस्मिता जगानी पड़ेगी। अपने व्यवहार को बदलना होगा, चरित्र को सुधारना होगा, यजमानों में विश्वास पैदा करना होगा। उनका मार्गदर्शन करना होगा, उन्हें नई राह दिखानी होगी। ❑

-डी २१४, रामेश्वर नगर, बासनी, ***जोधपुर***
(राष्ट्रीय महामंत्री-वं.स.सं.संस्थान)

वंशवाचकों की उपलब्धियाँ और समस्याएँ

❑ नवरतन सिंगलिया

जब विश्व में अन्य देश अपनी सभ्यता व संस्कृति के बारे में अनभिज्ञ थे तब इस भारत वर्ष में सभ्यता व संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु दक्ष व्यक्तियों का एक दल अपनी योजना को अंतिम रूप दे रहा था।

ऋषि वंशी वंशवाचकों की भारतीय समाज के लिये अद्वितीय उपलब्धियाँ रही हैं। वहीं वर्तमान की वैश्विक आंधी में अपनी परंपरा व अस्तित्व बचाने हेतु संघर्षरत हैं।

जिस प्रकार एक माँ अपने लाडले के लालन पालन में सब कुछ न्यौछावर कर देती है, यहाँ तक कि अपना सुख भी त्याग देती है, इसी तरह इन ऋषि वंशियों ने भी अपना स्वयं का ध्यान न रखकर समाजहित, देशहित कार्य करते-करते सब कुछ अर्पण कर दिया।

हमने हेरोडोट्स का नाम इतिहासकार के रूप में सुना है। वह यूरोपीय इतिहासकार रहा होगा। जब विश्व में अन्य देश अपनी सभ्यता व संस्कृति के बारे में अनभिज्ञ थे तब इस भारत वर्ष में सभ्यता व संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु दक्ष व्यक्तियों का एक दल अपनी योजना को अंतिम रूप दे रहा था। इन्हीं योजनाकारों की योजना कृति रूप में धरातल पर उतरी, धीरे-धीरे जिसने एक जाति(वर्ग) का स्थान ले लिया। आज उन्हीं योजनाकारों को वंशवाचक या देशज इतिहासकार के रूप में जाना जाता है।

प्रत्येक समाज का वंशवाचक निश्चित होता है। जिस समाज का वंशवाचक नहीं है, उस समाज को आज भी भारतवर्ष में मान्यता नहीं है ।

एक सूत्र में बांधा

जिस प्रकार ब्राह्मणों में छह न्यात, वैश्वों में चार न्यात होती हैं, उसी प्रकार इन वंशवाचकों की भी नौ न्यात होती हैं। ये सभी इतिहास लेखन का ही कार्य करते हैं। ये बड़वा, राव, राणीमंगा, भाट, जागा, बागौरा, भूणा, मारू, कैदारा के नाम से जाने जाते हैं। इन्हीं में से मुसलमान बनकर यही कार्य करने वाले मिरासी कहलाते हैं। अंचल व प्रान्तानुसार नामों में भिन्नता मिलती है।

वंशवाचकों ने भारतीय समाज को एक सूत्र में बांधने का राष्ट्रीय कार्य किया है। यही उनकी राष्ट्रीय उपलब्धि है। वंशवाचकों का महत्व निम्न प्रकार समझा जा सकता है-

१. धर्मरक्षक के रूप में
२. इतिहास रक्षक
३. संस्कृति पोषक के रूप में
४. साहित्य मर्मज्ञ के रूप में
५. रक्त शुद्धता प्रणाली विकसित करने में
६. सामाजिक समन्वय
७. चलता-फिरता वैवाहिक विश्वविद्यालय
८. न्याय रक्षक
९. जन्म,मृत्यु,मूलनिवास पंजीकरण का गैरसरकारी कार्यालय
१०. जनगणना कार्यालय (गैर सरकारी)

हिन्दू धर्म को सहिष्णु व चिरायु बनाने में वंशवाचकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय इतिहास में त्याग, बलिदान, शौर्य, सफलता की गाथाओं को संरक्षित करने का सार्थक प्रयास कालांतर से यही वर्ग करता आ रहा है। अपनी इतिहास लेखन शैली के कारण हर बात को समझने व समझाने में वे सफल रहे हैं। आज इन्हीं की लिखित बहियों से पता चलता है कि किस समय कहाँ पर किसका शासन रहा है, उस समय का रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, वेशभूषा व शासन की व्यवस्था कैसी रही होगी। इन सभी बातों का उल्लेख वह अपनी बहियों में करते हैं जो कि प्रामाणिक दस्तावेज हैं। इस प्रकार ये अपनी सभ्यता व संस्कृति के पोषक थे। कर्म बदलने के आधार पर अपनी पहिचान किस प्रकार बदलती है, इनकी बहियों से आसानी से जाना जा सकता है।

निश्चित वंशवाचक

प्रत्येक समाज का वंशवाचक निश्चित होता है। जिस समाज का वंशवाचक नहीं है, उस समाज को आज भी भारतवर्ष में मान्यता नहीं है। किसी व्यक्ति का जन्म, मृत्यु, जाति, मूल निवास, वंश, कुल, प्रवास की अद्यतन जानकारी का एकमात्र पुरातन आधार इन्हीं के पास उपलब्ध है। वंशवाचक भारत के प्रत्येक नागरिक व घर से संबंध रखने वाली गैर सरकारी जाति जनगणना का कार्यालय है। जातियों में आपसी समन्वय का कार्य

पुनर्स्थापित हो वंश परम्परा

सृष्टि की रचना के साथ ब्रह्माजी ने एक अद्भुत परम्परा का प्रचलन किया था, जिसका बाद में वंशावली लेखन नामकरण किया गया। इसका जिम्मा वंश लेखक समाज को दिया गया, जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नामों से जाना जाता है। आदि काल से चली आ रही परम्परा आज दिन तक अनवरत जारी है। कुछ काल खण्डों में उक्त परम्परा विलुप्त होने के कगार पर जा पहुँची किन्तु किसी न किसी प्रकार बची रही।

उक्त परम्परा से समाज, परिवार एवं देशवासियों को अपने गौरवशाली पुरखों के जन्म से लेकर मृत्यु तक का समस्त विवरण तो प्राप्त होता ही है, साथ ही देश की सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों का भान भी होता है। परम्परा की निरन्तरता से समाज में देशभक्ति का जज्बा तो जाग्रत होता ही है साथ ही एक काल खण्ड में आक्रान्ताओं द्वारा घर से बेघर कर दिये गये हमारे भाइयों की पुनः घर वापसी में उक्त विधा अटूट सम्बल प्रदान करती है। इस परम्परा की विधि सम्मत मान्यता भी है। समय-समय पर जब कभी राजा-महाराजा या गरीब से गरीब व्यक्ति के बीच कोई विवाद उत्पन्न हुआ तो वंश लेखकों ने अपने पोथी-पुराण से निष्पक्ष रूप से मार्गदर्शन देकर इसे सुलझाने का प्रयास किया।

वंश लेखकों का पोथी पुराण समाज का दर्पण है। वंश लेखकों की सजग चेतना वर्तमान एवं भविष्य की प्रशस्ति है। वंश लेखन की परम्परा समाज का स्पर्श बिन्दु है। इसमें लोक मंगल का प्रच्छन्न अस्तित्व विद्यमान है। वंश लेखक अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर समाज को जाग्रत कर युग-युग तक कालजयी यश अर्पित करता है। वंश लेखन की परम्परा, वंश लेखकों का धर्म और जीवन की सार्थकता है। उक्त परम्परा से राष्ट्रानुराग, समाज को दिशा-बोध और स्वच्छ जीवन शैली प्रदान होती है।

हमारी सभ्यता संस्कृति में समय व समाज की चेतना का मूल स्वर, उक्त पोथियों में ही उद्भाषित हो रहा है। दुःखद स्थिति है कि आज सच को सन्निपात हो गया और संस्कृति व संस्कार दुबकने लगे हैं। इस मूल्यहीन युग में शाश्वत जीवन मूल्यों के संरक्षण में वंश पुराण की पोथी ही एक आशा की किरण है। इस ऋषितुल्य साधना में लगे तपस्वी साधकों से कर्तव्य के प्रति मेरा एक विनम्र अनुरोध है, कि मानव जीवन में वंश लेखकों का महत्व उसी तरह है, जैसे शरीर के लिये भोजन। हमारे शरीर को जब संतुलित आहार मिलता है, तभी यह पूर्ण स्वस्थ रहता है।

इसी तरह मानवता की गरिमा को बनाए रखने के लिये कर्तव्य पालन या जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन भी अति आवश्यक है। यदि हम धर्म की भाँति कर्तव्य पालन के प्रति समर्पित रहें, तो कोई कारण नहीं कि इस मार्ग में बाधा आए। जिस प्रकार धर्म पालन से हमें आत्मिक सुख शान्ति मिलती है, उसी प्रकार कर्तव्य पालन से हमें अपार सन्तोष मिलता है। जब हम कर्तव्य के प्रति सचेष्ट रहेंगे, तब अधिकार हमें स्वतः हस्तगत होंगे। कर्तव्य बोध के अभाव में परिवार के जिम्मेदार लोगों की बात का प्रभाव उनके बच्चों पर नहीं पड़ता। अधिकार की अनावश्यक लालसा अपने से 'अपनों' को दूर करती है। कर्तव्य में प्रगति, समृद्धि और व्यक्तित्व निर्माण की संभावनाएं छिपी होती हैं। यह एक अवसर है अपनी क्षमता और सामर्थ्य प्रदर्शित करने का। जबकि अधिकार, किये गये कर्तव्य पालन के परिणाम स्वरूप निर्मित होता है। जीवन में कर्तव्य और अधिकार का समान रूप से महत्व है, क्योंकि इन दोनों का सम्बन्ध बहुत ही निकट का है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे तो परिवार, समाज और राष्ट्र ...शेष पृष्ठ ६३ पर

भी इन्हीं के कंधों पर टिका रहता था। किसी को वर-वधू की तलाश में भटकना नहीं पड़ता था क्योंकि वंशवाचक वैवाहिकी का चलता-फिरता विश्वविद्यालय होते थे। राजा महाराजा के समय उत्तराधिकारी का चुनना, पैतृक संपति का बंटवारा, दत्तक लेने आदि विवाद होने पर इन्हीं की ओर न्याय की आशा लगाये देखना पड़ता था।

आज के परिप्रेक्ष्य में यह परंपरा धीरे-धीरे विलुप्त होने के कगार पर है। कुछ व्यक्ति जुगनू की भांति कार्य तो कर रहे हैं पर इनके सम्मुख अपनी समस्याओं का भी अंबार लगा हुआ है। इनकी प्रमुख समस्याएँ निम्न हैं -

१. सामाजिक उपेक्षा
२. सम्मान में कमी
३. कार्यहीनता का बोध
४. घुमक्कड़ जीवन से उदासीनता
५. शिक्षा की कमी
६. चिन्तनीय आर्थिक स्थिति
७. प्रकाशित साहित्य की कमी
८. हस्तलिखित साहित्य अमान्य

९. आपसी समन्वय का अभाव

१०.ऊँच-नीच की भावना (नौ न्यातों में)

आज के इतिहासकार इन वंशवाचकों की बहियों को आधार बनाकर अपना शोधपत्र, रचना, लेख प्रकाशित करवाते हैं पर विडंबना देखिये कि इनसे प्राप्त सामग्री को अपनी मिल्कियत बनाकर पेश करते हैं। इनके नाम का कहीं भी उल्लेख करना तो दूर उल्टा दोषारोपण करते हुये पाया गया है। अपनी आर्थिक तंगी व एकजुटता (संगठन) की कमी के कारण ये प्रतिकार नहीं करते।

इनका कार्य (ग्राम, पंचायत, पटवारी, तहसील) सरकार ने छीनकर इनकी तो कमर ही तोड़ दी है। इनका घुमक्कड़ जीवन इनके विकास व शिक्षा में बाधक बना जिससे शिक्षा की कमी हो गई। शिक्षा में कमी व प्रशिक्षण के अभाव में ये पिछड़ते गये, परंपरा में निखार लाने में असफल रहने लगे, जिससे सम्मान में कमी आई तथा वंशवाचक कर्त्तव्यविमुख होकर कार्यहीनता का बोध करने लगे।

नौ न्यातों में धीरे-धीरे इतनी दूरियाँ पैदा हो गई कि इन दूरियों के कारण इनमें ऊँच-नीच की भावना इतनी प्रबल हो गई कि अब इनमें आपसी समन्वय ही समाप्त हो गया।

घुमक्कड़ वृत्ति होने से जागीर में मिली कृषि योग्य भूमि भी आजीविका का साधन नहीं बन सकी। ❑

एच.२५०, आजाद नगर, भीलवाड़ा

पृष्ठ ६२ का शेष... की सन्तोषजनक प्रगति होना निश्चित है। कहा जाता है कि जब दस कर्तव्य करेंगे, तब एक अधिकार बनता है। कर्तव्य और अधिकार का सन्तुलन बनाये रखना सुखी जीवन का मूल मंत्र है। निज स्वार्थों से हटकर जब हम एक दिशा में विचार करेंगे, तो पायेंगे कि समृद्धि का मार्ग भी कर्तव्य पथ से होकर गुजरता है । कर्तव्य पालन मानव प्रकृति है, यह विचार हमें असीम सुख देता है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमें अपने कर्तव्यों को नजर अंदाज नहीं करना है, अन्यथा हमारे जीवन को अशान्ति, अभाव और समस्याएं आ घेरेंगी, जिनसे हमें बचना है। कर्तव्य पालन में अपनत्व एवं मिठास होता है, हम एक-दूसरे के निकट होते हैं। साथ ही मानवता का अर्थ जिम्मेदारियों और कर्तव्य पालन से ही पूरा होता है। इसके महत्व को जानना हमारे लिए इसलिए और भी आवश्यक है, क्योंकि कर्तव्य पालन ही हमारे जीवन को सार्थकता प्रदान करता है।

आज समय की आवश्यकता है कि वंश लेखन की परम्परा का संरक्षण एवं संवर्धन करते हुए इसकी सम्पूर्ण पुनर्स्थापना में सभी अपना अमूल्य योगदान दें एवं हमारे गौरवशाली भारत देश की इस साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उन्नति की प्रतीक वंश लेखन परम्परा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करें। ❑

– महेन्द्र सिंह बोराज

(राष्ट्रीय अध्यक्ष-वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान)

''सभी प्रकार की त्वरित बैंकिंग सेवाओं एवं सुविधाओं के लिए सदैव तत्पर''

चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.

पाथेय कण (पाक्षिक) के देशज इतिहासकार अंक (वंशावली लेखक) विशेषांक के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

पूर्णतः कम्प्युटरीकृत वातानुकूलित शाखायें:-

चित्तौड़गढ़ 01472-248880,249394
निम्बाहेड़ा 01477-224660
चन्देरिया 01472-255033
बेगूं 01474-220066

-: शुभेच्छु:-

ऋषभ खुराना – मुख्य कार्यकारी अधिकारी
डॉ.दामोदर लाल लढ़ा – उपाध्यक्ष
सीए आई.एम.सेठिया – अध्यक्ष

एवं संचालकगण बी.एल.शर्मा, जानकी लाल भण्डारी, ईश्वर दयाल सुहालका, दिनेश शिशोदिया, अनिल शिशोदिया, दलपत तातेड़, बुधरमल भोजवानी, श्रीमती शशि माथुर, हेमन्त जैन एवं सीए नीतेश सेठिया

वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान एक सिंहावलोकन

राम प्रसाद

ईसवी सन् २००७ की गुरुपूर्णिमा को मुझे एक सामाजिक कार्यकर्ता के नाते से भरतपुर जिले के गुलपाड़ा ग्राम की मस्जिद में उस इलाके के पढ़े लिखे मेव मुसलमानों से वार्तालाप हेतु आमंत्रण मिला । उस छोटे ग्राम की विशालकाय मस्जिद में आये हुए मेवों से मैंने वार्तालाप करते हुए कुछ प्रश्न पूछे, जैसे इस्लाम को ग्रहण करने से पूर्व आपकी जाति क्या थी ?, गोत्र कौनसे थे ? और अपने हिन्दू पुरखों के विषय में कितने लोग जानते हैं ? उनमें से कुछ लोगों ने बिना झिझक के सभी प्रश्नों का सही उत्तर दिया । मेरे मन में आया कि मुसलमान होने से पूर्व की जाति, गोत्र, पुरखों के नाम और इस्लाम ग्रहण करने की तिथि इन्हें कहाँ से तथा कैसे ज्ञात हुई ? बहुत ही सहज भाव से उन्होने बताया, हमारे यहाँ ''जागा'' आते हैं, उनके पास की पोथियों में यह सब जानकारी लिखी होती है। इसके बाद मैंने जागाओं के गांवों में जाकर उन पोथियों को देखा । प्रत्येक परिवार का सारा रिकार्ड बहुत ही प्रामाणिकता से संजोकर रखा गया था।

मैंने मन ही मन अपने इन देशज इतिहासकारों को प्रणाम किया और भारतीय संस्कृति की इस अप्रतिम विधा के बारे में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र करने का निश्चय किया ।

भारतवर्ष में इन वंशावली लेखकों को भिन्न - भिन्न प्रांतों में भिन्न - भिन्न नामों से जाना जाता है । यथा जागा, भाट, बड़वा (राव), तीर्थ पुरोहित, ब्रह्मभट्ट, पण्डे, बारोठ, हेलवा, बहीबंच्या आदि । यदि हमारे देश में यह व्यवस्था नहीं होती तो हमारे पुरखों के नाम, उनके कार्यकलाप, उनके द्वारा किये गये ऐतिहासिक कार्य हम कदापि जान नहीं पाते । किसी भी राष्ट्र के पुनर्जागरण में उस देश के पराक्रमी पूर्वजों का स्मरण सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है । वंश लेखकों की इन पोथियों से ही हमने जाना कि गत कालखण्ड में हमारा उत्थान व पतन कैसे हुआ ।

जागाओं की बहियों में लिखी जानकारी के आधार पर मैंने राजस्थान के मेवात इलाके का सर्वेक्षण कराया । उसके आधार पर एक आश्चर्यजनक तथ्य का खुलासा हुआ कि ८५% मेव मुसलमान पहले मीणा जाति के थे । इसके पश्चात २५, २६ जुलाई २००७ को जागा समाज की लघु कार्यशाला का राजगढ़ (जिला अलवर) में आयोजन किया । जिसमें ५ गांवों के ११७ जागा बन्धु (इनमें कुछ मेव मुसलमान भी थे) उपस्थित हुए । कार्यशाला में जागाओं ने मेव मुसलमानों के घर-घर जाकर उन्हें उनके गोत्र एवं पुरखों के बारे में जानकारी देने का निश्चय किया गया ।

बीजारोपण

हमारे देश की समृद्ध वंशानुगत परम्पराओं ने समाज व राष्ट्र के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । अतः वंशावली

जोधपुर संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में उपस्थित गणमान्य सदस्य

संगोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागी

परम्परा का हमने निरंतर संरक्षण किया है लेकिन आज हमारी वंशावली परंपरा क्षीण होती जा रही है । इस कारण समाज में अनेक विसंगतियां पैदा हो गई हैं । लाखों लोग अपने मूल पुरखों को जानने, वंशावली विवरण देखने और उससे प्रेरणा लेने को आज भी आतुर हैं । इस विषय में चर्चा एवं चिंतन हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने का विचार प्रारंभ हुआ । तदनुसार ''वंशावली परम्परा, महत्व एवं प्रासंगिकता'' विषय पर २९, ३० मार्च २००८ को जोधपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग एवं लांचू मेमोरियल कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलोजी, जोधपुर के संयुक्त तत्वाधान में एक ऐतिहासिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में देशभर के १८ प्रांतों के १६७ वंशावली लेखकों ने भाग लिया । वंशावली परम्परा की वर्तमान स्थिति, कठिनाइयाँ और निराकरण तथा इस परंपरा पर मतांतरण का प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर यहाँ विशेष चर्चा हुई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष
राव महेन्द्र सिंह बोराज

राष्ट्रीय महामंत्री
डॉ. सुखदेव राव

उक्त संगोष्ठी के अन्त में उद्घोषणा की गयी कि पूरे देश में वंशावली संरक्षण से जुड़े लोगों के गौरव की रक्षा में कोई कमी नहीं आने देंगे । वंशावली लेखन परम्परा से जुड़े सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाला **अखिल भारतीय संस्थान** गठित किया गया , जिसका नाम **''वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान''** रखा गया । आगे की सभी गतिविधियाँ संस्थान के इसी नाम से करने का निश्चय किया गया ।

पुष्कर घोषणा–पत्र

१६ अगस्त २००९ को तीर्थराज पुष्कर में वंश लेखकों का एक राष्ट्रीय सम्मेलन करने का निर्णय हुआ । पुष्कर में आयोजित इस सम्मेलन में राजस्थान के कोने-कोने से तथा गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बुंदेलखण्ड आदि प्रांतों से ८०० की संख्या में वंशावली लेखकों ने भाग लिया । इस सम्मेलन में संस्थान का अखिल भारतीय स्वरूप विकसित करने के विषय में सुझाव मांगे गये । संविधान और संगठनात्मक ढांचा कैसा होना चाहिए इसके प्रारूप पर चिंतन हुआ। कार्य पद्धति के बारे में भी चर्चा हुई ।

संस्थान का पुष्कर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन वंशावली संस्थान के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में मील का पत्थर तथा स्मरणीय बन गया क्योंकि इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से १८ सूत्री **तीर्थराज पुष्कर–घोषणा–पत्र** स्वीकार किया गया ।

तीर्थराज पुष्कर में सम्पन्न वंशावली लेखकों के राष्ट्रीय सम्मेलन के पश्चात संस्थान का काम सुचारू रूप से चलाने की दृष्टि से कोर कमिटी का गठन किया गया था । इसकी प्रथम बैठक १० अक्टूबर २००९ को जयपुर में सम्पन्न हुई । इस बैठक में पुष्कर सम्मेलन में सर्वसम्मति से पारित घोषणा-पत्र की क्रियान्विति पर विस्तार से चिंतन किया गया तथा विश्वास व्यक्त किया गया कि संस्थान आने वाले समय में अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सभी के सहयोग से अवश्य सफल होगा ।

इसी बैठक में तय किया गया कि वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान ने विगत तीन वर्षों में जो उल्लेखनीय प्रगति की है , उसका लेखा जोखा एक स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जाये। तदनुसार ६ मई २०१० को **'अतीत से साक्षात्कार'** स्मारिका के विमोचन का कार्यक्रम जयपुर में आयोजित किया गया । जोधपुर

पुष्कर सम्मेलन में मंच संचालन करते हुए श्री सुनील आसोपा

पुष्कर सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रांतों से आये हुए प्रतिभागीगण

वंशावली स्मारिका 'अतीत से साक्षात्कार ' के विमोचन के अवसर पर बायें से सर्व श्री मुकुन्दराव पणशीकर , पूर्व जोधपुर नरेश श्री गजसिंह, डॉ. चन्द्रप्रकाश देवल एवं रामप्रसाद

नरेश महाराजा गजसिंह मुख्य अतिथि के नाते इस कार्यक्रम में आये । प्रख्यात साहित्यकार श्री चन्द्र प्रकाश देवल तथा धर्मजागरण समन्वय विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख श्री मुकुंदराव पणशीकर भी इस अवसर पर उपस्थित थे । गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा आदि प्रान्तों से ८५० वंशावली लेखकों ने भावविभोर होकर कार्यक्रम का रसास्वादन किया ।

दिनांक १३, १४ फरवरी २०१० को कोर कमिटी की द्वितीय बैठक **अहमदाबाद (कर्णावती)** गुजरात में सुसम्पन्न हुई । जिसमें संस्थान के संविधान को अन्तिम रूप दिया गया तथा पंजीयन हेतु आवेदन की स्वीकृति प्रदान की गयी । संस्थान की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वित्त कमिटी का गठन तथा रीति-नीति का निर्धारण भी किया गया ।

बढ़ते कदम

संचालन समिति की अन्तिम बैठक उज्जैन में २८, २९ अगस्त २०१० को आयोजित की गई । संस्थान के पंजीकृत संविधान की प्रतियाँ सभी को वितरित की गई । इसी बैठक में अखिल भारतीय कार्यकारिणी की विधिवत घोषणा की गई । राव महेन्द्र सिंह बोराज प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किये गये । दूसरे दिन मध्य प्रदेश के वंशावली लेखकों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ ।

२७, २८ अगस्त २०१० को संस्थान की वित्त समिति एवं साहित्यनिर्माण समिति की बैठक जयपुर में सम्पन्न हुई । इस बैठक में संस्थान के आर्थिक स्वावलम्बन पर विस्तार से चिंतन हुआ तथा धनसंग्रह हेतु कारगर रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

२९, ३०, ३१ अक्टूबर २०१० को भावनगर विश्वविद्यालय में आयोजित सेमिनार अकादमीय स्तर पर संपन्न वह संगोष्ठी थी, जहाँ वंशावली लेखन परंपरा, पोथी संरक्षण, वंश संरक्षण का इतिहास, अतीत व वर्तमान, न्याय व्यवस्था में वंशावली लेखन की उपयोगिता पर भारतवर्ष के जाने माने शिक्षाविद तथा बुद्धिजीवियों ने विचार मंथन किया । संगोष्ठी का विषय था **'भारतीय लोक जीवन में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत'**- वंशावली संरक्षण संवर्द्धन एवं संवहन के संदर्भ में ।

इस सम्मेलन में ६ पूर्व एवं वर्तमान कुलपति, गुजरात सरकार की उच्च शिक्षा मंत्री, राजस्थान के पूर्व शिक्षा मंत्री सहित पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त डॉ. चन्द्रप्रकाश देवल आदि ने भाग लेकर वंशावली परंपरा से जुड़े सभी समाजों के गौरवशाली अतीत और वर्तमान समय में उसकी आवश्यकताओं को उजागर किया ।

संस्थान द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी को लम्बे समय तक याद किया जाता रहेगा । भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियों के हृदय पर इस विधा का राष्ट्र जीवन को बलशाली बनाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है तथा इसके माध्यम से समाज जीवन को कमजोर करने वाली चुनौतियों से कैसे निपटा जा सकता है, यह सार्थक संदेश अंकित करने में यह संगोष्ठी अत्यंत ही सफल रही ।

प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन

मनोनीत अखिल भारतीय कार्यकारिणी की बैठक १९ दिसम्बर २०१० को महाराष्ट्र के त्र्यम्बकेश्वर में रखी गई । जिसमें मण्डला (म.प्र.) में आयोज्य संस्थान के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन की सफलता हेतु रूपरेखा बनाई गई। संस्थान की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु स्थायी जमा निधि की स्थापना का निर्णय लिया गया । अ.भा.पदाधिकारियों के प्रवास पर भी विचार हुआ । ▶

पृष्ठ ७ का शेष ... प्रत्येक वर्ग के लिये भिन्न-भिन्न याज्ञिक वर्गों को नियुक्त किया। क्षत्रिय वर्ग तथा राजे-महाराजाओं के लिये जो जागे नियुक्त किये गये वे 'चारण' कहलाने लगे। इन चारणों ने प्रत्येक क्षत्रिय वंश का विस्तृत इतिहास लिखा है। इसी तरह समाज के अन्य वर्गों के लिये ब्रह्मभट्ट, राव, बड़वा, रावल आदि इतिहासकार नियुक्त किये गये। एक और विलक्षण व्यवस्था हमारे समाज विज्ञानियों ने की है। प्रत्येक वंश के इतिहास का मिलान करने के लिये तीर्थ-पुरोहितों की नियुक्ति की। तीर्थ-यात्रा के लिये प्रमुख तीर्थों में जाने वाले यात्रियों की वंशावली अर्थात इतिहास लिखने के लिये तीर्थ-पुरोहित या पण्डों को वहाँ रखा गया। तीर्थों में आने वाले प्रत्येक यात्री को 'यजमान' मान कर तीर्थ-पुरोहित उनसे पूजा-पाठ तो करवाते ही थे, साथ ही उनके परिवार का इतिहास भी लिखते थे। यह परम्परा आज भी कायम है। व्यक्ति के देवलोक जाने के पश्चात् उसकी अस्थियों का विसर्जन भी इन तीर्थस्थलों पर करना हमारे धर्म का अंग बना दिया गया। अस्थि-विसर्जन के समय भी 'तीर्थ पुरोहित' वंश का इतिहास अपनी बहियों में दर्ज करते थे, आज भी करते हैं। जैसे हरिद्वार, गया, सौरों जी,त्र्यम्बकेश्वर आदि स्थानों पर अस्थि-विसर्जन धर्म का अंग बना, वैसे ही तीर्थों की यात्रा को भी सद्गति के लिये जरूरी बताया गया।

इस प्रकार दो स्थानों पर प्रत्येक परिवार का इतिहास लिखने की श्रेष्ठ व अचूक परम्परा डाली गई। देश के वंशावली लेखकों ने बड़े परिश्रम और समर्पण भावना के साथ प्रत्येक परिवार का इतिहास लिखा। उत्तर प्रदेश के जटोई (जिला हाथरस) के **श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह** ने पाथेय कण को मध्य प्रदेश के पूर्व राज्यपाल कुँवर महमूद अली खाँ का वंश-वृक्ष प्रेषित किया है। मेरठ में जन्मे श्री महमूद अली खाँ ने खुद यह वंश-वृक्ष उक्त सज्जन को प्रेषित किया था। इसमें उनका वंश ब्रह्मा जी से प्रारम्भ हुआ बताया गया है। ब्रह्माजी की बारहवीं पीढ़ी में ययाति ऋषि हुए। उनके चार पुत्रों में से भृगु ऋषि की तेरहवीं पीढ़ी में उत्पन्न परमार ऋषि की अनेकानेक पीढ़ियों बाद राजा धरमराज हुये। उनकी भी कई पीढ़ियों बाद जन्मे राव राणा बन्नीपाल महमूद अली खाँ के पूर्वज थे। राव बन्नीपाल की बारहवीं पीढ़ी के राव कुम्भा ने जगत खान की पुत्री से विवाह किया, इसलिये उनकी संतानें मुस्लिम मज़हब मानने लगीं। उनकी पचीसवीं पीढ़ी में कुँवर महमूद अली खाँ का आगमन हुआ।

अमूल्य निधि– उक्त पुस्तक में प्रत्येक पीढ़ी का नाम दिया गया है और इस दीर्घ श्रृंखला से सिद्ध किया गया है कि कुँवर महमूद अली का उद्गम ब्रह्माजी से है। पूर्व राज्यपाल ने उक्त वंशावली स्वयं के प्रयत्नों से प्रकाशित की इसका अर्थ है , कि उन्हें अपनी इस परम्परा पर गर्व था। इसके साथ ही उन्हें यह भी ज्ञात था कि भारत में इसका सम्पूर्ण विवरण रखने वाले इतिहासकार मौजूद हैं। इसलिये जागे, चारण, भाट, बड़वा, तीर्थ-पुरोहित ब्रह्मभट्ट आदि देशज इतिहासकारों के दस्तावेजों में उपलब्ध विवरण भारत की अमूल्य निधि हैं। पूरे विश्व में भारत के अतिरिक्त अन्य कोई देश नहीं है, जहाँ प्रत्येक परिवार का इतिहास लिखा गया हो। बहुत बड़े परिमाण में ये दस्तावेज बहियों, ख्यातों, वंशावली, गुर्जावली, साख, वात, विगत आदि के रूप में आज भी उपलब्ध हैं। ये ज्ञान और इतिहास का भण्डार हैं तथा इनका इतिहास की विकृतियाँ मिटाने तथा सही इतिहास लिखने में भली भाँति उपयोग किया जा सकता है।

इतिहास का अमूल्य खजाना हमारे पास ही छिपा पड़ा है और उस खजाने को खोलने की चाबी हम कहीं रख कर भूल गये थे। तथ्यपरक और प्रामाणिक इतिहास के खजाने और उसकी चाबी की ओर इंगित करने का एक अल्प सा प्रयास इस 'देशज इतिहासकार अंक' के माध्यम से किया गया है। हमारे चारण, भाट, जागे,बड़वा, ब्रह्मभट्ट जैसे इतिहासकार समूहों का यह देश ऋणी है कि उन्होंने एक धरोहर को अब तक सम्भाल कर रखा है। इस धरोहर का इतिहास के पुनर्लेखन में पूर्ण उपयोग किया जाना चाहिये , ताकि भावी पीढ़ी हमारे इतिहास के अनेक स्वर्णिम पृष्ठों का अवलोकन कर गौरवान्वित हो सके। इसी के साथ वंशावली लेखकों को न केवल पूर्ण संरक्षण दिया जाना चाहिये, बल्कि उन्हें फिर से समाज में प्रतिष्ठित भी किया जाना चाहिये। हिन्दू संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में इन देशज इतिहास लेखकों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

कुछ ही समय पूर्व अस्तित्व में आये 'वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान' के हम आभारी हैं कि इस संस्थान ने हमें यह अंक प्रकाशित करने को प्रेरित किया, साथ ही इसके प्रकाशन में पूर्ण सहयोग भी दिया। उन विद्वान लेखकों के भी हम आभारी हैं जिन्होंने देशज इतिहासकारों का महत्व समझाने वाले उच्च कोटि के लेख हमें प्रेषित किये। विशेषांक के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य अवश्य लिखें। *-आपका सम्पादक*

▶ ६ फरवरी २०११ को मण्डला, मध्यप्रदेश में संस्थान का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन संतों के सान्निध्य में प्रारम्भ हुआ। महामण्डलेश्वर श्री अखिलेश्वरानंद जी, श्री हरिओमशरणदास जी महाराज, स्वामी परमात्मानंदगिरि (महामण्डलेश्वर-राजकोट, गुजरात) राजपूत युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री भगवानसिंह जी, **'साप्ताहिक विवेक'** मुम्बई के सम्पादक श्री रमेश पतंगे सहित इस विधा से जुडे. देश के गणमान्य विद्वज्जनों का विभिन्न सत्रों में अत्यंत प्रेरक मार्गदर्शन मिला ।

अधिवेशन के समापन सत्र में महामण्डलेश्वर श्री अखिलेश्वरानंद जी महाराज ने सभी प्रतिभागियों के सामने **'संकल्प-पत्र'** का पाठ किया । जिसमें सभी ने समाजधर्म का पालन करते हुए सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकात्मता के भाव को सदैव जाग्रत रखने का प्रयास करने का निश्चय किया ।

वंशावली संस्थान की अखिल भारतीय कार्यसमिति की बैठक ३ अप्रेल २०११ को जयपुर में आयोजित की गई । इस बैठक में संस्थान का सदस्यता अभियान एवं वंशावली समाज से जुड़े युवावर्ग हेतु प्रशिक्षण की योजना पर चिंतन हुआ ।

वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान से जुड़े समस्त कार्यकर्ताओं को विश्वास है कि इस उपेक्षित एवं विलुप्ति के कगार पर आ चुकी वंशावली लेखन परंपरा को संस्थान द्वारा प्रारम्भ हुए इस प्रयास से पुनः सम्मान का स्थान प्राप्त होगा । संस्थान आने वाले समय में इस महत्वपूर्ण भूमिका को निभाने के उद्देश्य की प्राप्ति में अवश्य ही सफल होगा । ❑

(**संरक्षक**-वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान)

-जय खेतेश्वर-

किसान सेवा केन्द्र

खाद, बीज व कीटनाशक के विक्रेता

रेंवत सिंह राजपुरोहित
मो. 99298 06996
मालिक

अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी
देहात मण्डल
फलौदी

मोहन राम चौधरी
मो. 96941 48540
मैनेजर

बस स्टेण्ड, खीचन, त. फलौदी, जिला जोधपुर

Ganges Group
Presents
Its
Eminent Housing Complex
Puja Ganges
At Uttarpara, Hooghly.

Contact: 033 2242 0472
Email: gangesgroup@yahoo.co.in

Mangalam

PARIVAHAN PRIVATE LTD.

H.O. : 16, jamunalal Bajaj Street,
Kolkata-700 007
Ph. : (033) 2268-0430, 2268-8383, 2268-2905
Fax : (033) 2271-0143,
E-mail : mppltd@vsnl.net

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

श्री गोपाल पंसारी
स्व. श्री मगनीरामजी पंसारी

किशन महल तीसरा माला, (III Floor)
3, वुड लेन, कोलकाता 700 016

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

रवि बेरिवाल

शिवपुर (हावड़ा)

Khetharam jaat
9480588015

SAPNA TEXTILES

429,30th`A` Cross 26th Main Road,
Tilaknagar Bangalore-41

TIN No.
08872600935

02925-223696(O)
94141-30561(M)

जैन ट्रेडिंग कम्पनी

तेल,घी, चाय व चीनी
के थोक व्यापारी व आड़ती

बी-24 अनाज मण्डी,
फलोदी-342301(राज.)

Mahendra Agrawal
Director
9830276002

SUPERSPEED CARRIERS PVT. LTD.

2, Rupchand Roy Street, 3rd Floor,
Room No. 309, Kolkata 700 007
Phone :2270 1163, 3247 6907, telefex : 033-2271 2366
E-Mail : Superspeed@dataone.in

FULL TRUCK LOAD ACCEPTED ALL OVER INDIA

TARANAGAR AHMADABAD KOLKATA

Smt. Kalkati devi Lunia
Ravindra, Ranjeet,
Sanjay, Kuldeep Lunia
(M) 098300 14898

LOTUS RANG UDYOG

26/4 A, Armenian Street, Kolkotta-700 001
Phone : (o) 22682717, 22182931, Fax : 22689552
E Mail : Mohini240@sancharnet.in

हनुमान चन्द बोहरा
सुनील कुमार बोहरा

9694112340
9828531072
02982-230109

जी.एच.स्टील फर्नीचर बाड़मेर

निर्माता– सभी प्रकार के फर्नीचर स्टील एवं बुडन पलंग सोफा अलमारी, कम्प्यूटर टेबल कुर्सी
अधिकृत विक्रेता– गोदरेज फर्नीचर होम डेकोरेट इन्टीरियो, सेफ लॉकर बैंक सप्लायर सिक्युरिटी (फिजीकल एण्ड इलैक्ट्रीक/ लॉक)
अधिकृत विक्रेता– नीलकमल मोल्डेड फर्नीचर

स्टेशन रोड़, बाड़मेर *e-mail ghsteelfarniture@rediffmail.com*

Off : 2271 9847 / 2269 7901
Fact : 2669 7161 / 2669 8138
Resi.: 2666 6889 / 2676 9321
Mobile : 98310 92652

Jagat Tantia
Managing Director

Mahapragya Polypack Pvt.Ltd.
Mfrs. of : DISPLOSABLE PLASTIC CONTAINERS

Regd. Off.:
16, Jamunalal Bajaj Street
(1st Flr.),Kolkata-700 007

Works:
Jalan Industrial Complex, NH-6
Jangalpur, Baniara, Howrah-711 411

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Mahendra Jain
Ph.:033-2210 1757
Mob.:98741 16008

VIJAY TRADERS

Dealers : HOOK, BUTTON, COTTON TAPE ELASTIC & ALL TAILORING MATERIAL

19,Synagouge Street, Room No.406, City Centre 4th Floor, Kolkata-700 001

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Hotel Krishna White House International
Hotel Krishna
Krishana Color Lab
Krishna Electronics & Engineering
Krishna Digital Shine & Sale
The Krishna Couriers

Mr. Kishan Chandra Amlani

Station Road, Barmer-344001 (Rajasthan)
Ph. No. +91-2982-230205/731/826/852/231050/223533
Mob. No. +91-9783 305054 E Mail ID:-Krishnagroup827@gmail.com

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

Ashok Bhansali
(M) 98301-11691

ASHOK KUMAR & BROTHERS

309. B.B. Ganguly Street, Ground floor,
(Near Lal Bazar Junction), Kolkata-700 012
E-mail : ashok.bhansali@rediffmail.com

☎ *(033)2236 3593 / 22344140*

Narendra Pandya *WITH BEST COMPLIMENTS FROM*

Navshakti Clearing & Credit Pvt.Ltd.

INDENTING AGENTS OF RASMI CEMENT LTD.

" Home Land"
18B, Ashutosh Mukherjee Road
5th Floor, Room No.-504
Kolkata-700 020
Mobile : 9830105905, 3296 2106
Tel.. Off: 24863671, 32962106
Resi. 2454 2707/2708, Fax : 2486 3672
E-mail : navshakti@sify.com
E-mail : pandya.trendsetters@gmail.com

WITH BEST COMPLIMENTS FROM **(M) 09330875511**

Shree Ramjeevan Manda
Mahesh Manda
Ramesh Manda

Vivek Vihar, Phase-IV, Building No-1 Flate No-4D,
493/C/A G.T. Road (South) Howrah-711102

WITH BEST COMPLIMENTS FROM **(M) 9932926749**
Ph.0342-2250 560

M/S MCSCREW ENGINEERING WORKS

Manufacturer of Machine Screws,
Bolts, Rivets Etc. and as per constomer drawing

Memari, Hatpukar, Po. Memari , Dist. BURDWAN
E-Mail: Panja_tapan@rediffmail.com

R.S.T. No. 1931/04341
C.S.T. No. 1931/04341
R.T.A.L. No.
K.M.L. No. 836

O. 23257
R.23938
R.23956
STD.02925

।। श्रीगणेशाय: नमः ।।

शंकर ट्रेडिंग कम्पनी

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

सी/१० कृषि उपज मण्डी, फलोदी-342301(राज.)

चम्पालाल बाँठिया(पूर्व विधायक) कर तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ

गणपत लाल बाँठिया — 94141 07642, 98297 99011

महा रिषभ इण्डस्ट्रीज

8 व 9 मीटर के पीसीसी पोल के निर्माता

खेतों व फैक्ट्रियों के बाउंड्री हेतु हमेशा पोल तैयार मिलते हैं।

ब्रह्मजी के मन्दिर के पास, आसोतरा (राज.)

R.S.T. No. 1931/03695
C.S.T. No. 1931/03695
R.T.A.L. No .....
K.M.L. No. 709
व्यापारी वर्ग1 - 'क' वर्ग दलाल

S. 22143
F.23896
R.22343
22206
STD.02925

।। श्रीगणेशाय: नमः ।।

गोपी किशन शिवरतन

किराणा, अनाज आदि के थोक व्यापारी,
कमीशन एजेन्ट व आढ़ती

सी-5 कृषि उपजमण्डी, फलोदी-34230 जिला जोधपुर

J.P.Singhal
Managing Director

02982 230435
9829799501

SINGHAL

J.P. SINGHAL & COMPANY

Station Road, Barmer-344001(Rajasthan)India
Website : www.Singhalgrup.net
E mail: info@singhalgrup.net jpsinghalco@yahoo.co.in

ललित जैन

094141 07920
092144 07950

सुदर्शन टेक्सटाईल मिल्स

रंगीन पोपलीन, माइक्रो, रोटो, पोकेटिंग के
निर्माता एवं प्रोसेसर्स

एफ-32 III फेस, तृतीय चरण, औद्योगिक क्षेत्र, बालोतरा-३४४०२२

कार्यालय नगर पालिका उनियारा जिला – टोंक (राज.)

नगर पालिका क्षेत्र के समस्त नागरिकों से अपील

शहर के विकास एवं सौन्दर्यकरण के लिये
दृड संकल्प

- बी.पी.एल.चयनित परिवारों को स्वरोजगार ऋण, मेडिकल सुविधा अन्तोदय योजना से लाभान्वित करना।
- राष्ट्रीय सामाजिक सहायता योजना, पन्नाधाय जीवन अमृत योजना, जनश्री योजना, कक्षा ९ से १२ तक पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति, बालिका समृद्धि योजना से लाभान्वित करना।
- जन्म-मृत्यु का पंजीयन, विवाह पंजीयन अनिवार्य रूप से करवायें।
- नगरपालिका क्षेत्र को सुन्दर व स्वच्छ बनाये रखने के लिए आम जनता के सहयोग की अपेक्षा।
- सरकारी भूमि पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण नहीं करें।
- पॉलिथीन थैलियों का उपयोग नहीं करें।
- नगरपालिका के समस्त प्रकार के करों का समय पर भुगतान करें।

पेड़ लगाओ देश बचाओ

पानी की बचत हेतु वाटर हारवेस्टिंग सिस्टम को अपनायें।

जगदीश प्रसाद अगदायमावर	शंकर लाल ठाडा
अधिशाषी अधिकारी	अध्यक्ष
नगरपालिका, उनियारा	नगर पालिका, उनियारा

आदर्श शिक्षण समिति, बाड़मेर

(जोशियों का निचलावास) फोन न. 02982-226888

द्वारा संचालित आदर्श विद्या मन्दिर

उच्च माध्यमिक विद्यालय :	गडरा मार्ग बाड़मेर (विज्ञान, वाणिज्य व कला वर्ग), चौहटन (कला वर्ग)
माध्यमिक विद्यालय :	बालिका बाड़मेर, बायतु, धोरीमना, गडरा रोड़, रामसर व हरसाणी
उच्च प्राथमिक विद्यालय :	बाड़मेर, चौहटन, बालिका चौहटन, बालिका बायतु, शिव, भाडखा, गूंगा, गागरिया, गिराब, जैसिन्धर व ढ़ोक
प्राथमिक विद्यालय :	ढाणी बाजार बाड़मेर, सुन्दर नगर गडरारोड़,धनाऊ, नवातला, जैतमाल, पुराना गांव बायतु

की ओर से पाथेय कण के वंशावली लेखक विशेषांक पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ-

रिखबदास बोथरा	मनोहर लाल बंसल
अध्यक्ष	मंत्री
9414529565	9414107861

मदद के लिए
बढ़ते हाथ

स्पर्श अभियान

प्रदेश के सभी नि:शक्तजनों की पहचान करने और उनका डाटाबेस बनाने का अभियान।

उनकी पहचान के बाद, उन्हें मिलने वाली सभी सुविधाओं का लाभ मिलना आसान होगा।

पेंशन, सहायक अनुदान, इलाज, छात्रवृत्ति, प्रशिक्षण और रोज़गार की सभी योजनाओं तक अब उनकी पहुंच होगी।

कमजोर नहीं हैं वे, बस थोड़ा सा सहारा, उनकी क्षमताओं को सच करता है।

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

मध्यप्रदेश सरकार

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2011

पाथेय कण (पाक्षिक) आर.एन.आई.पंजीयन क्र.४८७६०/८७ अग्रिम शुल्क विना प्रेषण की अनुमति
१ जून, २०११ डाक पंजीयन क्र. आर.जे./जेपीसी/एफ एन-०२/२००९-११ लाईसेंस क्र. आरजे/जेपीसी/डब्लू.पी.पी.-०४/२००९-११

पाथेय कण के देशज इतिहास विशेषांक प्रकाशन पर

वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान

की ओर से

हार्दिक शुभकमनाएं

पद्म पिता ब्रह्मा जी के सृष्टि निर्माण के साथ-साथ सूर्य की तरह शाश्वत एवं तेजोमय वंशावली लेखन की परंपरा का शंखनाद करने को कृत संकल्पित...

'' समस्त वंशावली समाज बन्धुओं से विनम्र अपील है कि संस्थान को बृहद रूप प्रदान कर सुदृढ़ करने के लिए वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान के सदस्य बनकर समाज के प्रति उत्थान के इस ईश्वरीय कार्य में सहभागी बनें। आप सभी के सतत् सहयोग एवं स्नेह से ही यह संस्थान अपने लक्ष्य में सफल होगा।''

शुभेच्छु
राव महेन्द्र सिंह बोराज
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मो. 9829011558

पंजीयन क्रमांक : 521/जयपुर/2010-11

वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान

पाथेय भवन, बी-19, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001
दूरभाष 0141-4038590 मो: 9414058590 (कार्यालय)
ई-मेल : vsssjaipur@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक: गिरिराज प्रसाद शर्मा, द्वारा भालोटिया प्रिन्टर्स, १/३९८, पारीक कॉलेज रोड, जयपुर से मुद्रित।
(प्रेषण दि. १,२,३ व ४ जून, २०११ सी.एस.ओ.गांधी नगर, जयपुर)

प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन
बी-१९, न्यू कॉलोनी, जयपुर-३०२००१
सम्पादक: क.ला.चतुर्वेदी